कन्हैया से....
....कन्हैया तक

कन्हैया से....
....कन्हैया तक

– दयाल प्रशाद

DESIGN INDIA

समर्पण

हमारे प्यारे मम्मी–डैडी, हम सब आपके बच्चे उस परमपिता परमेश्वर को कोटि–कोटि धन्यवाद देते हैं जिसने हमें आपके घर में जन्म दिया और आपके सानिध्य में पलने–बढ़ने का सौभाग्य दिया।

आप दोनों हम सब की पहचान हो। हम तो केवल आप दोनों के अथक परिश्रम व मेहनत के साथ बनाए गए सुनहरे पथ को सम्भालने व संवारने का प्रयत्नभर कर सकते हैं। आप दोनों द्वारा दिये गए संस्कार, निःस्वार्थ प्रेम की भावना, सभी को सम देखना, ईश्वर के प्रति अथाह विश्वास एवं लगाव से हम कृतार्थ हुए हैं।

आज 13 मार्च 2014 को स्टील बर्ड की स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर हम सभी राजीव कपूर एवं स्वीटी कपूर, मुकेश मल्होत्रा एवं अनामिका मल्होत्रा, कशिश, सृष्टि, अंकित और अलीशा ये पुस्तक आपको समर्पित करते हैं। इस आशा से कि जन–जन आपकी जीवन गाथा को पढ़कर प्रेरित व उत्साहित हो और जीने की सुन्दर कला को सीख सके।

प्रिय पाठकों,

आदरणीय सुभाष कपूर साहब की ये जीवन गाथा आप सभी की सेवा में प्रस्तुत है। पाठकों की सुविधा के लिए बता दूं कि इस किताब में भाषा को 'कपूरमयी' बनाने के लिए सिंधी – पंजाबी शब्दों का प्रयोग किया गया है, क्योंकि बिना इन शब्दों के प्रयोग के इस पुस्तक को पाठकों के दिलों में नहीं उतारा जा सकता था। इसलिए पूरी किताब का ताना – बाना हिन्दी, उर्दू और सिंधी – पंजाबी को मिलाकर बुना गया है।

किताब लिखते हुए मैंने अपनी ओर से हर तिथि, सन्, घटना इत्यादि का ध्यान रखने का पूरा – पूरा प्रयास किया है। यदि कोई त्रुटी रह गई हो तो पाठकगण उसे मुझ लेखक की कमी जानकर नज़रअंदाज़ करें। उसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूं।

– दयाल प्रशाद

ज़िन्दगी के सफर में हम चलते जाते हैं 'कुछ और' 'कुछ नया' पाने के लिए। हम सब हमेशा इस 'कुछ और' 'कुछ नये' को पाने के लिए भटकते रहते हैं और सारी उम्र अपने इस सफर को चलाये रखते हैं। इसे कभी रुकने नहीं देते, हमेशा 'कुछ और' या ' कुछ नया' पाने की लालसा हमारे जीवन को अंतहीन कर देती है। पर कभी-कभी.....ये सफर थोड़ा सा थमता है, हल्का सा.....ठहर जाता है, कब.....?

या तो तब जब हम बहुत खुश होते हैं या पूर्णत: तृप्त हों। खुशी तो कुछ पल के लिए होती है। और तृप्ति....? वो भी तो चंद पल के लिए होती है। हाँ....पर, भगवान का सानिध्य आपको पूरी तरह से तृप्ति कि ओर ले जाना शुरू कर देता है।

मैं भी एक आम इंसान की तरह अब तक की अपनी ज़िंदगी में 'कुछ और' 'कुछ नया' पाने के लिए भटकता रहा। अचानक 'कुछ और' 'कुछ नया' पाने कि लालसा में मैं एक दिन प्रभुमय सानिध्य पा बैठा। अब आप इसे मेरी किस्मत कहें या संयोग, पर मेरे साथ ऐसा हुआ। एक दिन मेरी मुलाकात होती है....

"सुभाष कपूर जी" से....

चेहरे पर हल्की घनी सफेद दाढ़ी, सफेद कुरता-पजामा पहने, हल्के बादामी रंग की शॉल टांगों पर रखे कपूर साहब छोटे सोफे पर बैठे थे। मैं उनके सामने बैठा था। चाय की चुस्कियों के साथ बड़ी साधारण सी बात हुई, कुछ यहाँ की कुछ वहाँ की। पर इन साधारण बातों में कुछ असाधारण सा था। कपूर साहब के साथ इस छोटी सी मुलाकात के बाद मैंने अपने आप में कुछ सुकून पाया.... बेहद शांत सा पाया खुद को....।

रात काफी देर तक सोचता रहा कि इस साधारण मुलाकात में असाधारण सा क्या था? सफेद कुरता-पजामा ? हल्की सफेद दाढ़ी....? हल्की बादामी शॉल.....? तेजपूर्ण आँखें.....? सफेद बाल.....? गहरी मुस्कान.....? सफेद दांतों में लिपटे कह-कहे....? मीठी सी ज़ुबान.....? या....कुछ और ? बि...ख...रे... - बिखरे इन शब्दों को इकट्ठा किया तो एक शब्द बना.... भगवान् जै...सा...। और नींद आ गई।

सुबह उठा तो खुद को सहज और शांत पाया। रोज़मर्रा के कामों से फ़ारिग होकर भगवान् का धन्यवाद किया, जिसने मुझे सुभाष कपूर जैसे बहुआयामी शख़्सियत से मिलने का मौका दिया। सुभाष कपूर जो कि हिंदुस्तान के माने हुए व्यवसायियों में से एक हैं। उनसे मुलाकात होना मेरे लिए बहुत बड़ी बात थी। मैं खुद को रोक नहीं सका और मुलाकात का समय तय करके चल पड़ा....कपूर साहब के पास.... शायद "भगवान् जै...सा..." कुछ ढूंढने।

वहां पहुँचकर इस बार सामने बैठे कपूर साहब के चेहरे को बड़े ध्यान से देखा। "भगवान् जैसा" शब्द को जानबूझकर बि..खे..रा... सफेद कुरता-पजामा...., हल्की सफेद दाढ़ी...., हल्की बादामी शॉल...., तेजपूर्ण आँखें...., सफेद बाल...., गहरी मुस्कान...., सफेद दांतों.... में लिपटे कहकहे, मीठी सी ज़ुबान....। मेरी आँखें श्रद्धा से झुक गईं। झुकी नज़रों को उठाया तो यह क्या....? गहरे समंदर सी शांत आँखें, बेहद प्रभावशाली मुस्कान, चौड़े माथे पर गहरी सलवटे, ओजस्वी चेहरा.... ये सब भी दिख रहा था अब कि बार, इन शब्दों को जोड़ा तो पाया.... बिलकुल 'भगवान जैसा', 'कन्हैया जैसा'....।

"पुत्तर जी किथे खो गए....?"

कपूर साहब की सिंधी-पंजाबी में लिपटी मीठी ज़ुबान सुनाई दी। मैं

उन जादुई पलों से बाहर निकला और सीधे-सीधे कपूर साहब से कहा कि....
"मुझे कुछ भगवान जैसा दिख रहा था।"

हा...हा...हा... ठेठ पंजाबी कहकहा लगाते हुए कपूर साहब बोले....

'पुत्तर जी', मेरे साथ अक्सर ऐसा होता है।

मैंने कहा.... अक्सर....?

इस बार हल्के कहकहे के साथ कपूर साहब ने बोलना शुरू किया....

"मेरे नाल ऐदां होंदा ही रैंदा ऐ".... कोई ऐसी पार्टी (party) नहीं, कोई ऐसा फंक्शन (function) नहीं जहाँ मेरे साथ ऐसा न हो, मैं जब भी किसी party-function में जाता हूँ तो कोई न कोई अंजान व्यक्ति मेरे पास आकर ज़रूर बोलता है कि वो मुझे जानता है या मुझसे कई बार मिल चुका है या अपने-आप को मेरी तरफ आकर्षित पाता है। कोई न कोई अंजान व्यक्ति हमेशा मुझसे इस तरह बात करता है कि उसका अपनापन मुझे हैरान कर देता है....पता नहीं ऐसा क्यों होता है?

बड़ी सादगी से बोलते जाते हैं, कपूर साहब....

चेहरे की बढ़ती हुई सादगी के साथ वो आगे बताते हैं...

मैं लोगों का अपनी तरफ आकर्षण देखकर सचमुच हैरान हो जाता हूँ। एक बार मैं विश्व हिन्दू परिषद् की Meeting (बैठक) के लिए Banglore (बैंगलौर) गया था। अगले दिन हम लोग बस द्वारा 'बालाजी' के दर्शन के लिए जा रहे थे। मैं हैरान हो गया जब एक वृद्ध दम्पति मेरे पास आकर श्रद्धा पूर्वक नमन करने लगे और कहने लगे कि....

"आप साक्षात 'कल्कि' अवतार हो....। हम अभी कल्कि-मंदिर से

आ रहे हैं, अगर हमे पता होता कि आप हमें मिलेंगे तो हम मंदिर नहीं जाते.... क्योंकि आप हूब-हू 'भगवान् कल्कि' हो....।"

मुझे बाद में पता चला कि 'भगवान् कल्कि' को वहाँ एक अवतार माना जाता है और उनकी पूजा की जाती है।

मैं हैरान रह गया.... एक अनजान वृद्ध दम्पति की इतनी अगाध श्रद्धा.... मेरे प्रति....?

मैं निरन्तर श्रद्धा भाव से कपूर साहब की बात सुन रहा था....। अचानक ठहाका लगाकर हँसते हुए वो बोले....

एक और बात याद आई....एक बार मैं लास-वेगास (Las Vegas) के कैसिनो (casino) में जुआ खेल रहा था। तभी वहां 25-30 साल के दो लड़के आए और मुझे एक-टक देखने लगे। थोड़ी देर बाद वो मेरे पास आये और मुझसे पूछने लगे कि.....

"Are you God....?"

मैंने अपने बेटे राजू से पूछा कि.... "ये क्या बोल रहे हैं...?"

तो राजू ने बताया कि.. "वो बोल रहे हैं कि क्या आप भगवान् हो?"

मैं ज़ोर से हँसा और बोला.... No... No... (नहीं.... नहीं....) "भगवान् जुआ थोड़े ही खेलता है....।"

मुझे उनके सवाल ने मजबूर कर दिया कि मैंने जुआ खेलने के लिए जो डेढ़-दो लाख रूपये के टोकन (token) लिए थे, उन्हें casino में छोड़कर, casino से बाहर चला जाऊँ। और मैं.... बाहर चला गया....।

कपूर साहब ठहाका मार कर हंस पड़ते हैं....

इधर मैं उनकी बात से सहमत था.... "भगवान और जुआ.....?"

मुझे उनके ठहाके में 'कन्हैया' का मुँह खोलना दिख रहा था.... 'जिसमें ब्रह्मांड दिखाई देता है।'

कपूर साहब का ठहाका एक गहरी मुस्कुराहट में बदल जाता है, मुस्कुराते हुए वो बोलते हैं.....

"पता नहीं क्यों लोग मुझसे इतना प्यार करते हैं।"

एक बार मैं चीन (China) गया। वहाँ होटल (Hotel) में ठहरा। वहाँ के होटलों का नियम है कि ब्रेक-फास्ट (Break-Fast) 10 बजे बंद हो जाता है। चीन China में Language (भाषा) की बड़ी Problem (दिक्कत) है। वहाँ English (अंग्रेजी) भी कम बोली जाती है। मैं 11 बजे Restaurant (भोजनालय) में पहुँचा तो ब्रेक-फास्ट (Break-Fast) के लिए इन्कार कर दिया गया। तभी वहाँ होटल का मालिक आया और मेरे पास आकर कहने लगा कि....

"मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ...।"

किसी तरह से उसे बताया कि हमे ब्रेक-फास्ट (Break-Fast) करना है। उसने तुरंत Order (आदेश) करके कुछ सामान.... यहाँ से मंगवाया और.... कुछ वहाँ से मंगवाया....। उसने बड़े प्यार से अलग बिठाकर नाश्ता करवाया....। और फिर बड़े प्यार से ज़िद करने लगा कि....

"आप Room (कमरा) के बजाय suite (सुइट) में ठहरें....।"

वो उसका किराया भी नहीं लेना चाहता था।

मैंने उसे कहा कि.... "मुझे सुबह चले जाना है.... और मुझे सुइट (suite) की ज़रूरत नहीं....।"

फिर भी वो request करता रहा कि.... " Please.... आप मेरी बात मानिये.... पता नहीं क्यों मैं.... आपसे impress (आकर्षित) हूँ..... मैं आपकी ख़िदमत करना चाहता हूँ।"

फिर उसने मेरे साथ फोटो (Photo) भी खिंचवाई।

पता नहीं.... क्यों ? विदेश में बैठा एक व्यक्ति भी मेरी तरफ खिंच गया या मेरी तरफ आकर्षित हुआ। यह सब भगवान् ही की तो कृपा है....।

कपूर साहब के प्रति मेरी जिज्ञासा बढ़ती चली गयी....

बरबस मैं बोल उठा, मुझे तो आप में भगवान् दिखाई दे रहा है.... मुस्कुराते हुए कपूर साहब बोलते हैं....

"ऐ सब तुहाडे अन्दर दी अच्छाई ए.... पुत्तर जी.... तां तुहानु ऐ लग रेया ए....।"

मैं आपकी तरह एक साधारण इंसान हूँ। आप ही कि तरह एक व्यावहारिक व्यक्ति हूँ। मुझमें और आपमें कोई फर्क नहीं....।

पर मैं तो फर्क साफ - साफ महसूस कर पा रहा था। एक बार मन में आया कि कपूर साहब से पूछूं की.... "फर्क क्यों नहीं है....?" पर इस डर के मारे के कहीं बुरा न मान जाएँ.... मैं चुप - चाप उनकी ओर देख रहा था....।

"दयाल पुत्तर.... कहीं तुम यह तो नहीं सोच रहे कि.... 'तुम' और 'मैं' एक जैसे कैसे...., और क्यों है ....?"

मैं चौंक पड़ा !! क्योंकि.... पहली बात ये कि कपूर साहब ने पहली बार मुझे.... 'दयाल पुत्तर' कहा, और दूसरी बात ये कि कपूर साहब मेरे मन की बात कह रहे थे।

मैंने सकपकाते हुए कहा..... "जी हाँ...।"

"पहले अपने हाथ से 'अपने लिए' और 'मेरे लिए' चाय बनाओ..।" कपूर साहब बोले....।

मैंने दो कपों में चाय डाली, मैंने एक प्याला कपूर साहब को पकड़ाते हुए प्याले से उठती भाप की दूसरी तरफ कपूर साहब का हँसता हुआ चेहरा देखा.... जो बोल रहे थे....

देखो.... मैं भी तुम्हारी तरह चाय का कप पकड़ता हूँ... हा... हा... हा...

चाय की चुस्की भर के बोले कि मैं.... तुम्हारी तरह चाय पीता भी हूँ.... "नाल मैं चा नूं कदी मनां कर ई नी सकदा....।"

इस बार कपूर साहब के साथ मैं भी हंसा और बोला.... "....जी...."

चाय का घूंट भरते हुए मैं पूछ बैठा कि.... "कपूर साहब.... आपका जन्म कब का है....?"

चाय की प्याली से निकलती भाप, हल्की सी थमी.... और शायद.... बरसों से मन में बसे यादों के अलाव को, जो बढ़ते समय के साथ हल्का मंद पड़ चुका था.... मेरी यह बात उसे हवा दे गई और यादों का अलाव.... तपने लगा....

"पुत्तर जी.... मैं लगभग 70 साल दा हो गया वां....।"

कपूर साहब बोले...."लगभग.... सन् 1946 विच जमिया सी....।"

मैंने कहा.... "लग....भग....?"

जवाब मिला.... "पक्की तारीख तो याद नहीं.... क्योंकि उस समय के बुजुर्ग इन चीज़ों का रिकॉर्ड (Record) नहीं रखा करते थे....।"

चाय की प्याली कि भाप छटने लगी अब, और... कपूर साहब की आवाज़ कहीं गहराई से निकलती हुई महसूस हुई...

एक साधारण इन्सान की तरह ज़िन्दगी है मेरी। जन्म 1946 में पिण्ड दादण खान, जिला जेहलम जो कि अब पाकिस्तान में है, हुआ था। सन् 1946 में मैंने पिंड दादण खान, जिला जेहलम में 'श्रीमती लीलावती' और 'श्री तिलक राज कपूर' के घर जन्म लिया। श्री तिलक राज के पिता यानि मेरे 'दादा' 'श्री किशन लाल कपूर' वहाँ के माने हुए रईसों में से एक थे। मेरे दादा इतने नेक दिल थे कि सुबह जब सैर को जाते तो अक्सर अपना पट्टु (शॉल) भिखारियों को दान कर आते थे। एक शॉल की कीमत उस समय 6000 रूपये के करीब थी, जो कि आज के समय में लाखों में होगी।

"लम्बी – चौड़ी जगीरां दे मालक सन मेरे दादा – परदादा.....।"

बेहिसाब ज़मीने, 13 खूह (कुएं) थे हमारे अपने। एक खूह से 50 एकड़ ज़मीन की सिंचाई हो सकती है। इतनी ज़मीने थी हमारी, बेहिसाब कारोबार।

सन् 1903 में हिंदुस्तान का पहला पेट्रोल पंप (Petrol Pump) जो जम्मू – कश्मीर में बना था, वो हमने बनाया था। उसके इलावा ठठियारों का काम (बर्तन बनाना) था.... हमारा बजाजी (कपड़े) का काम था.... हमारा सर्राफे (सुनार) का भी काम था। कुल मिलाकर 26 काम थे। हम लोग बेहद सम्पन्न थे वहाँ, इतने सम्पन्न कि वहां के राजा 'गनफर अली' की कुछ ज़मीने हमारे पास गहन (रहन) थीं।

'गनफर अली' जो बाद में पाकिस्तान के फॉरन मिनिस्टर (Foreign Minister) बने और बाद में सन् 1963 में बा-हैसियत फॉरन मिनिस्टर पाकिस्तान से 'भारत' आए तो विशेष रूप से हमारे परिवार से मिलने आए।

राजा 'गनफर अली' ने भारत सरकार को, हमारे परिवार से मिलने का विशेष आग्रह किया था। उनका आग्रह मानकर दो Intelligence वाले हमारे घर आए। उस समय पिता जी कहीं काम से गये हुए थे और मेरे मामा 'श्री केशव लाल' घर पर थे उन्होंने सोचा कि चलो मैं राजा साहब से मिल आता हूँ। मामा जी राजा 'गनफर अली' से मिलने गए। राजा 'गनफर अली' ने पौना घंटा अलग कमरे में बिठाकर मामा जी से बातचीत की।

कपूर साहब की आवाज मज़ाकिया सी हो चली थी। चाय का आखिरी घूंट भरकर खाली प्याला मेज़ पर एक ओर सरकाते हुए कपूर साहब बोले...

पूरे 16 साल मामाजी की इन्क्वायरी (Enquiry) होती रही.... इस चक्कर में कि दुश्मन देश के फॉरन मिनिस्टर (Foreign Minister) के साथ, क्या बातचीत हुई होगी। 16 साल तक उनकी डाक, उनका काम करने का तरीका, उनका चाल-चलन, उनका पैसा इस्तेमाल करने का ढंग, इन सब पर नज़र रखी गई। 16 साल बाद जब C.I.D. ने मामाजी की फाईल (File) बंद की तो उनसे पूछा गया था कि.... 1963 में उन्होंने राजा 'गनफर अली' से क्या बातचीत की थी.... ?

तब मामाजी ने बताया कि.... हम लोग वहाँ के 'शाह' होते थे, उनकी ज़मीनें हमारे पास गिरवी थीं। इसलिए वो पारिवारिक बातचीत करने आए थे।

....तब जाकर फाईल बंद की गयी थी....।

इतने सम्पन्न परिवार में पैदा हुआ था मैं....। मेरे दादा - परदादाओं ने 39 साल वहाँ पर Election (चुनाव) लड़े थे।

पर ये सम्पन्नता ज़्यादा दिन न रहीं....।

एक दिन हमारे घर एक पण्डित आया, और पिता जी का हाथ देख कर बोला कि....."तिलक राज, तेरे पर ऐसा वक़्त आ रहा है कि तेरा परिवार भूखा सोएगा....।"

पिता जी ने पण्डित से कहा...."पण्डित तेरा दिमाग खराब हो गया है। हमारे पास इतना पैसा है कि हम बैठ कर भी खाएँ, तो भी सात पुश्तों तक चलेगा, फिर भी खत्म नहीं होगा....।" न ही मुझ में कोई ऐब है, न मैं शराब पीता हूँ, न जुआ खेलता हूँ.... फिर ये कैसे हो सकता है....?

"पर यह हुआ....।" पण्डित जी की बात सच हुई।

"सन् 1947, हिंदुस्तान - पाकिस्तान का बंटवारा....।"

कपूर साहब कि आवाज़ फिर से गहरा गयी थी। शायद इस समय भी वो बंटवारे का दर्द महसूस कर रहे थे....।

इस बार पीछे की ओर सिर झुकाकर आसमान की ओर ताकते हुए, मानो आसमान में कुछ ढूंढ रहे हो, बोले....

1947 का गदर.....लाखों लोगों को कभी न भरने वाला घाव दे गया था, किसी को कम....तो किसी को ज़्यादा। लाखों लोगों के लिए खुद का घर... अपना घर..... विदेश हो गया था....।

बेहद सीधी आवाज़में कपूर साहब बोले....

बता नहीं सकता कि मेरे परिवार को मिले घाव कम थे या ज़्यादा....। “क्योकि मैं ओस वेले डेड साल दा सीं....।”

फिर मुस्कुराते हुए बोलते है कि....

डेढ़-दो साल का सुभाष कपूर यानि.... मैं.... इस बात से बेखबर कि मेरा परिवार कितनी मुसीबत में था....।

मेरी झाई और भाईयों के साथ हमारा परिवार हरिद्वार आया हुआ था। बंटवारे के समय हम पूरा परिवार हरिद्वार में ही थे। सिर्फ पापाजी पाकिस्तान रह गए थे।

पंज दिन....दस दिन....बी दिन.....इक महीना....धीरे-धीरे हमारे सब रिश्तेदार पाकिस्तान से हिंदुस्तान आ गये, सिर्फ पापाजी को छोड़कर। मुल्क़ के हालात सुनकर एकबारगी तो हमारे परिवार ने हिम्मत ही हार दी थी कि शायद पापाजी....।

अचानक डेढ़महीने के बाद ‘कुंदन लाल’ (रिश्ते में चाचा जी) के माफ़र्त, अमृतसर से टेलीग्राम (Telegram) आता है कि...“पापाजी ठीक हैं...।”

तब पापाजी के चाचाजी ‘दीवान चमन लाल कपूर’ उन्हें लेने अमृतसर गए और उन्हें लेकर हरिद्वार आ गए....।

पूरे परिवार में खुशी का माहौल था। गदर के उस समय में किसी के खोए हुए प्रियजन का मिल जाना चमत्कार रहा होगा। शायद हमारे घर में उस गदर के माहौल में भी दीवाली मनाई गई होगी।

मैं साफ देख रहा था कि कपूर साहब गदर के उस दर्द और पापाजी के मिलने की खुशी को बराबर समझ पा रहे थे।

"हरिद्वार में हमारे परिवार की नई ज़िंदगी शुरू हो गई....।"

हल्की साँस छोड़ते हुए कपूर साहब ने नज़रें मेरी तरफ घुमा दी और बोले....

"पुत्तर जी, उस समय का यह दुःख दर्द भले ही मैं उस समय न समझा होऊं पर आज तो अच्छी तरह से समझ सकता हूँ...।"

फिर हंसते हुए बोले....

उस बचपन की मुझे कुछ घटनाएँ बिल्कुल याद हैं.... बिल्कुल साफ - साफ....।

हम हरिद्वार तीन - चार साल रहे होंगे, जिस दौरान ये घटनाएँ घटी थीं। पहली, मेरे चाचा 'ओम प्रकाश', जिनकी उम्र उस वक़्त 24 साल थी का शरीर शांत हो जाना। दूसरी, सबसे बड़े भाई 'चरज कपूर' का भी शरीर शांत हो जाना....।

एक ओर भाई का शांत शरीर पड़ा था.... और दूसरी ओर अढ़ाई साल का बच्चा.... मैं, बर्फी खाने की ज़िद कर रहा था....।

उस समय मुझे क्या पता था कि..... यह सब क्या हो रहा है....?

और तीसरा, मुझे अपना झंड (मुंडन) अच्छी तरह से याद हैं। झंड के वक़्त आसमान पर बादल छाए हुए थे और हल्की - हल्की बारिश हो रही थी और यहाँ - वहाँ कीचड़ फैला हुआ था। ज्यादातर घर परिवार के लोग ही थे।

हम लोग काफी गरीब हो चुके थे, न कोई काम कोई धंधा....। हरिद्वार में बिताया हुआ ये अरसा.....गहने बेच कर बिताया गया।

1950 में जब 'चरज भाई' का शरीर शांत हुआ तो लोगों ने कहा

कि.... हरिद्वार हमारे परिवार को रास नहीं आ रहा। हरिद्वार परिवार कि दो बलियां ले चुका है.....।

हम परिवार के दो सदस्यों को खो देने के पश्चात् हरिद्वार से दिल्ली के लिए चल पड़े। एक बार फिर हमारे परिवार को नयी ज़िन्दगी शुरू करनी थी। नया शहर...., नए लोग....। हमारे लिए इस नये शहर, दिल्ली में कुछ अपने थे। कुछ हमारे खास रिश्तेदार भी....।

इस आस में कि शायद दिल्ली रास आ जाए.....हम दिल्ली पहुंचे।

कपूर साहब ने मेरे चेहरे से आँखे हटाई और अपना सिर सोफे पर टिका कर कुछ सोचते हुए बोले....

"मुझे सोफे पर बैठने की आदत नहीं....।"

मैंने कहा.... ....जी....!

"हाँ ! मैं दीवान पर बैठना पसंद करता हूँ....।"

कुछ मुझे,कुछ खिड़की से बाहर फैले आसमान की ओर ताकते, मुस्कुराते हुए कपूर साहब बोले....

हम अपने एक खास रिश्तेदार के पास दिल्ली में 'नवाबगंज' पहुँचे। जहाँ कटरा अरूड सिंह, गली नीम वाली में उनकी ज़मीन थी.... और रहने को एक कमरा था जो कि 14'x9' का था।

कमरे के बीचों-बीच पर्दा डाल दिया गया। पर्दे की एक ओर उनका परिवार जिसमें कुल चार सदस्य थे....और पर्दे की दूसरी ओर हमारा परिवार जिसमें पाँच सदस्य थे.... पापाजी, झाई, भाई जगदीश, कैलाश और मैं....।

किसी तरह गुजारा होने लगा था....। कुछ दिन बीते तो पापा जी ने सोचा कि कुछ काम करना चाहिए....

तो मेरे वो रिश्तेदार पापा जी से बोले कि... "होटल खोल लेते हैं..।"

6 हजार रूपये में साऊथ एविन्यु (South Avenue) राष्ट्रपति भवन में साऊथ ब्लॉक (South-block) में कैंटीन (Canteen) मिल रही है.... वो ले लेते हैं....। पर मेरे पास पैसा नहीं है.... और मेरी घरवाली मुझे गहने नहीं देगी....। तुम अपनी घरवाली से गहने ले लो....।

अब झाई जी ने अपने गोखरू और कड़े वगैरहा बेचने के लिए दे दिए। उस समय सोना 90 – 92 रुपये तोला होता था झाई ने उस समय अपना 70 प्रतिशत सोना दे दिया।

हम काम करने लग गये। एक साल के बाद कैंटीन का मालिक आया और बोलने लगा कि....

"कैंटीन खाली कर दो....।"

पापा जी बोले.... "क्यूँ खाली करूँ....? मैं यहाँ का मालिक हूँ....।"

मालिक बोला.... "तू काहे का मालिक....तेरा तो कहीं नाम ही नहीं...। कैंटीन एक साल कि लीज़ (Lease) पर है....।"

पापा जी सन्न रह गए.. 'इतना बड़ा धोखा'.. 'इतनी बड़ी बेईमानी'..।

दरअसल कैंटीन खरीदते वक़्त हमारे उस खास रिश्तेदार के दिल में बेईमानी आ गई और उन्होंने कागज़ अपने नाम बनवा लिए। पर बेईमानी के चलते उन्होंने जल्दी – जल्दी में कागज़ पूरे नहीं पढ़े। बेचने वाले ने उनकी बेईमानी को पकड़ते हुए, कि जब यह अपने सगे से बेईमानी कर सकता है तो, क्यूँ न मैं इसके साथ बेईमानी कर लूँ।

उसने पूरे कागज़न बनाकर हमारे उस रिश्तेदार के नाम एक साल की लीज़बनवा दी। और बेईमान के साथ बेईमानी कर डाली।

नतीजा भुगतना पड़ा हमारे परिवार को। पैसे की आमद बन्द हो गई। धीरे – धीरे सारा पैसा ख़त्म हो गया। यहाँ तक कि खाने के भी लाले पड़ गये। और एक दिन ऐसा भी आया कि हमारा परिवार भूखा सोने पर मजबूर हो गया। पर मैं.... छोटा था, भूख के मारे मुझे नींद नही आई और मैं रोने लग गया।

झाई ने परदे के पार रिश्तेदार की घरवाली को कहा कि..."भाषी नू इक रोटी दे दे...।"

उस रिश्तेदार की घरवाली ने परदे के उस पार से गिन कर एक रोटी इस ओर सरका दी। जिसे खाकर मेरी भूख शांत हो गई और मैं सो गया।

सिर्फ एक रोटी मेरे अपने उन रिश्तेदारों ने खिलाई, जबकी उस रिश्तेदार की घरवाली सरकारी नौकरी में थी।

"पता नहीं उस रात.... पापा जी, झाई जी और भाई ये सब कैसे सोए होंगे....।"

अब हमारे उस रिश्तेदार ने हमें घर से भी निकाल दिया। बद से बदहाल हो गये हम लोग....।

अब हम लोगों ने नवाब गंज में ही जमीर वाली गली में 10 रुपये किराए का कमरा लिया और नमक के डिब्बे भरने का काम शुरु किया।

"इस गरीबी की हालत में हम लोग खूब मेहनत करते....।"

इस बार माथे पर पड़ी सलवटें थोड़ी सी गहरी दिखाई दीं मुझे।

"बुरे वक़्त में.... रब.... हमेशा ध्यान रखता है....।"

इसी वक़्त में जिस दिन अशोक ने पैदा होना था हमारे पास कुछ नहीं था। हम लोग खाली.... हाथ थे।

उस समय पापा जी की बुआ आई और बोलने लगी कि...."फलां आदमी ने 360 रुपए देकर कहा कि.... तुम्हे दे दें....।"

पापा जी ने वो पैसे उस आदमी से लेने थे। पैसे आते ही पापा जी सारा सामान ले आए। घर का राशन वगैरहा सब कुछ....। इसके दो घण्टे बाद अशोक पैदा हो गया।

इस पैसे से 100 – 150 रुपये बच गये थे। इसी 100 – 150 रुपये से हमने गली 'जमीर वाली' वाले मकान में आकर 100 – 150 रुपये के नमक के कट्टे लिए और नमक के डिब्बे भरने का काम शुरु कर दिया। एक एक पौण्ड (pound) के डिब्बे, पौण्ड मतलब साढ़े सात छटांक यानी 430 gm के डिब्बे पैक (pack) करते थे। मैं भी ये डिब्बे पैक (pack) करता था।

एक दिन तो मैंने 28 कट्टे पैक (pack) किए, एक कट्टे में लगभग 84 डिब्बे होते थे। यानी लगभग 2500 डिब्बे और मेरी उम्र थी केवल सात साल! सात साल कि उम्र मे नमक से खेलना कितना मुश्किल होता था। 12 – 12 डिब्बे बनाकर उन पर गत्ता लगाते और फिर पैक (pack) करते। उसकी सप्लाई (supply) करते और धीरे – धीरे कुछ काम चलना शुरू हो गया।

पर एक दिक्कत थी तो वो ये कि नमक का डिब्बा फट जाता था, जिससे हमारा नुकसान होता था। समझ में नहीं आता था कि.... क्या करें....? थक हार कर डिब्बे का काम बन्द कर दिया।

मन के खामोश अलाव को कपूर साहब ने थोड़ा सा कुरेदा, जिसकी तपिश एक ठण्डी सांस के रूप में उनके मुंह से बाहर निकली और लम्बी सांस भरते हुए कपूर साहब बताते हैं कि.....

"अब गुज़ारा कैसे हो....?"

पापा जी ने बुजका (सड़क पर कपड़े की फड़ी) लगाना शुरू कर दिया। अक्सर वहां कोई न कोई रिश्तेदार या कोई जानने वाला निकलता तो फब्ती (ताना) कस जाता.... "ओए तिलक राज.... तू बुजका लगा रेआ...."

बस पापा जी रोते हुए, घर की ओर चल पड़ते, इधर पापा जी घर पहुँचते और उधर कोई न कोई कपड़े का थान लेकर चलते बनता। ये काम भी बन्द करना पड़ा। धीरे-धीरे गरीबी फिर से फन उठाने लगी.... एक सांप की तरह....!

पापा जी को बेशक शरीर छोड़े अरसा बीत गया हो पर वो आज भी ज़िन्दा हैं। मुझे अभी भी ये लगता है कि पापा जी मेरे आस-पास है।

मैं अपने दिमाग और दिल में पापा जी को प्रत्यक्ष देखता हूँ....।

इस गरीबी में पापा जी एक बात कहते थे, जो आज भी मेरे दिल को सालती है....

"भाषी मैं अमीरां दा पुत्तर आँ, ते तू गरीबां दा पुत्त है....।"

बरसों से लगभग ठण्डे पड़ चुके अलाव से.... वक़्त की राख हट चुकी थी.... यादों का अलाव दहकने लगा था।

अब मेरी ओर दिव्य मुस्कुराहट के साथ देखते हुए कपूर साहब बोलते हैं कि....

ऐसी गुरबत, ऐसी गरीबी में भी पापा जी ने अपनी ईमानदारी नहीं छोड़ी। मेहनती तो वो थे ही....

अब पापा जी ने केले के आढ़ती के पास नौकरी कर ली। पापा जी केले के गोदाम में होते थे। जहाँ केले की वैगन आती थी और वहाँ से घोड़ा रेढ़े मे केले जाते थे रोज़ 86 रेढ़े बेचने के बाद 4 - 5 रेढ़े बच जाते थे जो कि बाकी के कर्मचारी आपस में बाँट लेते थे।

पापा जी ने ये बात शाहों से कही तो उनका जबाव था कि.... "हमें 86 रेढ़े पहुँच जाते हैं.... हमें उसी से मतलब होता है.... बाकी जो बचता है वो जो मरजी खाए। चाहो तो तुम भी हिस्सा ले लिया करो....।"

पापा जी के एक चाचा बोले.... "उल्लू दे पट्ठे तिलक राज.... तेरे बच्चे भूखे मरदे पए हन, जद तैनू मोका मिलया है, ता क्यों नी लैंदा....।"

पापा जी बोले.... "चाचा जी.... मैं ये काम नहीं कर सकता। रही बच्चों की बात तो ये रब की देन हैं, रब चाहेगा तो ठीक.... नहीं चाहेगा तो मरने देगा।" मैं ग़लत काम नहीं करूँगा...."मेरा रब....इम्तेहान ले रया ए....।"

और पापा जी ने गलत काम नहीं किया। ये वाक्य प्रेरणा स्त्रोत हैं।

"आम आदमी मुसीबतों की फिसलन मे फिसल जाते हैं.... बहुत कम लोग अपने को फिसलने से बचा पाते हैं।" ऐसे विरले लोगो में से थे मेरे पापा जी।

बात बोलते हुए कपूर साहब के चेहरे पर लालिमा दिखाई दे रही थी। अब ये अंदाज़ा आप खुद लगाएं कि ये लालिमा.... गर्व की थी या यादों के अलाव की तपिश की....।

थोड़े से हालात संभले ही थे कि एक और धक्का लगा।

उन दिनों रुपये सिक्कों में आते थे। पापा जी के पास 360 रुपये के सिक्के थे जिनका भार 25 किलो के आस पास था। पापा जी ने ट्राम (Tram) में आते हुए वो पोटली ट्राम (Tram) चलाने वाले हैंडल के साथ रख दी और उतरते हुए वो उसे भूल गये और वो पोटली वापिस नहीं मिली। 360 रुपये का इस हालत में गुम हो जाना बहुत बड़ा झटका था.... हमारे परिवार के लिए। पर पापा जी ने हिम्मत नहीं हारी।

कुछ अर्से के बाद पापा जी ने केले का काम छोड़ दिया।

अब सोचा कि.... "क्या काम किया जाये....?"

ध्यान से सोचा की नमक के डिब्बे फट जाने से घाटा हुआ है, तो क्यों न....ऐसा काम किया जाए कि ये नुकसान न हो....। तब ध्यान में आया कि क्यों ना नमक के लिए कपड़े की थैली का प्रयोग किया जाए।

उस समय प्लास्टिक (Plastic) नाम की कोई चीज़ नहीं होती थी.... तो हमने नमक के लिए कपड़े की थैली का इन्वैंशन (Invention) कर डाला।

4 रुपये की 100 थैली बिकती थी। 100 थैली काटनी...., सिलनी.... फिर उसे सीधा कर के डगे से प्रिन्ट (Print) करना। थैली पर 'बटर सॉल्ट' (Butter salt) और 'रिफाइन्ड सॉल्ट' (Refined salt) लिखा जाता था। 3 रूपये 75 पैसे प्रति 100 की लागत आती थी।

इस काम को शुरु किये साल हुआ था.... शायद सन् 1953 की बात है ये कि.... सरकार ने claim के रूप में हमें बेरी वाला बाग का मकान दे दिया...।

ये claim उन परिवारों को दिया गया था जिनकी ज़ायदाद पाकिस्तान में छूट गई थी। claim में सिर्फ मकान इत्यादि मिले कोई नकदी नहीं।

धीरे-धीरे थैली बनाने के काम में हमारी ज़बरदस्त मनॉपली (Monopoly) हो गई थी।

आज 'Steel Bird' में जितनी डाक आती है.... उस से कई गुना ज़्यादा तब आती थी....।

फिर भी हम लोग थैली का रेट (Rate) 4 रुपये से ज्यादा नहीं बढ़ा पाते थे....क्योंकि अगर माल बिकना बन्द हो गया तो रोटी कहाँ से खाएंगे।

हालांकि हम 10-12 हज़ार थैली रोज़ बनाते थे। तब व्यापार का ये सबक सीखा था, और मैंने कहा था कि....

"रेट (Rate) वही ले सकता है जिसके घर में 6 महीने का राशन हो।"

बुरा वक़्त काफी कुछ सिखा गया, समझा गया....वक़्त से पहले ही काफी समझदार हो गया था.... मैं....।

जीवन में घटने वाली घटनाओं को काफी तेज़ी से समझा.... अच्छे बुरे की परख करनी भी आई। तेज़ी से बढ़ती समझदारी के इस दौर ने मेरे बचपन को काफी.... पीछे छोड़ दिया था।

झाई भी दिन रात परिवार के लिए मरती-खपती। मुझे झाई के साथ हाथ बंटाना अच्छा लगता। जब हम दिन में थैलियां बनाते तो झाई भी हमारे साथ हाथ बटांती और रात को जब झाई जी खाना बनाने लगती तो मैं झाई का हाथ बंटाता। जैसे सब्ज़ी वगैरहा काट देना, चावल बनाना या बाज़ार से तन्दूरी फुल्के लगवा कर ले आना। झाई बहुत प्यार करती थी मुझे। इस दौर से चुराये गए बचपन के कुछ दिन याद हैं....मुझे।

अब कपूर साहब कुछ मुस्कुराकर बोलते हैं....

अशोक को कुच्छड़ (गोद) उठाकर खिलाना भी झाई की मदद करने में शामिल होता था। एक बार झाई ने कहा....

"भाषी जा तदूंर तों.... फूल्के लगवा लेआ....।"

मैं तन्दूरी चपाती लेने चला गया। चपाती के लिये पीतल का एक डिब्बा होता था। चपाती लेकर डिब्बा सिर पर रखा और अशोक को कुच्छड़ (गोद) में....।

थोड़ी देर बाद सिर पर रखा डिब्बा गर्म लगने लगा, ना तो मैं डिब्बा सर से उतार सका.... न तो अशोक को....।

रोते - रोते घर पहुँचा तब झाई ने बहुत प्यार किया और पैसे देकर कहा....

"जा नथ्थू तों.... भल्ले ले के आ"।

मैं गोल गप्पे वाले 'नथ्थू' से दो आने के भल्ले लाया। तब दो आने में एक आदमी भर पेट खाना खा सकता था। बेहद प्यार से झाई ने मुझे खाना खिलाया और बहुत दुलारा।

बोलते बोलते कपूर साहब की मुस्कान गहरा गई थी.... पर ये मुस्कान बचपने में लिपटी थी। कपूर साहब के अंदर का बच्चा उनके चेहरे में दिख रहा था.... लगभग.... 'बाल - कृष्ण'.... रूप।

मैं एकटक उनकी ओर देख रहा था और कपूर साहब ने मेरी ओर नज़र डालकर कहा ....

"फिर भी इस दौर में कभी-कभी मैं बचपन को पकड़ने की कोशिश करता...।"

कभी-कभी खेलने का दिल करता तो खेलने के लिए गली खूं-वाली को भाग जाता.... क्योंकि अगर मैं घर के सामने खेलता तो फौरन घर बुला लेते।

अच्छी तरह याद है कि जब मैं गली खूं-वाली में खेल रहा होता तो जगदीश भाई खिड़की से आवाज़ मारते....

"ओए भाषी घर आ जा....।"

11 साल का मैं.... भाषी.... उनकी आवाज़ को अनसुना कर देता.... मुझे पता तो था कि घर जा कर थप्पड़ तो पड़ना ही है तो क्यों न खेल कर ही जाऊँ....।

थोड़ा बहुत खेल कर जाता। कभी-कभी थप्पड़ भी पड़ जाता था.... जगदीश भाई साहब से....।

उनकी बाल मुस्कान और गहरा रही थी....।

जब मैं सातवीं में पढ़ता था तो हम यार-दोस्त सुबह घूमने चले जाते थे। उन दिनों हम दोस्तों में किसी के पास भी घड़ी नहीं होती थी। एक दिन.... रात को उठकर घूमने चले गए और कुरसिया-घाट पहुँच गए.... और साथ ही एक रुपये की शर्त लगाने पर.... कब्रों को हाथ लगा कर आए।

उस समय 1 रूपये की अहमियत इतनी थी कि एक रूपये के लालच में.. .हम कब्र को हाथ लगाने से भी नहीं हिचकिचाते थे.... कब्रिस्तानों में....।

पी. एल. ढल्ल (शोरी) हमारी गली में रहता था। शोरी के पापा 'श्री

ज्ञान चंद', कंडा (तराजु) पर काम करते थे।

शोरी और मैं.... चौथी से साथ पढ़े हैं.... तब से मेरे दोस्त हैं।

घर छोटा होने के कारण हम लोग छत पे या गली में सो जाते थे। सारे दिन की थकान के कारण मैं.... गली में मंजी पर घोड़े बेच कर सो जाता तो मेरे यार - दोस्त मेरी मंजी उठाकर.... मेरा राम - नाम सत्य करते हुए मुहल्ले से बाहर चौक पर छोड़ जाते।

सुबह गाड़ियों का शोर सुनकर जब मेरी नींद खुलती तो मैं मंजी और बिस्तर कंधो पर डालकर पूरे बाज़ार से होता हुआ घर पहुँचता। बाज़ार वाले खूब हंसते। वहाँ एक दुकानदार 'मुन्शी लाल' रोज़ हंसते हुए कहता कि.... "भाषी.... आज फिर हो गया....?"

लगभग चौथे दिन ये घटना घट जाती थी।

मेरे दोस्त जो चौथी से मेरे साथ पढ़े हैं.... 'शोरी' (पी. एल. ढल्ल), 'कुकड़ी' (कृष्ण लाल ढल्ल) और 'चमन लाल' इस शरारत में शामिल रहते।

एक बेहद बचपने की घटना याद आ रही है। शायद मैं चौथी या पाँचवी में था। आज़ाद मार्किट जहाँ है, वहाँ.... आरे.... होते थे। एक दिन आरे जल गए और वो रास्ता बन्द हो गया। हम उस रास्ते से ही हो कर स्कूल जाते थे। स्कूल से दो छुट्टी होने पर मैं बहुत खुश हुआ।

और हाँ.... मैं तीसरी चौथी में था तो 'जनसंघ' का बिल्ला लगाकर घूमता था....।

पारिवारिक संस्कारों के कारण ही.... मैं.... इसी उम्र में हिन्दुत्व से जुड़

चुका था। इसी उम्र से ही समाज सेवा की भावना मेरे दिल में पैदा हो गई थी।

बताते-बताते कपूर साहब का बाल रूपी चेहरा अचानक परिपक्व लगने लगा, अगले ही पल ये परिपक्वता कहीं गुम हो गई और उसकी जगह बाल सुलह मुस्कान ने ले ली .....

वो बताते हैं कि....

मैं 'टेंट कॉलम्बस स्कूल' (Tent Colombus School) में पढ़ता था.... जो कि बाढ़ा हिन्दु राव में था। वह कॉरपरेशन का स्कूल था जिसे मैं टेंट कॉलम्बस स्कूल (Tent colombus School) कहता था.... क्योंकि स्कूल टेंट में लगता था। बरसात मे इतना पानी हो जाता था कि आये दिन छुट्टी हो जाती थी, और दो महीने की छुट्टियां अलग...

कुल मिलाकर पढ़ाई बहुत कम हो पाती थी। और अंग्रेज़ी में हाथ बेहद तंग था क्योंकि अंग्रेज़ी सब्जेक्ट (Subject) छठी में लगा था। काम के कारण पढ़ाई के लिए बहुत कम वक़्त मिलता था।

एक बार फिर कपूर साहब का चेहरा परिपक्व हो उठता है....

"बहुत काम करते थे हम....। मैं, झाई और पापा जी....और कभी-कभी कैलाश....।"

14' x 9' के इस मकान में 6'x9' का स्टोर (Store) भी था जहाँ हम थैलियां बनाते थे। ऊपर एक मयामी थी वहाँ पर भी माल रखा जा सकता था। हमारे पास 100 - 100 पौंड की गांठे आती थी। 100 पौंड की 36 गांठे जिनमें लोहे की पत्ती होती थी। उन्हें काटता.... फिर खोलता.... फिर सारे कपड़े को

ढोता ऊपर को.... अकेला....। तब मैं 11 – 12 साल का हो चुका था।

इस उम्र में ही पापा जी ने मुझे ऑल इन ऑल इंचार्ज (All in all - Incharge) बना दिया था।

इस उम्र में ही मुझे 65 रुपये दिये जाते थे, खर्चे के लिए....। कैलाश भाई साहब को 35 रुपये और जगदीश भाई साहब को 30 रुपये।

ये 65 रुपये 20 तारीख के आस – पास खत्म हो जाते थे.... तब भी मैं झाई से 5 – 10 रुपये लेता रहता था।

मुझे बड़े भाईयों से ज़्यादा खर्चा इसलिए मिलता था क्योंकि मैं ज़्यादा काम करता था। रोज़ 12 – 13 घण्टे काम करता था।

काम के लिए मैं लक्ष्य तय करता था.... जैसे 1000 थैली काटकर ब्रेकफास्ट (Breakfast) करना, 2000 थैली काटकर लंच (Lunch) करना और 4000 थैली काटकर फिल्म (Film) जाना....। ये एक सिस्टम (System) सा बन गया था।

दोनो भाई पढ़ रहे थे जो कि हमारे परिवार के लिए ज़रुरी भी था।

इतना काम करने के बाद मैं रोज़ फिल्म देखने ज़रूर जाता था....।

मैं सुबह काम करना शुरु करके, 5:30 बजे गज रख देता.... फिल्म जाने के लिए।

पापा जी बोलते.... "भाषी.... किनी वाली च जाएगा....?"

मैं बोलता.... "सवा.... वाली वीच....।"

वो बोलते.... "ठीक है.... पौने दो (1.75 रू.) वाली च जाई....।"

यानी मैं बोल रहा होता था कि मैं सवा (1.25 रू.) वाली टिकट में फिल्म देखूँगा और पापा जी बोलते कि तुम पौने दो (1.75 रू.) वाली टिकट ले लो.... थोड़ा और काम कर लो....।

आधे घंटे बाद मैं फिर गज रख देता तो पापाजी बोलते... "की होया..?"

मैं बोलता.... "मैं जा रहा हूँ.... क्योंकि मुझे जाने से पहले नहाना है...।"

नहाना इसलिए जरुरी होता था क्योंकि कपड़े काटते हुए, कपड़े से मावा उड़ता था।

पापा जी बोलते...."2:30 रुपये वाली च जाई..... 6:30 बजे तक काम कर ले.....।"

इधर साढ़े छः (6:30) फिल्म शुरु हो जाती थी।

जब मैं बोलता.... "फिल्म तो शुरु हो जाएगी....।"

तो पापा जी बोलते.... "कंदू (सिकंदर लाल मरवाह) को बोल कि दो टिकट ले के रख ले.... 15 मिनट होर काम कर ले....।"

आखिर मैं पौने सात (6:45) पर नहा धोकर निकल जाता। मैंने "राजकुमार फिल्म" बत्तीस बार देखी.... पर फिल्म की शुरुआत कभी नहीं देखी।

ये अलग बात है जब मैंने VCR खरीदा था तब मैंने राजकुमार फिल्म को शुरू से देखा था।

कभी कभी तो मैं फिल्म के इंटरवल (Interval) से थोड़ा पहले पहुँच पाता.... मेरे दोस्त को आदत पड़ गई थी.... कंदू दो टिकट लेकर बाहर खड़ा इंतज़ार करता।

कभी ज़्यादा लेट हो जाता तो.... पापा जी ऑटो सैंक्शन (Auto Sanction) दे देते.... यानी थ्री-व्हीलर (Three Wheeler) के 5 आन्ने एक्सट्रा (Extra)....। फिर चाहे हॉल Hall खाली क्यों ना हो। फिल्म ढाई (2.50 रुपये) में ही देखी जाती।

पापाजी मुझसे बेहद प्यार करते। मेरी तकरार होती थी अकसर एक बात पर....।

पैसों की तंगी होती थी...। 5 रुपये का नोट होता तो पापा जी बोलते कि...

"तीन रुपये तू रख ले.... दो रुपये मैं रख लेता हूँ...।"

मैं कहता.... "नहीं पापाजी....तुसी त्रै रख लो.... तां मैं दो रख लवांगा...।"

वो कहते.... "ना.... तू दोस्तां नाल क्नॉट पलेस (Cannaught Place) जाणा है....।"

मैं कहता..."नहीं पापाजी....तुसी...त्रै रख लो...तुसी... बज़ार जाणा है...।"

आधे-आधे घण्टे की मीठी तकरार के बाद ढाई-ढाई रूपये रख लेते.... हम... बाप-बेटा।

"हम दोनों का स्वभाव ही रहा है त्याग करने का एक-दूसरे के प्रति।"

"पापाजी मेरे साथ एक दोस्त की तरह बर्ताव करते थे....।"

पापाजी, झाई जी की बात करते हुए कपूर साहब के चेहरे पर गज़ब

की श्रद्धा दिख रही थी....। उसी बहाव में बहते हुए कपूर साहब ने कहा....

जब मैं पढ़ाई से हटा तो मैने गोपाल सॉल्ट रिफाइनरी (Gopal salt Refinery) में नौकरी भी की थी। नमक की ये फैक्टरी (Factory) राणा प्रताप बाग में थी।

"100 रुपइए महीने दे मिलदे सन...।"

पर ये अलग बात है कि जब मैंने एक साल बाद ये नौकरी छोड़ी थी तो मेरी छः महीने की तनख़्वाह बकाया थी, जो मुझे आज तक नहीं मिली है। साल की नौकरी की एवरेज़ (Average) 50 रुपये प्रति महीना रही ।

कुछ समय बाद मैंने 800 गज में बनी इस नमक की फैक्टरी को 6000 रुपये में खरीद लिया और दो साल फैक्टरी चलाने के बाद 8000 रुपये में उसे बेच दिया। क्योंकि इस फैक्टरी की तरफ गुड़-मण्डी वाला पुल टूट जाने के कारण कारोबार पर काफी फर्क पड़ रहा था।

इस अर्से में जगदीश भाई की नौकरी भी लग गई थी और वो परिवार को पूरा सहयोग करते रहे। दफ्तर से आकर जगदीश भाई काम में पूरा हाथ बंटाते थे।

कपूर साहब उसी बहाव में बहते हुए बताते हैं कि.....

इसी अर्से में एक दिन पण्डित जी घर आये। ये वही पण्डित जी थे जिन्होंने पापाजी के बारे में भविष्यवाणी की थी कि, "तिलक राज एक दिन तेरा परिवार भूखा सोएगा....।" उन पण्डित जी को मैंने भी हाथ दिखाया।

हाथ देखकर पण्डित जी बोले कि.... "सुभाष.... तेरी किस्मत में पढ़ाई नहीं है....।"

मैं केआ.... "सोला आने सच....।"

हांलाकि मुझे लगता था कि भविष्य का ज्ञान किसी के पास नहीं है। पण्डित जी की बात सुनकर मैं हैरान हो गया क्योंकि सच में....मैं पढ़ाई में कमज़ोर था। अब मुझे पण्डित जी की बात पर विश्वास हो गया था।

साथ ही पण्डित जी ने बताया कि... "तू.... नौकरी करेगा....।"

पण्डित जी ने बताया था, तो मैंने 10वीं की किताबें फौरन बेच दी....। हालांकि मैंने 10वीं के पेपर दिये हुए थे और अभी रिज़ल्ट (Result)आना बाकी था।

पण्डित जी की बात को ध्यान में रखते हुए मैने 'कपूर टाइप राइटर' Kapoor type writer, 116 आज़ाद मार्किट में टाइप (Type) सीखना शुरू कर दिया।

टाइप सीखते - सीखते जब ऊब जाते तो मैं और शोरी, Type की दुकान के ठीक पीछे 'घई' के पास चले जाते। घई खिलौने के डिब्बे बनाता था।

एक दिन मैंने और शोरी ने घई को बोला कि.... "हमें डिब्बे बनाना सिखा दे....।"

सीखने के लिए हमने उसके पास 30 रूपये महीना पर नौकरी कर ली।

जब डिब्बे बनाना सीख लिए तो मैंने पापाजी से 100 रुपए मांगे कि.... "मुझे अपना काम करना है....।"

पापाजी ने कहा.... "क्यों.... ये तेरा अपना काम नहीं है....?"

तो मैंने कहा...."पापाजी.... इस पैसे से.... कोई और काम करके.... मैं.... ये देखना चाहता हूँ कि मुझमें खुद की कितनी काबिलियत है....।"

डिब्बे बनाने का काम शुरू करने के लिए...."

पापाजी ने 100 रूपये दे दिए।

पापाजी से पैसे लेकर मैं बहुवाली गली गया। वहाँ से कागज़ की पट्टियाँ ली.... और 'लभुराम जैन' से गुर्स गत्ता.... एक सुआ.... और एक "L" ले आया....। साथ ही गोंद बनाने वाला मैदा जिससे मावा बनता है, भी ले आया।

उस ज़माने में एक खिलौना मिलता था....जिसे ऊपर से दबाने पर सीटी बजती थी। हमारे साथ ही उस खिलौने का मैनुफॅक्चरर (Manufacturer) रहता था।

मैंने उससे पूछा कि...."खिलौने के लिए डिब्बे लोगे....?"

"वो.... बोला.... हाँ।"

उसने रेट पूछा.... तो मैंने उसे कहा...."आठ रुपये गुर्स.... ढक्कन के साथ....।"

उसने 5 गुर्स का ऑर्डर Order दिया....।

मैंने तीन दिन में उसे.... पांच गुर्स डिब्बा दिया....।

15-20 दिन में मैंने पाया कि मैं उस मैनुफॅक्चरर (Manufacturer) को 250 रूपये का माल दे चुका था और डिब्बा बनाने का मटीरियल (Material) अभी भी मेरे पास पड़ा था।

इधर जगदीश भाईसाब जो, नौकरी लग चुके थे। उनकी तनख़्वाह 156.50 रूपये प्रति महीना थी। इधर मैंने 15 – 20 दिन में ही 150 रूपये कमा लिए थे।

अब मैंने पापाजी से कहा कि.... "हुंण मैं नौकरी नी करांगा...।"

मैंने ये तय करने के बाद कि नौकरी नहीं करूँगा, टाइप सीखना भी छोड़ दिया।

क्योंकि अब मैं यह जान चुका था कि.... "मैं अपने बलबूते भी कुछ कर सकता हूँ....।"

मैं थैलियाँ बनाने के काम में जुट गया।

फिर हंसते हुए कपूर साहब बताने लगते हैं कि.....

मैं....और शोरी....साईकिल पर थैलियों से भरा बोरा, जिसका वज़न 50 किलो तक होता था। साईकिल पर एक ही बोरा जा सकता था पर हम दो बोरे ले जाते थे। रास्ते में आने वाले पुल पर थोड़ी चढ़ाई थी, वहाँ पर अक्सर बोरा गिर जाता। फिर कोई न कोई आके बोरा लदवा जाता, और कैसे न कैसे हम बोरे पहुंचा देते।

"क्योंकि पापाजी.... इक बोरे दे पंजा पैसे.... ते दो बोरयां दा पूरा इक रूपइयां दें दे सी....सब नूं।"

" रब दी बड़ी मेहरबानी सी.... किसी दे आगे कदी हथ नी फैलाया....पर मेहनत बहोत कित्ती....।"

इतनी मेहनत करता था कि मैट्रिक के पेपर वाले दिन भी 2000 थैली

काटकर, पेपर देने गया था।

अबकी बार हल्के नटखट हुए कपूर साहब आगे बताने लगे.....

पुत्तर जी.... मेरी एक आदत थी कि मैं चौक पर लोगों ने जो भी टोणे – टोटके किए होते थे, उन्हें कभी ऊपर से तो.... कभी नीचे से ताकता और उनके ऊपर से लाँघ जाता।

क्योंकि.... "मैं वहमी नी सी....।"

एक रात मुझे दौरा पड़ा, मेरे हाथ अकड़ गए। तो झाई बोली....

"ए टोने टोटकेयाँ दी पकड़ है.... तू उपरों लँघ जांदा ए....।"

झाई ने जाकर शोरी को पूछा कि.... "दिन में क्या – क्या खाया – पिया था....?"

शोरी ने बताया.... "हमने दिन में अंगूरों का जूस पिया था....।"

मुझे दौरे कई साल पड़ते रहे....।

उस समय इस बीमारी के इलाज़ के लिए बड़ा मशहूर डॉक्टर 'कृष्ण चंद' होता था।

उसके पास गये तो, वो बोला कि.... "मैं इलाज तो कर दूंगा....पर अगर दौरा मेरे सामने पड़े तो....।"

एक दिन मैं टैक्सी (Taxi) में इन्कम टैक्स ऑफिस (Income Tax Office) जा रहा था। मुझे लगा कि दौरा पड़ने वाला है....मुझे

आधा – पौणा – घंटा पहले दौरा पड़ने का एहसास हो जाता था।

मैंने टैक्सी वाले से कहा कि.... "दरियागंज.... चर्क – क्लीनिक Chark-Clinic मोड़ लें....।"

वहाँ पहुँचकर डॉक्टर के सामने मुझे दौरा पड़ गया।

डॉक्टर मुझे देखकर हैरान हो गया क्योंकि, इस बीमारी में 99 प्रतिशत लोग बेहोश हो जाते हैं और लाखों में से एक आदमी दौरे के समय होश में रहता है। मैं पूरे होश में था....।

डॉक्टर मुझसे पूछता रहा और मैं उसे लिख कर बताता रहा कि.... मुझे ये – ये तकलीफ हो रही है....।

" मैं उस वेले बोल नी पांदा सी.... मेरी अखा च आंसू आ जांदे सन.... मैं रोंदा जांदा सी....।"

हाथ इतने पक्के जुड़ जाते थे कि अगर दो घोड़े भी इधर से उधर लगा दो तो भी अलग नहीं कर पाते।

वो डॉक्टर भी मुझे ठीक नहीं कर सका....।

तब एक दिन झाई मुझे 'कमला' के पास ले गयी जो कि झूलती थी।

उसकी बड़ी मानता थी। वो खुद आवाज़ देकर बुलाती थी.... जैसे, 'जिसके बेटे को हार्ट अटैक हुआ वो आ जाए'.... 'जिसके चोरी हुई है'.... वगैरहा – वगैरहा....।

उसने आवाज़ मारी.... जिस लड़के के हाथ में दौरे पड़ते हैं....।

तो झाई जी खड़े हो गए और 'कमला' ने हरी इलायचियां.... भभूत... में भिगोकर पकड़ा दी....

और कहा कि.... "लड़के को कहो की... श्रद्धा के साथ खा ले....।"

जब झाई ने मुझे वो इलायची दी तो मुझे विश्वास नहीं हुआ, पर झाई के कहने पर इलायची खा ली.... और चमत्कार देखिए जो दौरा मुझे हर तीन-चार दिन बाद पड़ता था, अगले 10 साल तक नहीं पड़ा....।

मुझे विश्वास हो गया था कि इन चीज़ो में कुछ तो दम है। 10 साल बाद जब फिर से दौरा पड़ा तो झाई जी फिर से कमला के पास गयी। उसने फिर से आवाज दी....।

क्योंकि वो आवाज़ दें.... तभी इलाज हो सकता था.... वरना खाली हाथ आना पड़ता था....। यह बहुत बड़ा करिश्मा था...।

कपूर साहब लगातार बताते जा रहे थे....

इसी अर्से में, मैं और चमन एक बार 'वैष्णो देवी' चले गये। वापिसी में दिल किया.... और जम्मू से हम दोनों शिमला आ गये।

शिमला से वापिस आते समय हमारे रिश्ते के चाचा, जो रेलवे में थे.... उन्होंने हमें शिमला से कालका तक ट्रेन में भेज दिया।

आगे के सफर के पैसे कम थे.... "अब क्या करें....?"

परेशान होकर मैं आसमान की ओर ताकने लगा, इस आस में कि भगवान्.... कोई रास्ता दिखाओ....।

बस इतने में मुझे इंजन और डिब्बे के बीच 5 रूपये का करारा नोट

दिखा। मैंने वो नोट उठा लिया। और परमात्मा का, ईश्वर का धन्यवाद करके हम दोनों अम्बाला के लिए ट्रेन में बैठ गए।

अम्बाला में बड़े भाई जगदीश मिल गए जो किसी काम से वहाँ आए थे। उनसे कुछ 2 - 4 रूपये लिए और ट्रेन पकड़कर सीधा घर आ गया।

"ए पंज दा नोट.... बहोत याद आंदा ए....।"

"प्रभु ने कदी किसी दे अगे.... हथ नी फैलान दित्ता....।"

कपूर साहब ने नज़रें उठाकर ऊपर आसमान की ओर देखा, मुझे ऐसा लगा कि जैसे वो कोई नया सफर शुरू कर रहे हों। और कहने लगे....

पुत्तर जी....अब हम परमात्मा की कृपा से रोटी खाने लायक हो चुके थे।

उस बीच एक दिन कैलाश भाई का दोस्त 'नरेंद्र' आया और कहने लगा कि...."आप लोग थैलियों में एक आन्ना प्रति रुपया कमाते हो....। मेरे पास एक ऐसा साधन है जिसमें आठ आन्ना प्रति रुपया कमाए जा सकते हैं....।"

हम लोगों ने कहा कि.... "बता भई बता....।"

हम मेहनती तो थे ही, और पैसा भी कमाना चाहते थे।

उसने कहा कि..." फिल्टर (Filter) बना लो.. उसमें बहोत कमाई है..।"

हमने कहा कि.... "ये कैसे संभव है...।"

तो उसने हमारे हाथ से दो गुर्स Filter बनवाये, जो कि बेरीवाला बाग वाले घर के गुसलखाने में बनाये थे.... और बिकवा भी दिए। हमें वो Filter 12

रूपये दर्जन पड़े थे और 18 रूपये दर्जन के हिसाब से बेच दिए। यानि.... कमाई आठ आन्ना प्रति रुपया....।

लेकिन साथ ही उसने कहा कि.....'पेमेन्ट' (Payment) 3 महीने बाद करूँगा।

हमने कहा.... "कोई बात नहीं....।"

हम लोग थैलियों कि Payment भी 3 - 4 महीने बाद लेते थे, उस वक़्त इतना उधार चलता था।

हमने उससे कहा कि...."तू हमारा पार्टनर Partner बन जा....।"

उसने कहा.... "नहीं.... मेरा.... 'लेस' का काम है.... और मैं इस लाइन को छोड़ नहीं सकता....।"

वो हमारा पार्टनर नहीं बना।

साथ ही उसने ये भी कहा कि.... "मेरे पास Filter बनाने कि मशीनरी पड़ी है.... वो 3500 रूपये में तुम्हें दे देता हूं और उस लाइन में डाल देता हूँ....।"

हमने कहा कि.... "नयी फर्म खोल देते हैं....।"

उसने कहा.... "ठीक है....।" इसका नाम "Steel- Bird" रख दो।

हमने Steel-Bird नाम रख दिया... और 13, मार्च 1963 को Steel-Bird शुरू कर दिया।

अब ठंडी साँस भरते हुए कपूर साहब बोले.....

हमने बड़ी मुश्किल से नरेन्द्र को मशीन के 3000 रूपए दिए। उस समय हमारी कुल जमा पूंजी ही 6 - साढ़े 6 हज़ार की रही होगी।

3000 रुपए लेकर नरेंद्र चला गया और मुड़कर नहीं आया। एक महीने के बाद जब नरेंद्र नहीं आया तो हमें चिंता सताने लगी कि हमने इतनी रकम ब्लॉक (Block) कर दी है। अब इस सामान और मशीनरी का....क्या करें...?

मैंने दुकानदारों से पूछा तो वो बोले..... "नहीं.... तीन महीने बाद आना....।"

उस समय कश्मीरी गेट में तकरीबन 250 दुकाने थीं।

मैं एक दुकान में गया और पूछा.... "Filter.... चाहिए....?"

तो वो पूछते... "कौन सा.... फिल्टर...? 'Oil', 'Fuel' या कोई और...?"

"पता हो तो बताता न....। मुझे यह पता ही नहीं था कि.... कौन से फिल्टर है....।"

मेरा जवाब होता....."पता नीं....।"

कई दुकानदारों ने गालियाँ तक निकाली कि.... "साले उल्लू दे पट्ठे... Manufacturer आ जांदे..... 'सालेयां नूं..... पता वी नी हुँदा कि बणाया है....।"

एक आदमी जिसकी 'Hans Auto Agency' Dev Motor

Market सीढ़ियों के नीचे, छोटी सी दुकान होती थी। उसने कुछ ज्यादा ही बोल दिया।

ये बताते हुए कपूर साहब बेहद शांत से दिख रहे थे....

इतना ज़्यादा बोल गया वो कि.... "मैं रो पड़ा....।"

मेरे रोने के बाद उसे महसूस हुआ कि.... उसने कुछ ज्यादा ही बोल दिया है। उसने मुझे प्यार से बिठाया, फिर कोका - कोला (Coca-cola) पिलाया।

मैंने उसे बताया कि.... कैसे हम 3000 रूपये फंसा चुके हैं.... फिल्टर के चक्कर में.... और कुछ पता - सता नहीं लग रहा।

उसने कहा कि.... "कोई बात नहीं.... मैं, तुम्हे सिखाऊँगा.....चिंता नहीं करो....।"

तब हमने दो ही तरह के फिल्टर बनाए थे। '30306' और '30347'.....।

उसने बताया कि.... "यह फिल्टर 'Perkin' के हैं....।"

मैंने कहा.... "मैं तां अज तक ए गडी नी सुनी....।"

तब वो बोला कि.... "Perkin..... गाड़ी नहीं.... इंजन (Engine) होता है....। ये 'Bad ford Truck' और ट्रेक्टरां (Tractor) चे लगदा है...।"

कई जगहों पर लगता है.... ये इंजन.... ये उस इंजन के फिल्टर है.... एक है फयूल् फिल्टर (Fuel Filter) और दूसरा डीज़ल फिल्टर (Diesel Filter)....।

साथ ही ये भी बताया कि..... हमारी भाषा में Fuel को oil filter और diesel filter को moblile filter कहा जाता है....। ये उस Filter का part no. 30306 है।

मेरे ये पूछने पर कि...."Part No. की होंदा है....।"

उसने Perkin की किताब मंगवाई और उसमें दिखाया कि...."देख ऐ.... 30306 लिखा है... और साथ ही इस Filter की तस्वीर है....।"

साथ ही बताया कि...."गाड़ी के हज़ारों पुर्जे होते हैं.... तो हज़ारों पुर्जों के नाम नहीं रखे जाते इसलिए इनके Part no. रखे जाते हैं....।"

फिर उसने दोनों Filter के Part no. दिखाए 30306 और 30347.....।

अब चहकते हुए कपूर साहब बोले....

बस अब हमें समझ आ गई। अब हम जाकर तपाक से पूछते.... Filter चाहिए.....? कौन सा Oil या Diesel....? 30306 या 30347....?

अब हमने Filter बनाने शुरू कर दिए। पूरे जोश-खरोश के साथ और दो साल में ही हमने 280 तरह के Filter बनाकर मार्किट में उतार दिए।

"बस मुझे छोटा सा रास्ता मिलना चाहिए.... बाकि मैं अपने आप करूँगा....।"

मुझे रास्ता मिला और मैंने कर दिखाया....। दो साल में 280 किस्म के फिल्टर।

कपूर साहब ने ये बात बड़ी सादगी और इत्मीनान से कही। जिसमें उनका आत्मविश्वास झलक रहा था।

अब तो हमने नमदे कि वाशलों का काम भी शुरू कर दिया। साथ ही मैं Tractors के Filter भी बेचता था। उनमें oil - seal पड़ती थी जो नमदे से बनती थी।

एक दिन जिस नमदे वाले से मैं नमदे लेता था उसके पास बेहद प्यारा नमदा देखा।

मैं उन्हू कैहा.... "किने दा ए....?"

उसने कहा.... "किन्ना लेणा....?"

मैंने कहा.... "सारा दे दे....।"

उसने कहा.... "ढाई सौ दे दे....।"

मैं एक बहुत बड़ा बोरा नमदे का ले आया। मैंने ट्रैक्टर्स की oil - seals मंगवाई।

कमाल की बात यह थी कि एक बड़ी oil -seal का जो Inner - Ring था दूसरी का outer बन जाता था....और दूसरी का Inner तीसरी का Outer बन जाता....। तो Wastage बिल्कुल नही हुई। यानि एक से दूसरी, दूसरी से तीसरी बनती गई।

मैंने इस तरह बहोत सारी Oil-Seals बना दी और Oil-Seals बनाकर बत्तरा (डीलर) को दिखाई।

तब बत्तरा बोला कि.... "ये तो इंपॉरटेड (Imported) है.....।"

मैंने कहा.... "मैनूं नी पता, जो कुछ है सामणे ए....।"

उसने पूछा...."कितने.... पैसे लेगा....?"

मैंने उससे कहा.... "इतने माल के 18,500 रूपए लूंगा....।"

उसने कहा...."ठीक है.... मैं तुम्हे 18,500 रूपए दे दूंगा.... लेकिन Immediate तुम्हे 15,000 दूंगा....बाकि बाद में दूंगा.... और इस शर्त के साथ कि तुम किसी और को माल नहीं दोगे....।"

मैंने कहा...."नई दांगा....।"

मैंने तो ढाई सौ दा नमदा लिया था, ढाई सौ की डाइयां ली थी, और ढाई सौ कुकड़ी (मेरा दोस्त) को दिए थे। कुल 750 रूपये....

और मैं 18,500 कमा रहा था। 15,000 तो दे ही रहा था। 3,500 नहीं भी दे तो न दे। मैं अपनी जगह खुश था।

15,000 उस समय इतनी बड़ी रकम थी कि 11,000 रूपए में तो नई Fiat गाड़ी आ जाती थी।

अगले दिन मैं बिजू नु भेजया कि.... तू बतरे नूं माल दे के 15,000 रूपए लैं आंई....।

बिजू को मैंने अपनी Factory (फैक्ट्री) में सुबह 10:30 बजे भेजा था और शाम के 6:30 बज गये और बिजू नहीं आया। मैं (नवाबगंज) परेशान टहल रहा था। उतने में मेरे दोस्त चमन का भाईया (पिता) आया और बोला.... "कि गल भाषी, परेशान टहल रहा ए....?"

मैंने कहा कि.... "यार.... बिजू को सुबह माल लेकर भेजा था, और उसे 15,000 रूपए लेकर आना था, अभी तक नहीं आया.....।"

चमन का भाईया बोला.... "ओ.... 'मुंशीराम' दे पुत्तर नु भेजया है। निश्चित हो के सो जा....ओ पैसा नी मार सकदा....।"

तब पता चला के डूबते को तिनके का सहारा क्या होता है। मुझे शांति आ गई कि किसी ने कह तो दिया कि मेरा पैसा मरेगा नहीं।

एक गहरी मुस्कान के साथ कपूर साहब बोलते हैं.....

थोड़ी देर के बाद बिजू आ गया, मैंने कहा.... "पुत्तर.... तूं बड़ी देर ला दित्ती....।"

वो बोला आपने मुझे क्या कहा था कि...."रूपये लै के आईं....। कहा था न....?"

मैंने कहा...."हाँ केहा सी....।"

"बत्तरा ने मुझे दुकान पर बिठा दिया था.... वो थोड़ा माल लेकर जाता उसे बेचकर आता और पैसे मुझे पकड़ा देता.... फिर जाता.....फिर थोड़ा माल बेचकर आता....और पैसे मुझे पकड़ाता.....। जब तक 15,000 हुए नी.... मैं उठा नी....., और जब तक 15,000 हुए नी वो लगा रहा....।"

फिर आप बताओ कि...."मैं क्या करता....? ये लो पकड़ो पन्द्रह हज़ार।"

आँखों में प्यारी सी चमक के साथ कपूर साहब बताते हैं.....

मैंने ज़िन्दगी में पहली बार इतनी बड़ी रकम देखी थी। पैसे कमाने

का रास्ता दिख चुका था।

अब जिस नमदे को 250 रूपए में खरीद कर 18,500 रुपये कमा चुका था, मैं वही नमदा लेने उसी नमदे वाले के पास गया और बोला कि.... "मैंनू होर नमदा दे....।"

वो कहता.... आज आ जाएगा.... कल आ जाएगा....।

वो कई दिन मुझे टरकाता रहा। आखिरकार मैं एक दिन उस नमदे वाले से लड़ पड़ा।

मैंने उससे कहा कि.... "मैं बाकी Filter का नमदा लेना बन्द कर दूंगा.... हमारी सारी Business Deal (बिजनेस डील) खत्म....।"

तब वो बोला.... "बैठ भाषी....।" मैं बैठ गया। "भाषी साडे कोल कोइ नमदा - शमदा नी, ना ही कोइ नमदा आणा....।"

मैंने कहा.... "तू ए कित्थों ल्याया सी....?"

उसने गल्ले से निकाल कर एक रसीद दिखाई.... "ये देख.... ये मैंने Railway (रेलवे) की Auction (नीलामी) में 35 रुपये में लिया था.... मैंने 35 रुपये का ये नमदा लेकर तुझे 250 रुपये में बेच दिया था....।"

वो अपनी जगह खुश था। मैंने उससे कहा.."ये रेलवे दी रसीद दे दे।" उसने वो रसीद मुझे दे दी।

वो रसीद लाकर मैंने जगदीश भाई साहब को दे दी। जगदीश भाई साहब की हमेशा से ख़ासियत रही है कि कोई चीज़ ढूंढनी हो तो उन्हें बता दें.

... वो कहीं से भी.... कैसे भी.... उस चीज़ को ढूंढकर दे देंगे। उनकी ये ख़ासियत आज भी कायम है।

मैंने वो रसीद उन्हें थमा दी। रसीद लेकर जगदीश भाई साहब Railway Office चले गए वहाँ से पता चला कि वो नमदा बड़ौदा से आया था। बड़ौदा की कम्पनी 'Mico' वालों की Filter Tube बनाती है, ये उसका वेस्ट (Waste) है।

अब बात समझ में आ चुकी थी। मैंने तुरन्त कैलाश भाई साहब को 5,000 रुपये देकर कहा.... "लो ऐ फड़ो 5,000 तां वड़ोदा जाओ.... औथों ते नमदा ले के आओ.....।"

कैलाश भाई 650 रूपये की वैगन भर के नमदा ले आए....। 650 रूपये नमदा भर Railway वेगन और 650 रुपये रेल का किराया.... यानी कुल 1300 रुपये की कीमत में Railway Wagon भर नमदा.....।

अचानक कपूर साहब थोड़ा सा रुके और हल्की सी मुस्कुराहट के साथ जिसमें हल्की सी तल्ख़ उदासी भी थी इस बार, के साथ बोले....

वापिस आकर कैलाश हिसाब ही ना दे....अभी कागज़ ज़ेब में ही थे,

बोलने लगा कि.... "मैंनू तां करो अलग.... मैं तां करांगा नमदे दा कम.... ते तुसी करोगे Filter दा कम....।"

मैं अब उनकी मुस्कुराहट में छिपी उदास तलख़ी का कारण समझ चुका था। इस बार मैने ठण्डी सांस भरी, कपूर साहब ने मेरी तरफ देखा मानो वो मेरे मनोभावों को समझ चुके हों, बोले....

पापाजी ने बहुत समझाया कि.... परिवार में तुम पाँच बच्चे हो...., उस समय छोटी बहन वीना और भाई रमेश भी पैदा हो चुके थे। ....सभी अभी कच्चे – कँवारे हो.... हमने अभी खड़े होना है....।

कैलाश बोला..... "मैंनु नी पता....मैं तुहाडे नाल नी रै सकदा.... मैं तां अपणा Standard बनाणा है। मैंनु अलग करो, मैं अपना..... अलग काम करना ए....।"

कैलाश भाई को बहोत समझाया पर वो नहीं माने....

एक दिन कैलाश भाई साहब ने फैक्टरी को ताला मारा और चाबी साथ लेकर चले गये। थोड़ी देर बाद संदेशा आया कि वो हमारे दिल्ली वाले खास रिश्तेदार के घर बैठे हैं। वहाँ आकर बात कर लो।

कैलाश ने अपनी बात दोहराई..... "मैं Filter नहीं बनाऊँगा.... और तुम वाशलों का काम नहीं करोगे....।"

पापाजी ने कहा....."भाषी ऐ कीवें हो सकदा है....?"

मैंने कहा....."पापाजी.... इक गल कहां कि.... इक आद्मी तां दलदल ते निकलेगा.... इनू आंनद लैण देओ, असी अपणा आपे देख लवांगे....।"

कैलाश भाई साहब की बात मानकर उसे अलग कर दिया गया और हम Filter बनाने लग गए। कुछ दिनों बाद कैलाश भाई साहब मेरे दोस्त कुकड़ी को दो – दो लाख रुपये Cash दिखाते और बोलते..... "भाषी नूं पूछ 20 रुपये भी हैगे.....।"

सच में हमें 20 रुपये भी इक्कट्ठे करने मुश्किल हो जाते थे। 18 रुपये का आधा टन लोहा लेने जाता था तो पैसे इक्कट्ठे करना मुश्किल हो जाता था क्योंकि आधा.... या यूं कहिए कि सब कुछ तो कैलाश ले गया था। उस समय Steel Bird में 3 Partner थे।

गहरी लंबी सांस भरने के बाद कपूर साहब बोले....

अबतक की जिन्दगी में मेरा ये अनुभव रहा है कि जब भी कोई Set Back आए तो.... इक्कट्ठे दो-दो आए और खुशी के मौके भी दो-दो आए....।

हम लोंगो की अथक मेहनत ने Filter के काम को खूब चला दिया। धीरे धीरे Filter का काम इतना बढ़ गया कि कोई हिसाब न रहा।

एक दिन मैं मार्किट (Market) गया तो इंडियन ऑटो सप्लाई (Indian Auto Supply) वाला मुझसे बोला .... "सुभाष यार तू तो सात रुपये Filter का Set दे रहा है.... जबकि तेरा भाई कैलाश साढ़े पाँच रुपये बोल कर गया है....।"

मैं उससे बोला.... "क्यों मज़ाक कर रहे हो....?"

वो बोला.... "क्यों.... क्या मैं कैलाश को पहचानता नहीं....?"

उसने Vicky Industries के Sample मेरे सामने रख दिये जो कि.... कैलाश भाई की Firm के थे।

मैं सकते में आ गया क्योंकि मैं Steel Bird के नाम से Filter नहीं बना कर अनाप-शनाप Company के नाम से Filter बना दिया करता

था। मैंने सोचा कि अगर कैलाश भाई साहब ने 5रूपये 50 पैसे के हिसाब से माल दिया तो मेरा पैसा Market में फंस जाएगा.... क्योंकि मैंने तो माल 7 रुपये के हिसाब से दिया हुआ था। इतेफ़ाक से मेरी सगाई हुई थी। मैंने Market में शोर डाल दिया कि मुझे पैसे की ज़रुरत है.... तो किसी से 5 प्रतिशत तो किसी से 10 प्रतिशत काटकर पैसा ले लिया और उस समय Steel Bird के नाम से Filter बनाना शुरु कर दिया।

उस समय Elofic का रेट (Rate) था 11.70 पैसे और Discount देता था कुल 10 प्रतिशत....।

मैंने Rate रखा 4.70 रूपये और Discount रखा 25 प्रतिशत और 10 प्रतिशत.... और मैंने Filter बनाया Elofic से 10 गुना बढ़िया। Filter धा-धाबिकने लगा। मेरा Filter इतना बिका इतना बिका कि Rate 4.70 से 5.70.... 5.70 से 6.70.... 6.70 फिर 7.70....फिर 8.70.... 9.70, ... 11.70 तक कर दिया और Discount 10 प्रतिशत बंद करके पूरा 25 प्रतिशत कर दिया.... Elofic का Rate 10.70 रूपये ही रहा। मेरा Filter मज़े से बिकता रहा।

जब मेरा Filter बिकता ही रहा तो Elofic को लगा कि Steel Bird तो मुझसे बहुत आगे निकल जाएगा। उसने Market के सारे डीलरों को 'अशोका होटल' में बुलाया। सब डीलर वहाँ गए क्योंकि उस समय Elofic का Market में बड़ा नाम था। तो Elofic वाले ने सब से दस-दस हज़ार रुपये की सिक्योरिटी (Security) ली और कसम खिलाई कि आप सब Steel Bird का माल नहीं बेचेंगे।

अब जिसका Order कल जाना था, उसका फोन आ जाता... "माल मत भेजो....।"

मार्किट में जिसके पास भी जाऊं वो कहे.... "पुराना माल पड़ा है... नया Order Cancel....।"

मैं सोचूं कि नया Order.... इतना Cancel क्यों हो रहा है....? बाज़ार में मुझे.... कोई भी न बताये....। क्योंकि सबने कसम जो खा रखी थी।

उस समय कसम की बहोत अहमियत होती थी.... इसलिए मुझे कोई कुछ नहीं बता रहा था....।

मैं....गुप्ता ट्रेडर्ज़ (Gupta Traders) वाले एक आदमी को तोड़ने में कामयाब रहा। क्योंकि उसे.... गुप्ता ट्रेडर्ज़ दुकान मैंने ही खरीदवाई थी।

गुप्ता ने कसम तोड़कर मुझे ये बता दिया कि.... "Elofic ने उससे 10,000 Security ली है.... और कसम खिलाई है सबको.... Steel Bird का माल न लेने की.... अब हमें Elofic का माल ही बेचना पड़ेगा....।"

मैंने कहा.... "बस इतनी सी बात है.... चल मेरे पिछले पैसे दे....।"

उसने मेरे पिछले पैसे दे दिए।

अब एक - एक करके मैंने सब दुकानदारों से पिछले पैसे इक्कट्ठे कर लिए और मेरे पास 3.5 लाख रुपये इक्कट्ठे हो गये। 3.5 लाख इक्कट्ठा करने के बाद मैंने बैग उठाया और पंजाब की ओर चल दिया ।

मैंने नाभा (पंजाब) में 'Gopal Sales Agencies'.... दिल्ली में

'Bhalla Tractor' को.... मुरादाबाद में Monga Tractors को....Bhalla की मार्फ़त Honda Sales Co. बिलासपुर को.... अपना Agent बना दिया।

Elofic ने मुझे यहाँ Target किया और मैंने बाहर काम फैला दिया। यहाँ मेरी 45 - 50 पार्टियाँ थी, बाहर 100 पार्टियाँ थी।

हंसी - हंसी के साथ कपूर साहब बोले.....

जो मेरी सेल (Sale) यहाँ 4.5 लाख थी वो अब 10 लाख हो गई। Elofic वालों ने जब पंजाब पकड़ा तो हमने South की ओर रुख कर दिया। मैंने अपने काम करने वाले लड़कों को Salesman बनाकर South भेजा और उन बच्चों ने 60 - 61 दिन के Tour किए और जितना बिजनेस वो बच्चे 60 - 61 दिनों में लेकर आए थे, उतना तो मैंने साल में भी नहीं किया था। मैंने ये भी सोच लिया कि अगर Elofic, South आता है तो मैं कलकत्ता पकड़ लूँगा। क्योंकि मुझे अपनी मेहनत पर पूरा भरोसा था। Elofic ने हमें यहाँ Target करने की कोशिश की तो.... हमने चौगुना विस्तार किया।

"मैंने कभी हथियार नहीं डाले....।"

"भाई चा तां भेजो"..... कपूर साहब ने अंदर की ओर आवाज़ मारकर कहा....।

"पुत्तर.... चा वगैर.... मज़ा ही नी आंदा....।"

मैंने पूछा काफी चाय पीते हैं आप.....

"आहो.... 15 - 20 कप तां पी ही लेंदा.....।"

अच्छा, कपूर साहब.... वो कैलाश जी ने अलग होकर जो काम शुरु किया था, वो वाश्लों वाला.... वो कैसा चला....? मुझे काफी जिज्ञासा हो रही है ।.....

हाँ.... कैलाश भाई ने Vicky नाम से Filter बनाया था। जो पैसे वाश्लों से कमाए वो सारे Filter के Range बनाने में लगा दिये....। अब Filter बनाने के लिये पैसे बचे नहीं वो वहीं के वहीं Close हो गए। और तब से लेकर अब उनके बेटे Vicky के बड़े होने तक उनकी हालत ज़्यादा अच्छी नहीं रही।

ये बात कपूर साहब ने बड़े शांत स्वभाव से कही.... जिसमें ईर्ष्या, बैर, द्वेष ऐसा कुछ नहीं था। वो बोले....

"सबको कर्म करते रहना चाहिए.... कर्म करने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए....।"

इसी बीच में मैंने 'Hans Auto Agencies' भी चलाई थी। मेरे चचेरे दादा 'दीवान चमन लाल कपूर' के बेटे 'केवल' के साथ C Lal - Co. भी चलाई।

'केवल' मेरे Under काम करता था। एक बार केवल को बॉम्बे (मुम्बई) भेजा। वहाँ से उनका फोन आया तब P. P. Phone होता था। वो Phone पर बोला कि.... "सुभाष.... अगर मैं 4 - 5 दिन और रुक जाऊं तो 30,000 का और Order मिल सकता है....।"

मैंने कहा.... "रुक जाओ....।"

हमें दूसरे दिन पता लगा कि वो वापिस आ गया है। मैंने कहा...."मैं तां तुहानु केहा सी तुसी रुक जाओ, तुसी वापस आ गए....।" वो बोला...."जाणदा हाँ किदे नाल गल कर रेआ ए....मेरे च किदा खून बै रया ए.....।"

मैंने कहा.... "चाचा जी.... शामी गल करांगे....।"

शाम को मैं उनके घर चला गया।

मुझे पापा जी, झाई और जगदीश भाई साहब ने बहोत रोका कि, "भाषी.... न जा.... साडी बनी बनाई ऐ...., ऐ खराब हो जाएगी....।"

पर मैं नहीं रुका, मैंने कहा.... "मेरी गल बड़ी Clear ए....इने तुहाडी बेजती किती...., एनें मैनू खून दसया ए, मैं इनू खून समझा के औणा"।

मैं अपने चचेरे दादा 'दीवान चमन लाल कपूर' के घर पहुँचा, तो वहाँ केवल वगैरहा जो चार भाई थे, वो चारों साथ बैठे थे। मैंने सभी को प्रणाम करने के बाद कहा...."मैं तुहाडे नाल गिला करण आयां, तुसां मेरी गल बड़े ध्यान नाल सुनणी....कल केवल दा Phone आया सी बोम्बे तों जित्थे इनू काम तै भेज्या सी....।"

मैं इसे चाचा केवल ना कह कर सिर्फ केवल बोल रहा था।

सारी बात सुनाकर, मैं केहा...."केवल ने केहा तूं जाणदा ए किदे नाल गल कर रेहा....ते मेरे च किदा खून बै रेया....।"

मैंने कहा कि...."अज तुवानु दसणा चांहदा.... मैं सुभाष कपूर S/o

तिलक राज कपूर और पोता हैगां किशन लाल कपूर दा....।" वो किशन लाल कपूर जो 25 साल में पूरे हो गये थे जिनके पास सोने, चाँदी के जड़े हुए के बटनों वाली 365 अचकनें थीं....जो आज भी तुम लोग डालते हो,

ये केवल, मुझे खून दिखाएगा, इसको कहो, इसको समझाओ कि खून दिखाना हो तो बाहर जाकर दिखाए, दोबारा ऐसा कहा तो.....मुझसे बुरा कोई नहीं होणा।

मेरे दादा ने भी मेरा साथ दिया कि.... "भाषी ठीक कह रहा है....।"

वो दिन आज का दिन इन चारों भाईयों कि जुर्रत नहीं हुई मेरे सामने मुँह खोलने की।

मैं समझ पा रहा था उनकी इस बात को.....और कपूर साहब की इस बात में श्रवण कुमार की सी झलक साफ दिखाई दी।

"बड़ी देर तां बैठे हो, थक गए होणे....।"

एक बहुत ही प्यारी सी महिला की आवाज़ सुनाई देती है।

"तुसी नाल हो तां....कादा थकना....।"

कपूर साहब शरारत से बोलते हैं। शरारत से मुस्कुराते हुए कपूर साहब बताते हैं....

ये मेरे सुख - दुःख की साथी, 'ललिता कपूर' हैं। मेरी जिन्दगी की हम - सफर, मेरे हर सुख - दुःख की गवाह और दुःख - सुख की साथी।

"इन्हां दे साथ दे बगैर.....इनां आगे पहुंचना मुश्किल सी....।"

मैं समझ गया कि ये 'श्रीमती कपूर' हैं। बेहद सौम्य और सुलझी हुई।

उनके आते ही कपूर साहब की आवाज़ थोड़ी रूमानी सी हो उठी थी जैसे मुरली वाले का एक और साक्षात रूप....। मधुर मुरली की तान सी कपूर साहब की आवाज़ आई....

"साडा ब्याह 3 मई सन् 1971 विच होया सी....।"

जब मेरी Factory नवाबगंज में ही थी.... जहां से मैंने "Steel Bird" शुरू किया था। वहां से फुर्सत के पलों में कभी-कबार बाहर आता तो....अकसर एक लड़की, जो कागज़ हाथ में लपेटे Type के लिए जाती थी।

उस समय मेरा कई लड़कियों से भी दोस्ताना था....जिनसे काफी गप-शप होती रहती थी। पर ये Type वाली लड़की....आते-जाते कभी सिर ऊँचा ही नहीं करती थी। कभी भी आँखे उठाकर इधर-उधर देखती ही नहीं थी। अब कोई....आँख उठाकर भी न देखे....तो उत्सुकता बढ़ ही जाती है। न चाहते हुए भी मन करता है कि उससे बात की जाए।

"अब उस लड़की से बात कैसे की जाए....?"

एक दिन मैं उसी लड़की की राह ताक रहा था। वो आई....और मैं, उसे ताक रहा था....तो सामने एक हलवाई होता था वो बोला...."सुभाष..... किंनू देख रैयां हे.... इधर न देखी मुड़ के....।"

मैं केहा...."क्यूं...?....की गल है....।" वो बोला...."ऐदा भाई 'श्रवण' तां बड़ा बदमाश है....। गल-गल ते चक्कू कड लैंदा हे....।"

मैंने कहा...."अच्छा भाई....।" क्या एक ही भाई है....?

वो बोला..."नई....और भाई भी हैं....।"

एक दिन मेरे दोस्त 'सहगल' के साथ 'हरीश' खड़ा था। हरीश और सहगल कभी इक्कट्ठे पढ़ते थे। मुझे सहगल ने हरीश से मिलवाया। हम लोग बातचीत कर रहे थे कि उतने में वहाँ से वो टाईप जाने वाली लड़की निकली।

उसे देखकर हरीश बोला...."ये मेरी बहन ललिता है.... टाईप सीखने आती है यहाँ....।"

बातचीत के दौरान हरीश ने ये भी बताया कि....हम इसके लिए लड़का ढूंढ रहे हैं।

बस बात आसान हो गई। मैंने हरीश से दोस्ती कर ली।

अपनी भरजाई (जगदीश भाई की पत्नी) और झाई को इसे (ललिता) चोरी छिपे दिखाया। मैं 'कपूर' के पास, जहाँ ये टाईप सीखती थी. ...पहुंच जाता था।

कपूर का भाई 'विलायती' मेरे साथ पढ़ा था। इस आस से कि इस लड़की से कोई गप-शप हो जाए....मैं वहाँ जाता। पर ललिता ने कभी सिर उठाकर देखा ही नहीं।

फिर हम लोग इनके घर गए। वहाँ इनके पिताजी 'श्री गिरधारी लाल तनेजा' से बातचीत करी। इनके पिताजी को बात जच गई। हमें तो पहले ही जच रही थी। लो जी....रिश्ता हो गया।

इतने में नौकर चाय लेकर आ गया। श्रीमती कपूर ने चाय कपों में

डाली और मुस्कुराते हुए बोली....

"लो....चा...पी लो....।"

श्रीमती कपूर उठकर चली गई। कपूर साहब उन्हें जाते हुए देखते रहे, प्यार से.... फिर बोले....

नई - नई सगाई हुई थी और सगाई के बाद ललिता रोज़ 11:30 बजे फोन करती थी। उन दिनों हमारा पी. पी. नम्बर ही होता था।

एक दिन मेरा दोस्त सहगल बोला...."उसके मामे का पुत्तर 'कालू' मिल नहीं रहा है, उसे देखने गुड़गांव जाना है....।"

हम लोग 9 बजे गुड़गांव के लिए निकल गए, ये सोचकर कि हम लोग 11:30 तक वापिस पहुँच जाएंगे। हम लोग स्पीड मारकर गुड़गांव पहुँचे, वहाँ की सड़के उन दिनों अच्छी नहीं थी। गांव में गए पर 'कालू' नहीं मिला। फटाफट वापिस हो लिए....।

वापसी में सहगल ने कहा कि...."मैं....स्कूटर चलाता हूँ....।"

मैंने उससे कहा भी कि तू तेज़ नहीं चला पाएगा। 11:30 तक फोन सुनने के लिए पहुँचना है।

सहगल बोला...."नहीं मैं....तेज़ चला लांगा....।"

और वो स्कूटर चलाने लगा। एक मोड़ पर स्कूटर तेज़ी से फिसला.... और सहगल कहीं....मैं कहीं...., और स्कूटर कहीं। स्कूटर का हैंडल भी टेढ़ा हो चुका था।

मैं उठा सहगल की ओर देखा....तो वो बोला...."मुझे कुछ दिखाई नी

दे रहा....।"

मैंने कहा...."यार मुझे दिखाई तो ठीक दे रहा है.... पर.... दर्द काफी हो रहा है....।"

ये मेरा 36वां Accident था। बड़ी मुश्किल से उठे और टेढ़े स्कूटर से ही वापिस चल पड़े। वापसी में बराबर इस बात का ध्यान लगा रहा कि ललिता का फोन आना है। पर अफ़सोस जब घर पहुंचा तो ललिता का फोन आ चुका था। यानि मैं....लेट हो चुका था।

इस Accident का जब ललिता को पता लगा तो वो मुझे देखने घर आई। उस समय के हिसाब से ये बहुत बड़ी बात थी कि कोई लड़की किसी का हाल-चाल पूछने आए।

जब मुझसे घर वालों ने पूछा कि...."शादी कित्थे करनी है....?"

तो मैंने कहा...."होटल (Hotel) से करनी है.... क्योंकि मेरी मार्किट की सारी पार्टीज़ (Parties) आएंगी....।"

तो मेरी शादी लाजपत नगर के 'मनोहर होटल' (Manohar Hotel) से हुई।

फिर एक ज़ोरदार ठहाका लगाकर सुनाते हैं कपूर साहब....

मेरी शादी में मैं....यानि दूल्हा, लेट हो गया था। उस दिन मेरा Payment Day था....तो मैं बाज़ार चला गया था Payment इक्कट्ठी करने के लिए।

मेहमान आ चुके थे लगभग सारे, बारात चलने को तैयार, घोड़ी आ

चुकी थी.... पर दूल्हा....गायब....।

वापिस आया, तो घरवालों ने पूछा....तो मैंने झेंपते हुए कहा था कि.... "मैं बाज़ार गया सी पेमेण्ट लेण....।"

हंसते हुए बोलते हैं कपूर साहब....फिर थोड़ा सा टिकने के बाद बताते हैं.... चेहरे पर गज़ब का इत्मीनान था। जब शादी हुई उस समय हमारे पास Lambreta का स्कूटर होता था। हम लोग कभी-कभी स्कूटर पर बैठकर कॉफी पीने भी जाते थे।

एक बार मेरी शादी से पहले मेरी जेब में पैसे नहीं थे, तो मैंने ललिता को पूछा कि तेरे पास कितने पैसे हैं....तो वो बोली कि....''मेरे पास पैसे कहाँ होते हैं....।''

मैंने कहा...."चल कोई गल नीं....मेरे कोल 4 आन्ने होंगे....असीं रोशनआरा पार्क चलदें आं....।"

हमने वहाँ पहुंचकर एक आन्ने के चने लिए और एक आन्ने की मूंगफली लेकर खाई। और वहाँ आधा-पौना घंटा बैठकर बातचीत की, गपशप मारी... फिर वापिस घर आ गए।

हममें कभी भी बनावटीपन या नकलीपन नहीं रहा। कुदरत ने हमें जैसा रखा हम वैसे रहे। हम दोनों में प्यार हमेशा एक सा रहा। वक़्त चाहे गरीबी का रहा हो.... या अमीरी का.... हम दोनों का साथ हमेशा-हमेशा एक जैसा बना रहा। भगवान् का बहुत आशीर्वाद रहा हम पर।

प्रभु के आशीर्वाद के रूप में ही मेरे घर पहली संतान मेरा बेटा 'राजू' (राजीव कपूर) पैदा हुआ। 2 जनवरी, 1972 को राजू, सुभाष नगर वाले

मकान में पैदा हुआ था.... जो हमने 160 रूपये प्रति महीना के किराए पर लिया हुआ था।

राजू के पैदा होने से पहले ही पण्डितों ने बोल दिया था कि बेटा सौभाग्यवान होगा और इस बार पण्डितों की ये बात सच निकली।

कपूर साहब की आँखों में ऐसी चमक थी, "मानों ज़िन्दगी की सबसे हसीन बात हो गई, मेरी आज खुद से मुलाक़ात हो गई।"

हमारे दिन बदलने लगे थे। इसी साल 29 मई, 1973 को हमने पहली गाड़ी खरीदी जिसका नम्बर था UPT-1990 जो कि Ambassador गाड़ी थी। उस समय मैंने ये गाड़ी 3000 रूपये ब्लैक में ली थी।

राजू अपने साथ सम्पन्नता लेकर आया था। सन् 1971 में जब 'हिन्दुस्तान - पाकिस्तान युद्ध' चल रहा था....

फिर कुछ याद करते हुए कपूर साहब ने बात आगे बढ़ाई....

तारीख तो याद नहीं पर जिस रात 'इन्दिरा गाँधी' ने रेडियो पर राष्ट्र को सम्बोधित किया था। उन दिनों रात को Black-out हुआ करता था, से अगली सुबह मैं D.D.A. की Auction में चला गया और A3/88 जगह 18,800 रूपये में खरीदी, बोली में जिसकी कीमत पहले 1 लाख 60 हज़ार रूपये थी। लेकिन युद्ध के चलते प्रोपर्टी के दाम नीचे आ गये थे।

उस दिन भी Auction में पहला प्लाट 1 लाख 43 हज़ार में बिका। हम भी ऊँची बोली लगाने लगे थे पर वहाँ बैठे एक बुज़ुर्ग ने टोका कि.....

"क्या कर रहे हो....आराम से बैठो.... तुसी बी (20) आदमी हो.... तो

प्लॉट (30) हैगे। आराम नाल बै जाओ....।"

वाकई, हम आराम से बैठ गए और बाद में 18,800 में प्लॉट खरीदा। इधर मकान लिया और उधर चार दिन बाद ही हमनें 'Kapson Traders' दुकान ले ली 'कश्मीरी गेट' में । ये दुकान भी हमने 18,800 रूपये में ली। एक बार फिर हमारे दो काम इक्कट्ठे सिद्ध हुए।

ईश्वर के आशीर्वाद से 28 अप्रैल 1974 में हमारे घर बिटिया ने जन्म लिया, मेरी बेटी 'अनामिका'। जिसे मैं प्यार से 'नानो' कहता हूं।

नानो के पैदा होने के बाद प्रभु की कृपा बरसी। इसके पैदा होने के बाद पता नीं कितनी गाड़ियां खरीदी, कितनी जायदाद वगैरहा ली।

'नानो'.... साक्षात 'लक्ष्मी' बनकर हमारे घर आई।

जब नानो 3 साल की थी तो हम Hotel 'Yorks' जाते थे तब नानो कहती....

"डैडी.... ये कोई होटल है....? ऐसे होटल में मुझे मत लाया करो....।"

तब हम लोग Hotel 'Ashoka' या 'Oberoi' जाया करते थे। उस वक़्त दिल्ली में दो ही 'पाँच सितारा होटल' हुआ करते थे।

फिर एकदम उन्हें जैसे कुछ याद आया....

पहली बार मैं किसी पाँच सितारा होटल में तब गया था.... जब 'चमन' बी. ए. में पास हुआ था। तब हम 500 रूपये जेब में डाल कर होटल 'अशोका' गए, खाना खाने के लिए। तब हमने पहली बार इतना बढ़िया Buffet खाया। जिसमें 98 तरह की Dishes थी और जिसमें 7 तरह की

ठण्डी Fish थी....। खास तरह की समुद्री मछली....। खूब खाया और बिल आया 25 रूपये कुछ पैसे....। फिर तो आदत सी पड़ गई पांच सितारा होटल में जाने की।

जगदीश भाई की शादी की सालगिरह पर भी हम होटल 'अशोका' गए थे। मैं, ललिता, भाई साहब और भरजाई जी....।

हम चार लोगों ने पहले सूप पिया फिर स्नेक्स (Snacks) लिए.... और फिर खाना खाया। बिल आया कुल 68 रूपये। मैंने 12 रूपये टिप वेटर को दी और दस - दस रूपये बख्शीश स्लूट (Salute) मारने वाले दरबानों को अलग से।

उस वक़्त के.... 10 - 10 रूपये की बख्शीश के Salute, आज तक पड़ते हैं। वो सब लोग तब से आज तक पहचानते हैं, क्योंकि तब दस रूपये की बहुत कीमत होती थी।

जब हमारी 'Delhi Scooter Traders Association' बनी तो उसकी मीटिंग होनी थी।

जब मुझसे पूछा गया कि...."मीटिंग कहाँ करनी है....।" तो मैंने अशोका होटल का नाम लिया।

मीटिंग में आने वाले सदस्य होटल आए तो होटल देखकर हैरान हो गए। क्योंकि लगभग सभी ने पहली बार पाँच सितारा होटल देखा था।

जब मीटिंग खत्म हुई तो बिल आया था 7000 रूपये के आस - पास....। जो मैंने अदा किया था।

तकरीबन 110 लोग मीटिंग में आए थे। उन सबके ठहरने.... खाने-पीने, मीटिंग के हॉल वगैरहा का बिल आया सिर्फ 7000 रूपये। सब लोग इस बात को आज तक याद करते हैं।

"सन् 1976 में मैंने 'हैलमेट' बनाना शुरू कर दिया....।"

कपूर साहब बोले....उन्हें सन् और तारीखें ऐसे याद है जैसे कल ही की बात हो। हंसते हुए कपूर साहब अपने आप बोल उठते हैं....

"सब कल दियां गलां लग दियां ने....।"

मैं फिर हैरान....

"इन्सान को वक़्त कभी नहीं भूलता....।"

मैं महसूस कर रहा था कि यादों का अलाव पूरी तरह से तप रहा था अब....।

"पुत्तर....जाणदा ए कि मैं सफेद कपड़े क्यों पांदा....।"

मुझे याद आया कि मुलाकातों के लम्बे सिलसिलों में मैंने कपूर साहब को हमेशा सफेद कुरता-पजामा और शॉल में देखा है। हँसते हुए कपूर साहब बताते हैं....

"पुत्तर....जद हैलमेट बनाना शुरू कित्ता... मेरे कोल कुल दो कमीज़ां होंदिया सन, एक नीली तां.... दुजी लाल जेई....।"

अब मैं एक दिन छोड़कर कमीज़ बदलता ही था।

पुत्तर मान आज मैंनें.... नीली कमीज़ डाली है और कोई मुझसे मिलने आता है....अब वही आदमी तीजे (तीसरे) दिन आएगा तो....कमीज़ नीली ही

मिलेगी।

किसी ने कह दित्ता.... "भाषी तेरे कोल एको ही कमीज है....।"

मुझे बड़ी शर्म आई। बस उसी दिन से तय कर लिया कि अब मैं सफेद कपड़े ही डालूंगा। "फिर किसी नूं कि पता चलेगा कि मेरे कोल इक कमीज़ हैगी.... या दो.... या तीन....।"

एक ज़ोरदार कहकहा लगाकर कपूर साहब बोलते हैं....

"तभी से यह मेरी मज़बूरी.... मेरी आदत बन गई....।"

धीरे-धीरे हैलमेट का काम चल निकला। सन् 1976 में ही जब 'Steel Bird' का पहला हैलमेट बना तो हमने 'Steel Bird' का विज्ञापन दूरदर्शन पर शुरू कर दिया। उस समय केवल एक ही टी. वी. चैनल होता था..। दूरदर्शन के दो ही कार्यक्रम होते थे। हर बुधवार 'चित्रहार' और हर एतवार 'फिल्म' बस....।

लोग इन दो कार्यक्रमों के इतने दीवाने होते थे कि घण्टा पहले ही टी. वी. के सामने बैठ जाते थे। उस समय टी. वी. पर कुछ आठ विज्ञापन आते थे। जिसमें 'Vicco-Vajradanti', 'S. Kumar', 'Topaz Blade', 'Harrison Taala' वगैरहा और Steel Bird....।

बच्चे-बच्चे को हमारे उस विज्ञापन का गाना याद होता था। वो गाना था....

"अजी ओ.... स्कूटर वालो.... ओ मोटर साईकिल वालो, सुनो.... तुम इक बात ज़रूरी.... सुरक्षा होगी पूरी.... अगर तुम पहनों हैलमेट कौन सा....?

Steel Bird.... Steel Bird.... Helmet।

ये लाईनें कपूर साहब ने हल्का-हल्का गाकर सुनाई और फिर बोले....

"जब इन लाईनों को बच्चों के मुँह से सुनता तो मन खुश हो जाता कि मेरी Add., क्लिक (Click) हो रही है।"

दूरदर्शन का पहला प्राईवेट कार्यक्रम भी मेरा ही था। भारतीय टेलीविजन का पहला प्राईवेट कार्यक्रम....'जरा संभल के, जो कि शाम 7:45 से 8:00 बजे तक आता है। इस प्रोग्राम (Programme) में मैंने कई लोगों को मौका दिया था। जैसे कि 'सतीश बब्बर' जिसकी शक्ल 'धर्मेन्द्र' से बहुत मिलती थी....

मैंने पूछा.... कपूर साहब इसका मतलब कारोबार तरक्की पर था।

"हाँ पुत्तर ....। रब दी मेहर सी....।" नवाबगंज..... गली जमीर वाली में फिल्टर की फैक्टरी अच्छी चल पड़ी। अब फैक्टरी की जगह कम पड़ी तो मैंने जगह के लिए यहाँ-वहाँ हाथ पैर मारे तो मुझे 'झण्डेवाला' में एक मयानी मिल गई। मयानी 200रू प्रति महीना के किराए पर ले ली। मयानी ले तो ली पर वो तो मुझे जहाज जैसी लगी.....।

"क्योंकि दस फुट गहरी.... और त्री (30), बत्ती (32), फुट लम्बी....ते सानू ओ लगे जहाज वरगी....असी सोचिए कि असां इत्थे करांगा की....।"

मैंने वहाँ का 6 महीने का किराया दे कर, चार महीने तो वो जगह

खाली रखी कि.... मैं वहाँ करूँगा क्या.... ?

जब जगह की कमी हुई तो हम लोग वहाँ आ गए। अब वहाँ काम शुरू कर दिया....

"रब ने मेहर कित्ती तां....इक दिन ओ जगह भी छोटी पै गई....।"

भगवान का शुक्रिया अदा करते हुए कपूर साहब बताते हैं.....

वो जगह भी एक दिन छोटी पड़ गई। तो वहीं पर ऊपर की मंजिल में 'स्वतंत्र पार्टी' का ऑफिस होता था। तब 'कांग्रेस' के अलावा 'स्वतंत्र पार्टी' होती थी।

"तुसी तां स्वतंत्र पार्टी दा नां बी नी सुनआ होगा.....।"

मैनें हाँ....में सिर हिलाया और बोला....जी हाँ....नहीं सुना। कपूर साहब बोले.....

उस समय B.J.P. थी नहीं....और स्वतंत्र पार्टी का काफी प्रभाव होता था। तो उनके पार्टी ऑफिस में दो कमरे होते थे और वहाँ ऑफिस में 'मेवा राम आर्य' चपरासी होता था।

मेवा राम ने मुझे बताया...."आपको जगह शॉर्ट पड़ रही है न.... हमारी पार्टी एक कमरा रख कर बाकि देना चाहती है।"

वो जगह बिजली पहलवान की थी। मैंने बिजली पहलवान के सैक्रेटरी 'राम मूर्ति' से इस बारे में बात की.....उसने कहा कि..... "शुक्र है....।" हम आप को ये जगह किराए पर दे देते हैं।

क्योंकि स्वतन्त्र पार्टी वाले न तो जगह छोड़ते थे....न किराया देते थे। और उन्हें कुछ बोला भी नहीं जा सकता था। क्योंकि.... "पॉलिटिकल

लोगां नू कुछ बोल वी ते नी सकदे....।"

राम मूर्ति बोला....."वाह - वाह अगर ये बात बनती है....तो ठीक है.... मैं पहले ही रसीद काट देता हूँ....।"

उसे पहले पता था कि...."रसीद कटन नाल दो रूपये तां आणगे ई.."

और उसने रसीद काट दी। अब 250 रूपये प्रति महीना पर वो जगह भी किराए पर ले ली। भगवान् की कृपा से काम और बढ़ता गया। काम इतना बढ़ गया कि वो जगह भी कम लगने लगी।

नीचे 'Pearl Yamaha' वाले होते थे ।

India में पहला मोपेड (Moped) ' Sound Jaffery' लाया था। और मोटर - साईकिल (Motor-Cycle) लेकर आया था Pearl-Yamaha....। ये 'Pearl-Wool' लुधियाना वाले थे, जो जापान की 'Yamaha' से Collaboration कर के 'Pearl Yamaha Motor-Cycle'.... लाए थे।

फिर ठण्डी गहरी साँस भर कर बताते हैं....

"पुत्तर....उस वेले साडा देश बड़ा गरीब हौंदा सी....उस वेले लोग Pearl-Yamaha मोटर साईकिल afford नीं कर सकदे सन.... ।"

Pearl Yamaha का रेट लगभग 2000 रूपये होता था। इसलिए ये कम्पनी फेल (Fail) हो गई थी। अब वो जगह बेचना चाहते थे।

मैंने बिजली पहलवान के सैक्रेटरी 'राम मूर्ति' से बात की तो वो बोला ...."लै....लै....।"

तो मैंने पूछा कि.... "क्या.... System रहेगा....।"

तो वो बोला...."हमने 75,000 रूपये पगड़ी ली थी Pearl-Yamaha से, वो वापिस करनी होगी....और....50 एक हजार.... बिजली पहलवान पगड़ी मांगेगा। तेरे पास अगर सवा लाख (1.25) है....तांई गल....करी....।"

मैं उन्हु केया...सवा लख....दे दवांगा....।"

मैंने वो 300 गज जगह ले ली जिसकी हाईट (Height) 14 फीट थी....और उसका किराया 1,200 रूपये महीना था। बाद में वो जगह भी कम पड़ी तो उसी के सामने वाली Basement जो 300 गज था वो भी ले लिया।

कपूर साहब खुश हो कर बताते जाते हैं....

"रब दी मेहरबानी नाल सानु ऐ जगह वी कम पै गई....।"

तो मैंने कीर्तिनगर में 51, 52, 53, न. के तीन प्लॉट, 150 गज के लिए। जो मिलाकर 450 गज बनते थे। ये प्लॉट 1 लाख, 1 हजार रूपये के लिए थे।

कुछ समय बाद जब ये लगा कि ये जगह भी कम पड़ जाएगी तो मैंने ये प्लॉट D.D.A. (Delhi Development Authority) को 5% कम पैसे ले कर वापिस कर दिए। और उसकी जगह मायापुरी में 57, 58 नं. प्लॉट लिए।

Auction में पहला प्लॉट लिया....1 लाख 41 हज़ार की बोली में।

1 लाख 41 हजार की बोली में लिया 57 नं. प्लॉट। जब मैंने 57 नं. प्लॉट ले लिया तो मेरा दोस्त 'कुकड़ी' बोला....

"तू 58 नं. प्लॉट नहीं ले सकेगा....।"

क्योंकि 59 नं. प्लॉट वाला भी....जो एक 'सरदार' जी थे....चाहते थे कि वो 58 नं. प्लॉट ले ताकि उसका जोड़ा हो जाए....।

मैंने कहा...."लेणा तां.... रेटां नाल ही है न.... बोली विच.....कोई गल नीं देख लवांगे....।"

अब बोली शुरू हुई।

सरदार जी बोले...."1 लाख 40 हजार....।"

तो मैं नीलामी के लिए कुकड़ी को उंगली से ईशारा करता और वो हर बोली के साथ हजार रूपया बढ़ाता जाता, मेरे इशारे पर कुकड़ी बोला..... "1 लाख 41 हजार....।"

बोली 1 लाख 50 हजार हुई तो मैंने उंगली उठाई कुकड़ी बोला..... "1 लाख 51 हजार..।"

अब बोली 1 लाख 60 हजार, मेरी उंगली उठी कुकड़ी बोला 1 लाख 61 हज़ार। इधर बोली 1 लाख 70 हजार, उंगली उठते ही कुकड़ी बोला 1 लाख 71 हजार। बढ़ते-बढ़ते बोली पहुँची...."दो लाख....।" फिर बढ़ते-बढ़ते 2 लाख 10 हजार...

उधर सरदार जी 2 लाख 10 हजार बोले....इधर मेरी उंगली के इशारे पर कुकड़ी ने 2 लाख 11 हजार कर दिया....

अब तो वो सरदार जी उठ कर चल दिए। बोली लगाने वाले ने सरदार जी को आवाज़ मार कर कहा था....

"बस सरदार जी....तुसीं तां कै रे सी.... मैं लैणा ऐं....।"

कहां एक प्लॉट मैंने 1 लाख 41 हजार में लिया.....वहीं दूसरा प्लॉट 2 लाख 11 हजार में लिया। 70,000 रूपये फालतू दिया सिर्फ एक टस्सल के कारण। या यूँ कहिए....अपना आत्मसम्मान बचाने के लिए। फिर ये बात तो सिर्फ 70 हजार की थी।

घर आकर मैंने पापा जी से कहा कि....."पापा जी.... मैं टस्सल दे कारण प्लॉट 70,000 फालतू दे के लेयाया हां....।"

पापा जी हँस के बोले...."कोई गल नी.....पुत.....चंगा कित्ता.....लयायां.....नां.....।"

मैं केहा....."हाँजी....।"

अब जब कब्ज़ा लिया तो दोनो प्लॉट निकले 500 गज ।

इधर D.D.A. वाले कहें कि...."बाकि का पैसा वापिस करा लो....।"

मैं केहा...."नहीं....सानु तां 800 गज ही चाईदा....।"

हमने सोचा चलो कोई बात नहीं कोई बड़ी जगह देखते हैं।

अचानक कपूर साहब के चेहरे पर हल्की सी उदासी आ जाती है। इससे पहले की मैं कुछ पूछता कपूर साहब की गहराई आवाज़ सुनाई दी....

1978 में मई 9 तारीख को पापा जी का शरीर शांत हो गया।

मुझे आज तक ये महसूस नहीं हुआ कि पापा जी मेरे साथ नहीं है। बेशक वो शारीरिक रूप से जा चुके हैं,पर हमेशा मेरे साथ हैं....।

अगर कोई आज भी ये कहे कि....पापा जी नहीं रहे.... तो शायद मुझे...

. गुस्सा.... आ जाए....।

पापा जी का शरीर शांत होने पार मैंने पापा जी के शांत शरीर के पास बैठकर ये निश्चय किया था कि.... मैं कभी सिगरेट नहीं पिऊँगा।

"अपने पापा जी दे नश्वर शरीर वास्ते.... मेरी ऐ श्रद्धांजलि सी....।"

ये बोलते-बताते हुए कपूर साहब के चेहरे पर गज़ब का नूर सा दिखा....जिसे शब्दो में व्यक्त करना मुश्किल है। कपूर साहब ने आवाज़ मार कर पानी का गिलास मंगवाया और एक घूँट पानी का भरने के बाद मुस्कुराते हुए बोलते हैं....

"दयाल पुत्तर....मैं तैंनु दस्सया सी कि मैं बिजली पहलवान तों झण्डे वाला च.....होर....जगह लैं लई सी.....। ओ Pearl-Yamaha वाली....।"

वहां हमारा काम अच्छा चल निकला था। एक दिन बिजली पहलवान का फोन आया कि.....

"सुभाष....ए जगह खाली कर दे....ते मार्किट दा, पगड़ी दा....जेड़ा रेट (Rate) है....ओ लै लै.... मैं ओथे Export दा कम करना है.....।"

उस समय Govt. ने स्कीम निकाली थी कि Export पर 35% Incentive मिलेगा। उसको शौक चढ़ा कि Export करना है। तो उसने मुझे फोन कर दिया कि जगह खाली कर दे।

मैंने कहा.... "मैं जगह खाली नहीं करूँगा....।"

वो बोला...."मैंने आज तक 'न' सुनी नहीं....।"

मैंने साफ मना कर दिया। मैंने कहा कि...."तु कै रेया के....तैं न नी

सुनी....तां मैं वी न कर बैठेआँ....।"

उस समय उसका बड़ा दबदबा था। उस समय अगर हिन्दुस्तान में अगर किसी का दबदबा था तो वो बिजली पहलवान था। उसके आदमियों ने मेरा तरीका देखा कि.... मैं कब, कहाँ आता - जाता हूँ। कब - कब मेरे साथ कितने आदमी होते हैं।

कपूर साहब बड़ी शांति से बात बताते जा रहे थे....

एक दिन मैं सुबह 11.00 - 11:30 बजे office पहुँचा तो उसके आदमी आ गए और बोले... "बिजली पहलवान....साब....ने बुलाया है....।"

मैंने ज़ोर से आवाज़ मार कर कहा कि.... "मुझे पहलवान साब ने बुलाया है...।"

और मैं office के बाहर से ही बैग हाथ में लिए गाड़ी में जा बैठा ।

उस समय Ambassador गाड़ी ही होती थी। गाड़ी में 4 आदमी थे। उन्होनें मुझे पिछली सीट पर बिठाया....एक इधर....बीच में.... मैं....दूसरा उधर....। बाकि के दो अगली सीट पर....।

रास्ते में वो चुपचाप बैठ गए। मैंने कहा.... "मैं चल तो रहा हूँ....गपशप मारते हुए चलते हैं....।"

उन्हा चो इक बंदा, मेरे कोल कदी - कदी किराया लैण औंदा सी वो बोला..... "बाऊ...तू बोल तां.....ठीक रेया है....पर असीं हंस नी सकदे...। चल फेर वी तेरा....टैम कट जाए....राह विच मैं तैनूं इक गल सुणांदां आं....।"

वो गुण्डा बोला.....ऐसा है कि एक बार अकबर बादशाह का दिल

किया कि सैर की जाए....साथ में बीरबल भी था....।

रास्ते में कहीं बैंगन लगे थे। अकबर ने बीरबल से पूछा.... "ये क्या चीज़ है....?"

बीरबल बोला..... महाराज....ये बैंगन है।

अकबर बोला.... ये तो बहुत सुंदर है।

बीरबल ने जवाब दिया....हाँ महाराज....कितना बढ़िया रंग है इसका, कितना सुंदर है, आहा....ऊपर कितनी बढ़िया कलगी लगी है।

बीरबल ने बैंगन की दस तारीफें कर दी।

अकबर ने पूछा....बीरबल ये.....किस काम आता है....?

बीरबल ने जवाब दिया....खाने के काम आता है....महाराज....।

अब अकबर ने आदेश दिया कि राज महल में रोज़ इसे खाने में परोसा जाए। अब रोज बैंगन की सब्ज़ी बनने लग गई । चार-छः दिन बाद अकबर बैंगन खा-खा कर ऊब गया। और सैर के वक़्त दोबारा बैंगन दिखने पर बोला....बीरबल ये बैंगन बड़ी नामुराद चीज़ है।

बीरबल बोला....हाँ....महाराज....ये बहुत खराब है.....बेगुण होता.....है।

बीरबल ने लगे हाथ बैंगन की दस बुराईयाँ गिना दीं....महाराज इसका न कोई रंग....न कोई ढंग....।

अब अकबर बोला....बीरबल.....उस दिन तो....तुम बैंगन....की खूब खूबियां गिना रहे थे?

बीरबल ने तपाक से जवाब दिया....महाराज पैसा आप देते हैं....बैंगन नहीं....।

कपूर साहब की बात सुनकर मैं भी खिल खिला कर हँसा। और कपूर साहब से पूछा कि आगे क्या हुआ....क्योंकि ये घटना मुझे किसी Suspense फिल्म की तरह लग रही थी। कपूर साहब भी हँसते हुए आगे बताते हैं....

वो गुंडा बोला....."भई मैं तुम्हें जानता हूँ....पर नहीं भी जानता.... क्योंकि.... मुझे पैसे तो पहलवान साब....ने देने हैं....तुमने नहीं....। इसलिए मैं तुम्हारे साथ हंस नहीं सकता....उन्होंने कहा है कि....तुम्हें खींच कर ले आओ... तो ले जाना पड़ेगा ।"

मैंने कहा....."ठीक....है।"

उस समय Rivoli के ऊपर बिजली पहलवान का Office होता था। वो चारों मुझे पकड़ कर ऊपर ले गए। ऊपर जाकर देखा कि कमरे में चार-छः गुण्डे और बैठे थे। और पहलवान साहब एक बहुत लम्बी-चौड़ी सोने की कुर्सी पर बैठे थे। पूरा सिंहासन था शुद्ध सोने से बना हुआ। वो सिंहासन पर शाही ठाठ से बैठा था। गले में सोने की मोटी सी चेन के साथ 'B' अक्षर लटक रहा था। जो कि Diamond से बना हुआ था।

वो बोला....."सुभाष तू बोलता है कि जगह नी दैणी....हुण दस....जगह देणी....?"

मैंने कहा कि....."मेरा तां अज भी....ए....ही जवाब ए....नी देणी....।"

बोलने भर की देर थी कि वहां बैठे गुण्डे उठकर मेरे आस-पास आकर मुझे घेर कर बैठ गए ।

मैंने कहा कि.... "पहलवान साब....आपके ये गुण्डे....ज़्यादा से ज़्यादा क्या कर लेंगे.....?" मुझे मार ही देंगे न....?" इससे ज़्यादा कुछ नहीं कर सकते। मैं हिन्दू हूं....हम मरते नहीं, प्रकट होते हैं। ये बात समझ लें।

मेरे चार भाई हैं....जो मेरे पीछे बैठे हैं। उन्हें पता है कि मुझे बिजली पहलवान ले गया है। ये भी हो सकता है कि मेरे मरने के बाद बदला लेने के लिए उन चारो में से कोई तुम्हे जान से मार दे।

अब बिजली पहलवान ने सबको बाहर जाने के लिए कहा। सब गुण्डे बाहर चले गए। गुण्डों के बाहर जाने के बाद बिजली पहलवान बोला, "सुभाष मेरे सामने आज तक कोई इतनी बड़ी बात नहीं बोल सका है, तू पहला आदमी है जो मेरे साथ मेरे घर में इस तरीके से बात कर रहा है। मैं तेरी हिम्मत की दाद देता हूं।"

कमरे में 'जवाहर लाल नेहरू' और बिजली पहलवान के पिता 'सांई दास बिजली' की बहुत सुन्दर तस्वीर लगी थी। उसने तस्वीर पर हाथ रख दिया और बोला...."आज से तू मेरा भाई है।"

पुत्तर उसने सच में अपनी कसम निभाई..... ता उम्र यानि....जब तक वो जिंदा रहा।

अब मैंने कहा कि....."तू भाई है तो सब कुछ तेरा.....।"

बिजली पहलवान बोला...."तूने जितने पैसे लेने है.....ले...ले...पर वो..... जगह दे दें....।"

मैंने कहा...."देख....व्यापारी बन कर बात करेगा....तो कुछ नहीं दूंगा

पर भाई बन कर बोलता है....तो जगह की तो बात ही क्या....

चाहे तो मेरा घर भी ले लो....वो भी तेरा....।" ठीक है....भाई के नाते वो जगह तेरी....।

और मैंने बिना कोई पैसा लिए वो जगह बिजली पहलवान को दे दी।

बिजली पहलवान को लगा कि मैंने उस पर कोई अहसान कर दिया है।

क्योंकि वो उस जगह के 5 लाख रूपये खुद ऑफर कर चुका था...।

5 लाख रूपये उस समय बहुत ही बड़ी रकम थी। इतनी बड़ी की 5 लाख में वैसी 2 दुकानें आ जाती।

पहलवान साहब कहने को गुण्डे थे....पर उसूल के एक दम पक्के। उन्होंने....सारी उम्र भाईचारा निभाया और ज़िन्दगी में हर मुश्किल में मेरा साथ दिया। बहुत ज़िंदादिल और नेक इंसान थे 'बिजली पहलवान साहब'।

दोस्ती के रंग में डूबे कपूर साहब ने ये बताया था। अब फिर से पानी का घूंट भरा....। बहुत चाव से आगे बताते हैं कपूर साहब....

सन् 1979 तक काम काफी अच्छा हो चुका था। तब तकरीबन पौने सात लाख रूपये इक्कट्ठे हो चुके थे। सोचा कि चलो कि कोई बड़ी जगह खरीदी जाए। जब बात चली.....A-50 खरीदने की....तो कीमत मांगी गई 7 लाख 50 हजार रूपये। 'हुण साढ़े कोल घट पैसे सन, असी नीं लीत्ती.....।' गल आई – गई हो गई।

तकरीबन साल बाद पैसे इक्कट्ठे हो गए 'तां असी दलालां दे मार्फत फिर गल कित्ती....।'

तो दलालों ने बताया कि मायापुरी में सिर्फ प्लॉट A-50 ही मिल रहा है। पर अब उसकी कीमत 8.50 लाख रूपये हो चुकी थी। मैंने सोचा कि साल भर 7 लाख रूपये बैंक मे रखते तो भी इतने ही हो जाते। मैंने वो ज़मीन खरीद डाली।

कपूर साहब ने पानी का एक और घूंट भरा और बोलने लगे....

ये ज़मीन हमने कोहलियों (Kohli) से ली थी। जिनके उस समय 'Host' और 'Marina' Hotel होते थे। उनका एक जीजा Deal के वक़्त बिदक भी गया था। उसने कई जगह चिट्ठियां लिख दीं। अखबारों में दे डाला कि उसने अपने सालों को Power of Attorney नहीं दी है। ये जगह मेरी है। D.D.A. को भी लिख डाला।

मेरा ज़मीन का मुकद्दमा भी चल रहा था क्योंकि उस समय 'Urban Land Sealing Act' आ गया था। इस Act के आने के बाद 500 गज से ज़्यादा का प्लॉट नहीं ले सकते थे जबकि पहले ऐसा नहीं था। मेरे पास A-50 ज़मीन की रजिस्ट्री एक एकड़ की थी, जिसका मुकद्दमा (Case) High-Court में चल रहा था ।

उस समय 1100 गज ज़मीन का रेट 8 लाख रूपये चल रहा था। मैंने ये सोच कर Risk लिया था कि 5000 गज नहीं मिलेगी तो मेरे पास 500 गज तो है ही।

मै Risk लेने से ज़िन्दगी में नही डरा....। मैं जब Flash खेलता था तो कभी पत्ते नहीं देखता था। मुझे शुरू से Risk लेने की आदत थी।

इस ज़मीन की सारी Deal दलाल 'दीवान साहब' के द्वारा हुई थी।

इसी Deal दे दौरान साडी....दोस्ती होई सी, ते ए दोस्ती सारी उम्र रही।

पानी का एक और घूंट भरा.....कपूर साहब ने.....और उसे आराम से पीने के बाद बोले....।

सन् 1980 तक हमारा काम काफी अच्छा चल पड़ा। हमारे दो काम चल रहे थे एक Filter का.....और Helmet का। अब हमने सोचा हम चार भाईयों में से जगदीश का तो अपना काम है ही 'शीशे' का। अब बाकि बचे हम तीन भाई मैं....अशोक और रमेश। तब हमने तय किया कि हमें एक काम और शुरू करना है।

हमने Rubber-Parts का काम शुरू कर दिया। उस समय Rubber-Parts में A-one Company का बहुत नाम था। A-one वाले ने हमारे Filter बनाने शुरू कर दिए तो, हमने भी Rubber-Parts शुरू कर दिया। और Rubber-Parts शुरू करने से पहले मैं A-One के मालिक 'सरदारी लाल' से आशीर्वाद लेने गया और उन्हें बोला....

"मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं तरक्की करूँ....।"

सरदारी लाल ने मुझे तहेदिल से आशीर्वाद दिया।

उनका बेटा 'सतीश बब्बर' जिसकी शक्ल धमेन्द्र से मिलती है।

बिल्कुल धर्मेन्द्र जैसा दिखता है वो....। उसको मैंने India के पहले Private-Serial....'ज़रा सम्भल के' में चांस (Chance) दिया था। उसने Steel-Bird की Advertisement भी की थी। इस बात को लेकर उनके घर में झगड़ा हुआ था कि...."तू हमारे Competitor की Advertisement में काम नहीं करेगा... ।"

तो सतीश बब्बर का जवाब था कि...." Steel-Bird वालों का गुर्दा देखो.....वो भी तो.....Competitor होते हुए भी मुझे अपनी Add के लिए बुला रहे है...।"

सतीश बब्बर बोला कि...."मैं ये...'Advertisement'...और Serial'...जरूर करूँगा ।"

इधर मैं कपूर साहब की बात सुनकर हैरान हो गया कि वो काम शुरू करने से पहले अपने प्रतिद्धंदी से आशीर्वाद लेने गए।

ये भी तो 'माधव' के रूपों में से एक है । फिर उनकी बात सुनने में मग्न हो गया.....वो बता रहे थे.....

"पुत्तर....तां पिछले 40 सालां तों Rubber-Parts दे King A-One वालेयां ने....साडे....Filter बनान शुरू करते सी....तां असी वी Rubber-Parts शुरू कर दित्ता सी....।"

"A-One वाले 600 Items बनाते थे....मैंने....56 Items को बनाया जो.....उसकी रीढ़ की हड्डी थी।" जिनमें सबसे ज़्यादा Turn-over और सबसे ज़्यादा कमाई थी।

मैंने तीन साल में ही Rubber-Parts में इतना जबरदस्त काम किया कि A-One को मार्किट से तकरीबन बाहर ही कर दिया।

हमारी सोच ये थी कि कभी अगर हम तीन भाई अलग हुए तो मैं.... अशोक और रमेश एक – एक Item ले कर अलग हो जाएँगे।

"ऐ सारी सोच ते....कम करण दी ताकत.....रब....आपेई दें दा ऐं।"

कपूर साहब ने पानी का हल्का सा घूंट भरा और आगे बताते हैं....

उधर मेरी A-50 मायापुरी वाली ज़मीन जिसका Case High-court में चल रहा था....उसकी Time-Extension....13 Dec. 1980 तक मिली हुई थी, मुझे उसको बढ़वाना था।13 Dec. के लिए डेढ़ महीने का अर्सा बचा था।

मैंने 'दीवान साहब' को बुलाकर कहा कि...."इस ज़मीन की Time-Extension को बढ़वाना है।"

तो दीवान साहब ने कहा कि...."इसका Case, High-Court में, तुम और D.D.A.....भुगत रहे हो । किसी हाल में कोई Extension नहीं देगा....।"

मैंने कहा कि...."यार कोई बंदा ढूंढ.....कई बारी....कई बंदे Out of the way कम कर छडते ने....।"

उने केया...."कोशिश कर वेख दां....।"

दीवान साहब ने 25,000 रूपये में किसी बंदे से बात की। उस

आदमी की तनख़्वाह 200 रूपये महीना होती थी। वो बंदा ये सोच कर काम करने का Risk लेने को तैयार हो गया कि कल को नौकरी चली भी गई तो.. 500 रूपये महीने के ब्याज से भी काम चल जाएगा। मेरी ज़िन्दगी चल जाएगी।

जो काम 200 रूपये में भी हो सकता था उसके 25 हज़ार रूपये देने पड़े।

उस आदमी ने एक साल का Time-Extention करा दिया। उसने पूरे कागज़ बनवा दिए ।

Type करके पूरे System से कागज़ आ गए।

High-Court में Urban-land वाले बोल रहे हैं कि...."असी प्लॉट ते Visit किता....ते औथे....सिर्फ इक....छोटी जेई....(झोंपड़ी) है....ते सारा प्लॉट खाली है। ते खाली जगह....सरकार....दी है। 500 गज तुसी रखो....ते 4500 गज सरकार नूं दे वो....।"

अब मैं क्नॉट पलेस के Property Dealer 'गुप्ता' के पास गया। उसका काम था 'Sick-Unit' लेना। उसकी इस काम में Mastery थी। हर आदमी की अपनी - अपनी Speciality होती है।

"गुप्ता....मेरा बड़ा भक्त होंदा सी..मैंनू..आज बी..बड़ी याद आंदी है..।"

मैने 'गुप्ता' से कहा...."कि ये काम करना है....।"

उसने कहा....."ये काम....."जसवंत करवा सकता है...।"

जसवंत आर्किटेक्चरों का प्रिंसीपल है। I.T.O. दे सामणे आर्चिटैक्टां दी कोई University है....। ओ उन्हां दा Head है....। दिल्ली..... दा.....Town Planner.....भी ओ ही है.....। ओ हर बरीकी च जांदा है....। उदे नाल तेरे.... मीटिंग....करा देवां....।

'गुप्ता' ने 10 हज़ार रूपये में जसवंत से मीटिंग करा दी।

अब जसवंत बोला कि....Supreme Court भी....चले जाओ....तो तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा....पर शर्त ये है....सुभाष....कि ये Area -Construct करना पड़ेगा।"

मैंने कहा...."बना....देआंगा....।"

मैंने 17,600 फुट का शैड (Shed) तैयार करवा दिया। जसवंत वो शैड(Shed) देखकर बोला कि.....

"तेरा....शैड का 1600 गज का Front D.D.A. ले जायेगा।"

मैं केया....."क्यों....?"

वो बोला...."कोर्ट बोलेगा कि जो जगह खाली है वो D.D.A. को दे दो....।"

उस समय ज़मीन का रेट दो हज़ार प्रति गज पहुँच चुका था यानि 32 लाख की ज़मीन.....।

मैंने कहा....."न.....बाबा.....न....मैं नी दे सकदा।"

जसवंत बोला...'नी दे सकदा....ते जगह बनानी पड़ेगी....।" बाकि

बचे....40 दिन में अगर तू....इस 11000 फुट में Construction कर सकता है तो कर ले।"

उन्हीं दिनों अशोक अलग हो गया....। बहाव में बोलते जाते है..... कपूर साहब....।

उन दिनों.....हालत खराब हो गई.....ते....मैं....पैसे पैसे तों Tight....हो गया। "हुण कम किदां....करवाइये....?"

हल्का सा पानी का एक घूंट भरकर कपूर साहब बोले....

काम करवाना ज़रूरी था....। मैं जाकर 'Jeet-Auto-Mobiles' वाले के लड़के 'जीत' से मिला.....।

"मैं ओस नु....लाईफ....विच.....बोहत Co-operate कित्ता सी।"

उसके साथ मेरी अच्छी बनती थी।

मैं सीधा उसके पास गया। उस समय उसकी दुकान में बहोत भीड़ थी। वो ग्राहक छोड़ कर मेरे पास आया और पूछने लगा...."दसो....की गल....है....?"

मैंने कहा कि...."मुझे कुछ पैसे चाहिए....।"

जीत बोला...."किने....?"

मैं केया....."7 लाख"

तो वो बोला कि....."मैं एक दिन....छोड़ कर एक - एक दे दूंगा....।"

यानि हर तीसरे दिन 1 लाख रूपये....।

दूसरे ही दिन वो खुद 1 लाख रूपये ले कर आया और मुझे दे गया। दो

दिन बाद फिर आया और 1 लाख दे कर गया। मैंने 'दर्शन सिंह' ठेकेदार को बुला कर कहा कि..... "39 दिन में 11000 फुट....जगह बनानी है....।"

दर्शन सिंह ने कहा..... "देखो.....जी....दिन-रात ला....देआंगा पर एक घण्टे....के लिए भी काम रूका तो मुश्किल हो जाएगी....।"

मैं केया.... "नी.....रूकण.....दांगा....।"

इधर जब जीत तीसरा लाख लेकर आया तो मेरे पास 'कपूर' बैंक मैनेज़र बैठा था।

बैंक मैनेज़र 'कपूर' के पूछने पर मैंने बताया कि..... "ऐसे-ऐसे मुझे 7 लाख रूपये चाहिए और मुझे 11000 फुट की Construction करनी है।"

वो बोला कि..... "कोई बात नहीं मैं बैंक से दिलवाता हूं।" और उसने लोन दे दिया।

39 दिन में हमने बिल्डिंग तैयार कर दी।

39 वें दिन मैंने जसवंत को बुलाया और जसवंत बिल्डिंग देख कर बोला..... "तुझे अब दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती.....।"

इधर High-court में केस लगा हुआ था। मेरी वकील थी इस केस में 'Mrs. गुप्ता'....।

मैं उन्हु केया.... "ऐं....लवो...Time Extension....।" ते बिल्डिंग भी तैयार है....."मैं Completion Certificate लई Apply करना ऐ.....।"

वो बोली की..... "D.D.A. में Application दो....।"

मैंने Application लेकर दीवान को D.D.A. भेजा....तो वो वापिस आकर बोला.... "D.D.A. वाले Application ही नहीं ले रहे ।"

मैंने कारण पूछा तो दीवान साहब बोले...."Urban-Land-Sealing Act।"

अब जसवंत से पूछा तो वो बोला...."दोबारा....Try....करो....वो ले लेगें।"

हम दोबारा गए और वहाँ पहुँचकर 2 – 4 हजार रूपये के काम के लिए 25 हजार रूपये से शुरू हो कर 2 लाख तक की ऑफर कर दी।

हुण 'बाली' इक J.E. होंदा सी....दो लाख....सुण के बोलया कि.... "कोशिश करते हैं।"

अब कुछ दिन बाद बाली के पास गए तो उसने बैठने को भी नहीं पूछा और बोला कि – "ये काम नहीं हो सकता"

उसने फाइल के Left Side के तीन पेज दिखाए....उस पर कुछ लिखा था ।

वो बोला....."ऐसा कोई.....कानून....नीं बणया।"

हालांकि वो दो बड़े अफसरों को मिलाकर काम के लिए तैयार भी कर चुका था। और दो लाख का बंटवारा कैसे करेंगे ये भी तय हो गया था। पर बाली ने मना कर दिया और बोला....

भाई....हम तो तैयार हैं....चाहे तीनों की नौकरी....क्यूं न चली जाए....।

दो लाख रूपये की ऑफर कोई कम थोड़े ही है....पर कोई कानून ही नहीं बनता....।

तभी मुझे वहां मेरा दोस्त 'गर्ग' मिल गया और पूछने लगा कि.... "यहाँ कैसे...?"

मैंने बताया..... "बाली कोल....आया सी....।"

पर बाली डर के मारे बोला.... "नहीं.....नहीं....मुझसे मिलने.....नी आए। और इनका काम भी नहीं होने वाला....।"

गर्ग बोला..... "ये कपूर है....कपूर नू....बुलाया....या नीं बुलाया है....इदा कम कोई नी रोक सकदा....। कपूर आया तां....वक़्त जरूर पांएगा....।"

मैं किसी काम से बाहर गया और मेरे साथ गया जसवंत, बड़े अफसर जिसका....नाम 'चक्रवर्ती' था....के कमरे के बाहर मेरा इंतज़ार कर रहा था।

वो अफसर कहीं बाहर से आ रहा था, जसवंत को देखकर उसने उसके पैर छुए और कहा.... "सर.... अंदर चलिए....।"

तो जसवंत बोला.... "नहीं.... मुझे कपूर साहब यहाँ पर खड़ा करके गये हैं। मैं.... उनके साथ ही आऊँगा....।"

चक्रवर्ती बोला.... "सर.... आप अंदर चलिए जो कुछ भी मसला है हल करते हैं....।"

जसवंत बोला.... "नहीं, मैं कपूर साहब के साथ ही आऊँगा....।"

उतने में मैं वापिस आ गया और चक्रवर्ती बोला.... चलिए अंदर

चलिए..। कपूर साहब, जसवंत सर मेरे गुरू हैं....मैंने इनसे बहुत कुछ सीखा है।

हम लोग अंदर चले गए और अंदर जाकर सारी बात चक्रवर्ती को बताई। उसने बाली को फाइल लेकर बुलाया और फाइल देखकर पहले बोला.. ..."तुम लोग डफ्फर हो, तुम लोगों को काम करना ही नहीं आता.... और फिर फाइल कि Left Side के तीन पेजों को लाइनें मार कर काट दिया और वहाँ लिखा, 'Cutting Confirm'.....।"

साथ ही बाली को बोला.... "हैरानी की बात हैं, ये फाइल आजतक मेरे तक क्यों नहीं आई.....?"

उसने तुरन्त बाली को Dictation दी, Under Claw such and such.... जाओ अभी type करके Completion Order दो।

जिस काम के मैं दो लाख खर्चने को तैयार था.... उस पर दो रूपये भी नहीं लगे।

थोड़ी देर में Completion Certificate मेरे हाथ में था। जब Certificate अपनी वकील वनिता गुप्ता को दिखाया तो ओ भी हैरान रह गई।

चार दिन बाद कोर्ट में पेशी थी।

गुप्ता ने कोर्ट चे बोलया...."सर ! मेरा क्लाईंट अगर सरकारी लोगों को पैसा न दें तो उसके साथ ऐसा जुल्म तो नी होना चाहिए....।"

जिस ज़मीन पर बिल्डिंग बनी हो.....और अफसर जाकर बोले Plot

खाली है....तो सर ये कैसे हो सकता है....कि एकड़ की बिल्डिंग घण्टों में बन जाए....? जब कि D.D.A. ने खुद मेरे क्लाइंट को Completion certificate दिया है।

जज साहब ने कहा, "Completion Certificate...."

"उसी समय Case dismiss....।" और पिछले चार साल से चली जद्दोज़हद खत्म।

जज साहब ने Warning दी और हिदायत दी...."अगर और किसी के साथ ऐसा किया तो सज़ा दी जाएगी....।"

फिर धीरे से पानी का घूंट भरकर बोले....

इस तरह से मैं कामयाब रहा, यह सब भगवान् की ही तो कृपा है।

साथ ही उन्होंने पानी का घूंट भरा। मैं कपूर साहब को काफी देर से घूंट-घूंट पानी पीते देख रहा था। मैं उन्हें बोल उठा कपूर साहब ! आप पानी आराम से पीते हैं? कपूर साहब बोले....

पुत्तर जी...."पाणी खाना चाहिदा....ते रोटी पीणी चाहीदी....।"

मुझे असमंजस में देख कर कपूर साहब बोले,....

"दयाल तैनू ए वी पता नी ए....पुत्तर मैं दस ना अं।"

पहली गल.... पाणी खाना चाहिदा का मतलब है कि, हमे पानी पीने मैं इतना समय लगाना चाहिए जितना कि खाने में लगता है। यानि पानी आराम से पीना चाहिए....।

होर दूजी गल.... रोटी पीणी चाहिदी से मतलब है कि, खाना खूब चबा - चबा कर खाना चाहिए। इतना चबा कर कि पानी कि तरह नर्म लगे....। समझैया.... ?

फिर कपूर साहब ज़ोर से हँसे। और गंभीर होकर बोले....

पुत्तर मेरी ज़िन्दगी में खाने - पीने का उसूल यही है तभी तो इस उम्र में भी किना तरोताज़ा हूँ ।

मैं मुग्ध सा सिर्फ उनका मुँह ताकता रह गया। मोहन का एक अलग रूप....। उसी गंभीरता से कपूर साहब बोलते चले गए....

सन् 1984 का समय, इधर मैं सोच रहा हूँ कि 11000 फीट ज़मीन (A-50 मायापुरी) बचाने के लिए पैसे कहां से लाऊँ.... ?

उधर मेरा भाई अशोक बोलता है कि.... "मुझे अलग होना है....।"

मैंने अशोक से कहा.... "ए कोई टैम है अलग होण दा, भ्रा इस वेले एदां न कर, अगे असां परेशानी च हन....।"

पर उसने तो जैसे अलग होने की ठान ली थी।

जब अशोक नहीं माना, ज़िद नहीं छोड़ी तो मैंने हथियार डाल दिए और मैं बोला.... "ठीक है, तीन आइटमों में से कोई एक उठा ले और अलग हो जा....।"

कपूर साहब की गम्भीरता थोड़ी सी बढ़ गयी थी, वो बोले....

अशोक बोला.... "नहीं.... मैं कोई एक आइटम नहीं लूंगा... मुझे तो

सब जगह हिस्सा चाहिए....।"

मुझे कश्मीरी गेट वाली Kapson Trader में हिस्सा चाहिए। साथ रखूंगा Rubber Parts का हिस्सा, साथ रखूंगा Helmet का हिस्सा ।

मैंने कपूर साहब से पूछा....क्यों....? वह ऐसा क्यों कर रहा था....?

कपूर साहब बोले.... वो ये सब अपने दोस्तों के बहकावे में आकर रहा था। और उसके दोस्त वगैहरा गलत आदमी थे। वो लोग चाहते थे कि हमारा परिवार तहस – नहस हो जाए।

हमने बड़ा समझाया पर वो नहीं माना। आखिरकार हम इस परिणाम पर पहुँचे कि उसको एक मकान दे दिया जाए। जहां हम रहते थे, 88 नं. में.... उसके साथ एक और मकान लिया हुआ था, 283 नं., वो उसे दे दिया, Kapson Traders, कश्मीरी गेट की दोनों दुकानें दे दी, मायापुरी का 1/4 हिस्सा दिया और कुछ रूपये देकर उसको अलग किया। "नाल Chapter Close...."

बड़ी शांत सी मुस्कान के साथ कपूर साहब बोले....एकदम गिरिधर कि तरह....।

मैं उस समय बहुत गिड़गिड़ाया था अशोक के आगे, की अलग मत हो.... ये टाइम नहीं है अलग होने का। पर वो नहीं माना था।

बहुत खराब लगा था उस वक़्त, इतना खराब कि मैंने सबसे छोटे भाई रमेश को कहा था....

"कदी तूं अलग होण नूं कहेगा, तां तैनू बिलकुल नी रोकागां,"

एक खराब वक़्त था वो मेरी ज़िदंगी का .....।

और जैसे मुझे साक्षात् दिख रहे थे....गिरिधर....। अगले ही पल कपूर साहब के चेहरे पर कई भाव आ कर चले जाते है। फिर सहज भाव से बात शुरू कर देते हैं....

सन् 1980 में मैंने 4 wheeler Filter के काम को बंद करना था।

मुझे 161 workers को निकालना था।

मैंने उन्हें कहा कि...."अब उन्हें काम छोड़ना होगा....।"

तो वो लोग युनियन में गये और 50 मांगे रख दीं, जो मैंने नहीं मानी। घटते-घटते उन्होंने कहा कि आप हमें गुड़ जरुर देंगे। गुड़ Labour को खाने के लिए दिया जाता था। गूड़ रासयानिक एवं प्रदूषित हवा का प्रभाव शरीर पर नहीं होने देता

मैंने कहा...."ज़रूर देंगे.... पर लिखत में नहीं....।"

वो लोग बोले...."अगर आप लिखत में नहीं दोगे तो, हमारा समझौता नहीं होगा....।"

मैंने कहा...."न हो....।"

मेरे मना करने पर उन्होंने फैक्टरी में यूनियन का झण्डा लगाने की सोची, तो मैंने वकील से सलाह ली और पूछा...."क्या इन्हें मेरी फैक्टरी में झण्डा लगाने का अधिकार है....?"

वो बोला.... "नहीं है....।"

तो मैंने कहा कि अगर इन्हें अधिकार नहीं हैं तो मैं इन्हें झण्डा नहीं लगाने दूंगा।

वो पहाड़गंज थाने जाकर प्रार्थना पत्र देते हैं कि उन्हें झण्डा लगाने कि आज्ञा दी जाए, हमारे मुखबिर बता देते वो थाने गए हैं। अब हम भी प्रार्थना पत्र लेकर चले जाते कि झण्डा नहीं लगना चाहिए। थाने वाले उन्हें झण्डा लगाने से मना कर देते, ऐसा कोई 50 बार हो गया होगा।

S.H.O. तंग हो कर बोला...."सुभाष तू इन्हें झण्डा लगाने से नहीं रोक सकता ।" 'Sylavania Laxman' ते झण्डा लगा, तू देख L & T (कम्पनी) ते झण्डा लगा।

मैं केया....दिल्ली दा, देश दा कानून है कि ढाई मंजिल ईमारत होणी चाहि दी। मैं चाहूँ चार मंजिला ईमारत बनानी है तो बनेगी,.....?

वो बोला.... "नहीं बनेगी" ।

तो मैंने कहा.... "तो ये झण्डा भी नहीं लगेगा....।"

S.H.O. फेड अप हो गया था । वो बोला मैं.... तंग हो गया हूँ, "हुँण कुछ नी कर सकदा....।"

मैंने कहा...."मैं यही सुनना चाहता था....।" अब देख मैं क्या करता हूँ।

S.H.O. बोला.... " तू की कर लेंगा.....?"

मैं केया.... "कर के दसांगा....।"

हमें पता लगा कि यूनियन वालों कि मीटिंग पार्क में हुई है और वो इक्कट्ठा हो झण्डा लगाने आ रहे हैं।

मैं S.H.O. के पास जाकर बोला कि...."अगर कानून मुझे Protection नहीं देता है तां मैंनू अपने आप, मेरी Protection करनी पैणी.....।" मैं केहा.... मैं 200 लीटर पेट्रोल रखया है, वो आणगे तां मैं ऊपरों पेट्रोल छिड़कांगा उन्हा ते.....और आग लगा के जला दूंगा सबको। फिर जो - जो बच जायेगा....। मेरे पास पिस्तौल है.....भून दूंगा.....अपनी रक्षा के लिए। लोग इक्कट्ठे आ जाएंगे तो कर भी क्या सकता हूँ....?

S.H.O. को ये भी कहा कि "तू रोक सकदा है तां रोक ले....।"

अब S.H.O. को लगा कि मैं ऐसा कर भी सकता हूँ। 'क्योंकि मैं जो बोलता हूँ वो.... कर भी देता हूँ।'

यूनियन वालों के मुखबिरों ने वहाँ जाकर बताया कि हमने पूरी तैयारी कर रखी है। अब यूनियन वाले डर गए और कहते कि हम कोर्ट की मार्फ़त जाएंगे।

मैंने झण्डा नहीं लगाने दिया, आज तक नहीं लगा झण्डा। वो कोर्ट गए, हम लोग P.F., Gratuity, Bonus सब कुछ देते थे। हमारे यहां आज भी कानून है कि 1 घण्टे के लिए भी कोई वर्कर रखते हैं तो पूरे तरीके से।

मैं कोर्ट गया तो साथ पैसे लेकर गया था। वहां उन लड़कों को पैसे दे दिए। अब वो लोग इक्कट्ठे होकर रोना शुरू हो गये और बोलने लगे.... "पापाजी सोच लो असीं हाले वी कम करण नूं तैयार हां....।"

मैंने उनसे पूछा बच्चों अगर मैं तुम लोगों को काम करने को कहूंगा

तो मना करोगे.....?

वो बोले.... 'नहीं'।

अब Filter में कमाई ही नहीं है तो, मैं क्या करूं....? मुझे Filter बंद करना ही पड़ेगा मैंने वहीं 160 आदमी का भुगतान किया।

"ऐसा दबंग भी रहा हूँ मैं....।" हंसते हुए कपूर साहब बोले....

मैं भी कपूर साहब के साथ हंस रहा था।

इंसान का दबंग होना भी बहोत जरूरी है.... "ऐ भी तां जीवन दा हिस्सा ही ए"

फिर कपूर साहब आगे बताते है....

"उस वेले 'इंदिरा गाँधी' ने लेबर नूं पार्टनर बनान ते ज़ोर दित्ता सी..।"

पूरे देश में इस बात कि हवा चल रही थी। दूरदर्शन पर उद्योग से रिलेटिड एक प्रोग्राम आता था। मुझे A.I.M.O. के 'सिंह साहब' ने कहा मालिकों की तरफ से आप इस प्रोग्राम मे भाग लोगे। "ए पौने घंटे दा प्रोग्राम लाइव टेलीकास्ट होणा सी"

मैं स्टूडियो पहुंचा तो दूरदर्शन वालों ने मुझे सफेद के ऊपर Coloured Gown सा दे दिया।

मैंने कहा "मैं पहन तो लेता हूँ, पर मैं इसमें Comfortable नहीं रहूंगा.... और अपनी बात ढंग से नहीं बोल पाऊँगा, कुछ मज़ा नहीं आएगा।"

हालांकि सफेद कपड़ा Glare (चमक) मारता है। उन्होंने मेरी

बात मानते हुए मुझे बीच में सफेद कपड़ों में ही बिठा दिया और इधर – उधर रंग – बिरंगे कपड़ों वालों को बिठा कर बेलेंस कर लिया।

प्रोग्राम में यूनियन का कोई आदमी 'चटर्जी या बनर्जी' आया हुआ था। एँकर ने मेरे से कहा कि ये सवाल हैं, और आपने ये जवाब देने हैं।

मैंने कहा... 'रटे – रटाए ज़वाब देने वाला मिट्टी का माधो नहीं हूँ मैं..।'

सवाल आप करिए, जवाब मैं अपने ढंग से दूंगा। प्रोग्राम को दो मिनट बचे थे, उन्हें मेरी बात माननी पड़ी और प्रोग्राम शुरू हो गया ।

यूनियन के लीडर ने सवाल किया...."आप मालिक लोग लेबर को पूरे right और पूरे Benefit नहीं देते, ये कितना गलत हो रहा है....?"

मैंने कहा...."आपने पचासों जगह वक्तव्य दिए होंगे....। मुझे कोई एक ऐसी जगह बताओ, जहां आपने बोला हो लेबर से कि आठ घण्टे काम जरुर किया करो....?"

उसके पास कोई उत्तर नहीं था....।

मैंने कहा कि....तुम लोग उन्हें भड़काने में लगे रहते हो।

मैंने ये भी कहा कि....मान लो एक साल मैंने तुम्हें ज्यादा मुनाफा होने पर 20 प्रतिशत बोनस दिया, अगले साल अगर मैं किसी कारण कम बोनस देता हूं तो तुम लोग झण्डा लेकर खड़े हो जाओगे कि इस साल भी 20 प्रतिशत दो।

तो मैं तुम्हें कभी भी 20 प्रतिशत नहीं दूंगा और हर साल 8.33

प्रतिशत बोनस देता रहूँगा।

मैंने कहा...."लेबर का हक तो तुम मार रहे हो...., कोई और नहीं....।

तुम लोगों ने कभी यह नहीं बताया लेबर को, कि बोनस तो प्रोफिट पर ही मिलता है.... तो उस लीडर का कोई जवाब नहीं था।

फिर लीडर बोलने लगा कि...."मजदूर को मालिकाना हक़ मिलना चाहिए....।"

मैंने उससे पूछा कि...."मालिकाना हक़.... क्या होता है....?"

वो बोला...."पार्टनर....।"

मैंने कहा..."इसदा मतलब तैनु भी इस लफज़ दा मतलब पता नी।"

पार्टनर का मतलब सिर्फ नफे का हिस्सेदार ही नहीं होता, पार्टनर घाटे में भी हिस्सेदार होता है। कल को कोई कंपनी करोड़ो का घाटा खा लेती है तो क्या तेरी लेबर....उस घाटे को पूरा कर देगी....नहीं न.....।

लेबर कभी पार्टनर हो ही नहीं सकती। ये बिलकुल गलत है।

दूरदर्शन पर भी मैंने गलत बात को ज़ोरदार ढंग से गलत कहा।

मैं डकार कर गलत बात को गलत कहता हूँ। बहुत ही दबंग इंटरव्यू दिया था मैंने दूरदर्शन पर....

इस बार मैंने आराम से पानी का घूंट भरा और कपूर साहब कि तरफ देखा। वो बोल रहे थे....

हमारे देश का कोई System ही नहीं।

एक बार मैं गुजरात में एक Tender भर रहा था, तो Tender form में लिखा था कि.... गुजराती को 25 प्रतिशत का Extra Benefit मिलेगा।

मैंने तब बोला था कि...."हमारे देश में ये अलग-अलग States नहीं.... अलग देश है....।"

क्योंकि जहाँ एक state वाले को दूसरी state में कम benefit है तो ये तो अलग देश ही हुआ ना....। यह सब गलत हैं।

अबकि बार कपूर साहब थोड़े संजीदा दिखे जो बोल रहे थे....

हमारे देश में और भी बहुत सी गलत चीज़ें हैं.... जैसे आज कोई excise कि चोरी करे और कोई exempted category हो तो.... 1.5 करोड़ तक की excise की चोरी पर पकड़ा जाए तो penalty सिर्फ 300 रुपए हैं। और कोई पूरी excise देता हो और पकड़ा जाए तो penalty है.... पूरे 300 गुणा।

इसका मतलब कि लोग छोटी बेईमानी करते रहें और उन्हें गलत आदत डाल रही हैं....सरकार।

ये Total गलत बात है....।

गहरी साँस लेते हुए कपूर साहब आगे बोले....

हमारा सारा System ही गलत होता जा रहा है। लोगों को जब-कई-कई साल justice नहीं मिलता तो थक हार कर लोग न्याय के लिए गुंडों की शरण में जाते हैं। जहाँ उन्हें महीनों में राहत मिल जाती है।

इस गलत System के कारण ही हमारा देश गलत दिशा में जा रहा है। इस System से दुःखी होकर मैंने 'संविधान' नाम से फिल्म बनाने का काम शुरू कर दिया।

तब 'S.D. Narang' और 'B.D. Narang' दो भाई थे जिन्होंने 103 फिल्में बनाई थी। उनसे बड़ा प्यार था मेरा। उस समय 'तबस्सुम' जो दूरदर्शन की Anchor होती थी, को Script सुनाई तो वो बोली.... "मुझे लग रहा है पहली बार कोई दिमागे – सुकूं (दिमाग के सुकून) के लिए फिल्म बना रहा है....। भाई, गांधी जी ने तो देश को शारीरिक तौर पर आज़ादी दिलाई थी, पर आपकी फिल्म तो मानसिक आजादी दिलाएगी....।"

'तबस्सुम' ने Script कि बहोत तारीफ की थी। उसी दौरान S.D. Narang की मृत्यु हो गई और मेरा फिल्म का प्रोजेक्ट अधूरा ही रह गया।

कपूर साहब ने थोड़ा अफसोस भी जताया कि ये फिल्म नहीं बन पायी थी। फिर कपूर साहब पिछली बात को आगे बढ़ाते हुए बोले....।

"मैं System दी गल कर रेया सीं, साडी Society दा System ही गलत है, जेड़ा दवे उनहू ही दबादे ने....।"

पर मैं कभी किसी से नहीं डरा....।

एक बार 'धवन' जो Tax Department में था।

वो मेरे पास आया और बोला कि.... 'Bombay scooter house' वाले बोलते हैं कि Steel Bird वाले बिल नहीं देते.... वो अपना Filter भी Taneja Industries से निकालते है....।

और वो ये भी कहता है कि.... Steel Bird वाले Taneja Industries से फिल्टर नहीं निकाल सकते....।

मैंने धवन से कहा कि, 'Premier' वाले Fiat के साथ Collaboration कर सकते हैं, उसके इलावा मैंने दस कम्पनियों के नाम.... जो आपस में collaboration किए बैठे थे.... उनके नाम गिनाए।

फिर मैंने कहा.... उनके नाम हटवा दो मैं भी हटा दूंगा।

'मैं तां उन्हा नू 'राइट' दिते होए ने होर 'रॉयल्टी' वी लांदा वां, जेड़ा कोई जुर्म नी ए।'

अब बड़े गौर से मुझे समझाते हुए कपूर साहब ने कहा....

"दयाल पुत्तर.... ऐ दुनियां है, रंग बिरंगी दुनिया, एथे हर तरह दे बंदे ने, हर बंदे नाल वरतन दा हिसाब उदे बर्ताव ते Depend करदा ऐ....।"

D.G.S.&D. से rate contract का tender लिया था। Tender भरने के लिए एक Clause होता हैं कि.... Income tax clearance certificate लगेगा।

मैंने 'कत्याल' साहब को बोला कि...."मेरा Income tax clearance certificate बनवा दो....।" कत्याल मेरा Income Tax का वकील होने के अलावा दोस्त भी है।

कत्याल के साथ मेरी दोस्ती तब हुई थी जब मैंने Income Tax cases के लिए शहर के नामी वकील की बजाय कत्याल को अपना वकील बनाया था।

तब उस नामी वकील... ने मुझसे जब ये पूछा था कि, 'मुझसे बढ़िया वकील इस शहर में कौन आ गया...?' तो मेरा जवाब था Income Tax Lawyer मेरा दोस्त कत्याल। तब से लेकर आज तक कत्याल मेरे साथ है।

उसने छः महीने लगा दिए। करते-करते टेंडर की तारीख निकल गई। इत्तिफाकन दूसरा tender आ गया।

मैंने कत्याल से कहा, 'यार कत्याल मैं तैनू केहा सी कि clearance certificate लै दे, यार तैं हाले तक लैके दित्ता नी।'

वो बोला.... "भाषी नवां I.T.O. बड़ा भैड़ा, बंदा बैठा है, ओ कम नि करदा....।"

मैंने कहा.... "मैंनु ले चल....।"

कत्याल पता नहीं किस उखड़े मूड़ में बैठा था उसने कहा.... ठीक है, तू चल पड़....।

अगले दिन हम I.T.O. के पास गए। मैंने पर्ची के बजाए अपना Card अंदर भेजा। I.T.O. ने बुलाया। मैं अंदर गया।....

मैंने कहा 'मैं सुभाष कपूर'

I.T.O. बोला.... "दो मिनट बाद आना....।"

मैं भी दो मिनट इधर-उधर घूमा और फिर अंदर चला गया।

I.T.O. बोला...."Yes...?"

मैं बोला.... "दो मिनट.... हो गए....।"

I.T.O. बोला.... "क्या चाहिए....?"

मैंने कहा.... " Income tax clearance Certificate."

I.T.O. बोला.... "इसके लिए Assesment करनी पड़ेगी....।"

मैंने कहा.... "ठीक है.... मैं लिख के देता हूँ के Certificate चाहिए आप लिख कर दो की Assesment करनी पड़ेगी....।"

आप लिख के दो मैं अभी के अभी.... आपको Seat से हटवा दूंगा..।

वो घबरा गया।

वहाँ गुप्ता Inspector होता था वो समझदार था उसने कहा कि.... "क्या हुआ....?"

तो मैंने सारी बात बताई।

तो गुप्ता बोला.... " Seat से कैसे हटवा देगा....?"

मैंने कहा कि.... Assessment के लिए 15 दिन पहले नोटिस देना होता है। क्या आपने नोटिस दिया है....? ये कानूनी रूप से गलत है।

अब गुप्ता और I.T.O. दोनों अच्छी तरह से समझ गए कि कपूर ऐसे नहीं मानने वाला।

अब गुप्ता बोला.... "ठीक है एक घण्टे बाद आओ....।"

हमने बाहर जाकर कॉफी पी और वापिस आए तो I.T.O. के कमरे के बाहर बुजुर्ग ने मेरे पाँव छू दिए।

वो बुजुर्ग बोला...."मैं 39 बार इस I.T.O. के पास आ चुका हूँ.... अपनी Assessment के लिए। आपसे बात करने के बाद I.T.O. बौखला गया

और उसने फटाफट मेरी Assesment कर दी। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद....।"

जब हम अंदर गये तो गुप्ता ने clearance certificate पकड़ा दिया।

कपूर साहब बोले...."कई बार ऐसा हो जाता है कि न चाहते हुए भी आदमी को सख्ती दिखानी पड़ती है....।" अब कपूर साहब थोड़े गम्भीर होकर बोले..

उसके बाद उस I.T.O. ने इस बात कि रंजिश मन में रख ली.... और उसने दो साल कि Assessment के केस इक्कट्ठे रख दिए।

मैं केस की तारीख वाले दिन पूरा Tempo कागज़ों का भरकर वहाँ पहुँच गया।

I.T.O. बोला...."ये क्या है.....?"

मैंने कहा...."तुमने दो साल कि Assessment रखी है.... मैं ये पूरे दो साल के कागज़ लाया हूँ....।"

इतने सारे कागज़ देखकर I.T.O. ने अगली Date दे दी। अगली तारीख से अगली फिर अगली....। करते-करते मार्च आ गया।

अब अगर मार्च खत्म होने तक I.T.O. Assessment न करे तो उस पर Action हो सकता था। मार्च का अंत आने लगा और हम Assessment कराएं ना। हमने मना कर दिया।

मुझे कई वकीलों के Phone आए कि...."कपूर साहब हम Assessment करा देते हैं....। Sign हम Office आ कर करा लेंगे....।"

मैंने कहा.... "क्यों....? अपना कत्याल है न.... वो खुद कराएगा.....।"

थक - हार कर कत्याल ने मुझे कहा...."Assesment करा ले, मैंनू इनां नाल रोज़ वा पैंदा है....।"

तब कत्याल के कहने पर मैंने Last दिन एक घण्टा पहले Assessment करवाई। तब उस I.T.O. को पता चला कि किस आदमी से उसका वास्ता पड़ा था।

फिर हँसते हुए कपूर साहब ने बताया कि....

पुत्तर.... मुझे तैरना नहीं आता था। दिल किया कि तैराकी सीखी जाए. .....एक दिन मैं 'ताल कटोरा स्टेडियम' चला गया जहाँ Swimming सिखाते हैं।

सिखाने वाला बोला...."ऊपर जहाँ से छलांग मारते हैं वहाँ चढ़ जाओ....।"

मैं ऊपर पहुँच गया तो वो बोला..."इससे भी ऊपर वाले पर जाओ..।"

मैं ऊपर पहुँचा तो वो बोला...."अब छलांग लगा दो....।"

मैंने छलांग लगा दी....।

छलांग मारने के बाद मेरे पांव Swimming Pool में पानी की गहराई में जाकर फ़र्श से टकराए और मैं वापिस पानी के ऊपर आया, तो सिखाने वाला मेरा हाथ पकड़ कर बोला....."सुभाष जी मैं आपकी हिम्मत मान गया, पहले ही दिन आपने बे - हिचक इतने ऊपर से छलांग लगा दी, ऊपर वाले Spring Board से छलांग मारने में तो....बढ़िया तैराक भी हिचकिचाते हैं।

साथ ही कपूर साहब ये भी बताते हैं कि....

मुझे इस बात का अफ़सोस रहेगा कि मैं तैराकी नहीं सीख पाया, क्योंकि इतनी गहरी छलांग लगाने से मेरे कानों मे पानी के दवाब से फर्क पड़ गया था।

फिर हंसते हुए कपूर साहब बतलाते हैं कि....

हमारे देश के कानून में कई तरह की ख़ामियां हैं।

दरअसल Steel Bird मैंने डेढ़ साल Solo Prop. Ship में चलाई थी।

उस वक़्त हमें 6,000 रूपये के मुनाफे पर वही Tax लगा था जो Tata Birla को लगा था। जो कि.....बाद में ठीक भी हो गया था।

तब मज़बूरी में Tax Saving के लिए हमने तीन Partner बनाए थे। मैं, पापा जी और कैलाश भाई, वो कैलाश भाई जिसने हमारा साथ नहीं दिया। और ये Partnership हमें कितनी भारी पड़ी थी....।

"पुत्तर ए तां मैं तेनु पहलां ही सुणा चुका हां....।"

अब कपूर साहब ने थोड़ा सा विराम लिया....और फिर बोलना शुरू किया.....।

"मैं कभी सामाजिक दबाव मे भी नहीं आया क्योंकि मेरी फितरत में ही नहीं, कि मैं किसी के दबाव में आ जाऊँ....।"

9 मई, 1978 को पापा जी दा शरीर शांत हो गया था। उसके चार महीने बाद मेरे छोटे भाई रमेश की शादी थी।

रिश्तेदारों ने मुझे बिठाकर कहा.... कि मैं चुपचाप बिना किसी धूम धड़ाके से उसकी शादी कर दूं...।

मैंने कहा कि.... अगर मैं शादी....सादी....करवाता हूँ तो लोग कहेंगे कि....

"प्यो मर गया तां बडे भ्रा ने छोटे भ्रा ते पैसा नी खर्चया....।"

रिश्तेदारों ने कहा....."हाँ....।"

कपूर साहब आगे बताते हैं....

मैंने कहा...."जे मैं रमेश दा ब्याह धूम धड़ाके नाल करांगा....।"

ते लोकी कैणगे कि...."कल प्यो मरया, अज शानो-शौकत नाल शादियां करदा फिरदा....।"

रिश्तेदार फिर बोले...."हाँ....।"

मैंने कहा कि....."लोगों ने दोनों ही तरफ से बोलना है, तो क्यों न मैं रमेश की शादी में अपने मन की करूँ....।"

पुत्तर....मुझे रमेश की शादी का बड़ा चाव भी था। मैं उसकी बारात के लिए Chartered Plane किराए पर लेना चाहता था।

Chartered Flight के लिए मैंने Hong-Kong बात भी कर ली थी....। क्योंकि Delhi और Bombay में उस समय Plane उपलब्ध नहीं था, लेकिन इस पर बात अड़ गई थी कि वो....वापसी में भी Delhi से Hong-kong का किराया चार्ज कर रहे थे जो मुझे मंजूर नहीं था। और Plane वाली बात बनते-बनते रह गई थी।

बहुत धूम धाम नाल ब्याह कित्तां सी असां रमेश दा.....

A-3 Block के सबसे बड़े पार्क में रमेश की शादी की थी....। मैंने अपने फर्ज़ को बखूबी निभाया है।

हाँ.... एक बात और....कपूर साहब को जैसे कुछ याद सा आ रहा हो....

जब कैलाश भाई अलग हुए तो मेरे नवाव गंज वाले उस....खास रिश्तेदार ने, जिनके साथ हम शुरू - शुरू में हरिद्वार से आने के बाद ठहरे थे.... उन्होंने कैलाश भाई का पूरा - पूरा साथ दिया था....।

शायद हमारे परिवार को टूटता देखकर उन्हें खुशी हुई होगी। ये वही खास रिश्तेदार थे जिन्होंने.....पर्दे के उस पार से अपने सगों को एक रोटी से दूसरी रोटी नहीं दी थी।

फिर एक गहरी.....बहुत गहरी मुस्कुराहट के साथ बोलते हैं .....

"बहोत छोटी उम्र में समझ आ गया था कि ये रिश्तेदार भाई बन्धु सब मतलब के हैं....रिश्तेदार तो सिर्फ ब्याह शादी और मरने पे रोने के लिए होते हैं....।"

"ये लोग तो सिर्फ तमाशा देखते हैं, मौका ताड़ते हैं कि हम कब असफल हों....।"

फिर यकायक कपूर साहब एक ठहाका मारते हुए बोले....

"पुत्तर जी.....ज़िन्दगी दे उतार चढ़ाव ने एह....।"

मुझे नए - नए Inventions का बहोत शौक था। इस अर्से में मैंने

सेफ्टी किट का Invention किया।

मुझे आदत ही है, हमेशा से कुछ नया करने की....

पर मैंने सेफ्टी किट की Invention उस वक़्त कर दी थी जब लोगों को इसकी समझ ही नहीं थी।

जैसे मैं खुद Motorcycle चलाता था....। मैंने पाया कि.... जब हम Motorcycle चलाते हैं, तो हमारे दोनों हाथ ठण्डे हो जाते हैं, और अकसर हाथ ठण्डे हो जाने के कारण एक हाथ से Motorcycle चलानी पड़ती थी जिससे Accident रेट बढ़ता था....।

मैं भी अकसर सर्दियों में Gear वाला हाथ जेब में डाल लेता था, और Accelerator वाले हाथ से Scooter चलाया करता था.....

तो मैंने हाथ ठण्डे होने से बचाने के लिए 'Hand Protector' बनाए....।

फिर बड़े चाव से बताते हैं कपूर साहब.....

उस समय दो ही गाड़ियां होती थी 'Fiat' और 'Ambassador' ये गाड़ियां पीछे से आते हुए Motorcycle के Mirror में Glare मारती थी। इससे भी Accident रेट बढ़ता था....।

तो मेरे बड़े भाई – साहब – जगदीश जी ने Anti glare Mirror बना डाला....।

मेरा दिमाग चलदा रैंदा सी, फेर मैं वेखया कि Motorcycle दा टायर जदों पैंचर हो जांदा सी तां बडी पेरशानी होंदी सी....।

इस परेशानी से बचने के लिए जहाँ Plug होता है, वहाँ के लिए एक पुर्जा बनाया....जिससे, Motorcycle Start करने पर पैंचर टायर में थोड़ी हवा भर जाती थी और इससे आदमी किसी सही जगह पर आराम से पहुँच सकता था....।

उस समय लड़कियाँ ज्यादातर सूट डालती थी। सूट के साथ दुपट्टे का रिवाज़ होता था.... तो दुपट्टा अक्सर Wheel में फंस जाता था।

इसके बचाव के लिए मैंने 'Engine Guard' बना डाला।

फिर इसी तरह से साड़ी, टायर में फंसने से बचने के लिए मैंने 'Saree Guard' की Invention कर डाली....।

पर ये Invention वक़्त से पहले की थी शायद....लोगों कि समझ में ही नहीं आए थे ये Invention....।

"पुत्तर जी.... मैं होर भी कई इन्वेशनां कित्ती हां....।"

कपूर साहब हंसते हुए बताते हैं कि....

मेरी Invention....'गाड़ियों की Safety Kit' में मुझे जबरदस्त घाटा हुआ।

इस काम के लिए मैंने 39 लाख रूपये की तो Advertisement करवा दी थी.... और सेल हुई कुल 40 लाख....।

धीरे - धीरे घाटा बढ़ता गया मुझे वह काम बन्द करना पड़ा।

मुझे चालीस ट्रक 'Fiber Glass Component' जिसको Paint

किया हुआ था, और वो 176 डाइयों से बना हुआ था, को ज़मीन में दबवाना पड़ा, क्योंकि ये जलता नहीं था और ये Fiber Glass melt भी नहीं होता था। ये काम काफी घाटे के बाद बन्द हुआ।

इससे पहले की मैं कुछ बोलता....कपूर साहब बोल पड़े....

सन् 1992 - 93 में Dish Antenna का काम शुरू किया।

"काम अच्छा चल वी पेआ सी.. पर ऐ कम वी बन्द करणा पेया सी...।"

क्योंकि मैं V.H.P. (विश्व हिन्दु परिषद्) का President था और R.S.S. (राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ) से जुड़ा था। तो एक मीटिंग में बातचीत चली कि.... हमारे देश में आकाश के माध्यम से हमारा सांस्कृतिक शोषण हो रहा है।

अब मुझे या तो ये काम बंद करना पड़ता या संस्थाएं छोड़नी पड़ती। बहोत सोचा तो...."मैं ऐ कम बंद करण दा फैंसला लित्ता....।"

इसमें मुझे करोड़ों का घाटा हुआ।

बहुत ही सहजता से बोलते हुए कपूर साहब हंसते है।

मेरे मुँह से निकला...."करोड़ो का घाटा....?" कपूर साहब बोले....

"पुत्तर जी पैसा तां हथ दी मैल है....।"

इस बार मैंने फिर से पानी का घूंट पिया तो कपूर साहब खिलखिला कर हंस पड़े....

"पुत्तर बड़ी तेजी नाल.... सिख दा तुं..वी..., हुण...पानी हौले..पी..रेआ ऐं।"

खिसयाते हुए मैंने पूछ डाला, कपूर साहब....आप Politics में कब से आए....?

"पुत्तर तैनूं दस्सयां तां सी....मैं....तां....चार...छः... साल दा सीगा....तां मैं.... 'दीपक' वाला बैच ला के घुमदा सी....। जेड़ा.....जनसंघ ता प्रतीक सी....।"

"होर मेरा झुकाव मेरे पापाजी और झाईजी द्वारा दिये गए...संस्कारों के कारण....हिन्दुत्व की ओर था....।"

Emergency के दौरान मैंने तीन सलोगन बनाए थे ।

1) " गर्व से कहो.....हम हिन्दु हैं.....।"

2) "पहले देश ..... फिर धर्म ।"

3) "हिन्दु होना गौरव की बात है ।"

ये बात बताते हुए कपूर साहब के चेहरे से गौरव झलक रहा था.....

उस समय लोग नारे लगाने से भी डरते थे, क्योंकि Emergency के दौरान 'इंदिरा गाँधी' का डर होता था। खासकर 'दिल्ली' में।

पर मैं कहाँ मानने वाला था।

मैं बच्चों को गाड़ी में लगने वाले Sticker के साथ एक रूपये देकर कहता कि...."गाड़ी पर लगाकर आओ...।"

और उन्हें ये हिदायत भी देता कि....आकर गाड़ी का नम्बर भी बताना है।

वो वापिस आकर उस गाड़ी का नम्बर बता कर जाते जिस पर Sticker चिपकाया होता।

उस समय 'इंदिरा गाँधी'का इतना डर था कि मेरे बड़े भाई ने भी ये Sticker अपनी गाड़ी पर लगाना पसंद नहीं किया था।

और इधर एक मैं था....जो हिंदुत्व से बराबर जुड़ा रहा।

फिर कपूर साहब बड़े ध्यान से सुनाने लगते हैं....

एक दिन 'नंद लाल असीजा' जो हमारी मार्किट से है, सुबह-सुबह 'प्रेम' जी (विश्व हिन्दू परिषद् के सचिव) को लेकर मेरे पास आए और बोले....

"इन्हें V.H.P. (विश्व हिन्दु परिषद्) के लिए अच्छे आदमियों की ज़रूरत है....।"

हमारी मार्किट में कोई अच्छा....दबंग आदमी है तो....वो....सुभाष कपूर... है....। इसलिए मैं इन्हें तुम्हारे पास लाया हूँ।

उनसे बातचीत हुई, विचारों का आदान-प्रदान हुआ।

उनसे बातचीत और विचारों के आदान-प्रदान का सिलसिला, मेरे V.H.P. का सदस्य बनने के साथ ख़त्म हुआ।

मैं 1990 से लेकर 1999 तक V.H.P. दिल्ली का अध्यक्ष रहा हूँ।

यही नहीं 1993 में मुझे 'राज्यसभा' में जाने के लिए दबाव डाला गया।

परन्तु मैंने सीधे-सीधे मना कर दिया कि मुझे राजनीति में नहीं आना। क्योंकि राजनीति मेरी नज़र में बहोत गंदी चीज़ है।

"पुत्तर मैं राजनीति के गंदेपन का एक उदाहरण तुम्हें सुनाता हूँ..।"

कपूर साहब सुनाते चले जाते हैं....

हमारे साथ एक आदमी होता था 'मुखी'....। जो अकसर हमारे साथ सीप (ताश) खेलता रहता था। उसको हमने M.L.A. का चुनाव लड़वाया। वो चुनाव जीत गया।

जीतने के बाद वो बोला..."पापा जी....तुसी ही मैंनू....मिनिस्टर बनवा... सकते हो...क्योंकि 'आचार्य गिरिराज किशोर' नाल तुहाडी....बहोत बनदी है...।"

सच में ही 'आचार्य गिरिराज किशोर' जी नाल मेरा बहोत प्यार सी...।

मैं आचार्य जी नूं....फोन....कित्ता....

आचार्य जी ने फोन पर ही मुझ से पूछा कि..."कपूर जी...आप इसे अच्छी तरह जानते हो....?"

आचार्य जी मुझे 'कपूर जी' ही बोलते थे।

गलती से मेरे मुँह से निकल गया...."हाँ....।"

आचार्य जी बोले...."इसका बॉयोडाटा दो....।"

तो मैंने बता दिया...'ये ऐसे-ऐसे.... इतना-इतना पढ़ा है और प्रोफेसर है....।"

आचार्य जी बोले...."समझो....वो....मंत्री बन गया....।"

अब 11 बजे जाकर मैंने 'मुखी' को बता दिया कि तू मंत्री बन गया है।

वो बोला...."पापा जी....हाले...4 बजे .....Interview होणा ऐ, अठ बजे पता लगणा ए....तुसी....मेरा मज़ाक उडा रे हो...।"

मैंने कहा...."फिट्टे मुंह तेरा...." ये सब तो कागज़ी कार्यवाही है.... कार्यवाही बाद में होती रहेगी।

खैर...!

शाम को जब, उसके मन्त्री बनने की घोषणा हुई तो मैं साथ था। उसने मेरे पैर छुए और बोला.....

"पापा जी तुहाडे कारण मैं मन्त्री बणया"

अब सुबह 'मुखी' ने शपथ लेनी थी, वो मुझे साथ ही ले गया। वहाँ पहुँचकर भीड़ ज़्यादा थी। मैं धक्का मुक्की नहीं कर सकता था। वो मुझे छोड़कर ही अकेला अंदर चला गया....।

"ओ ऐ भुल ही गया कि सुभाष नाल है....।"

वो शपथ लेने से पहले ही मुझे भूल चुका था। राजनीति गंदी चीज़ है....।

"राजनीतिज्ञ अवसरवादी होंदे नें....बहोत बड़ी दल - दल है राजनीति।"

आगे बताते हैं कपूर साहब कि....

"जद मैं पहली बार अध्यक्ष बनया 'मनोहर लाल' जो कि सदर बाज़ार एसोसिएशन के अध्यक्ष थे....।"

एक जन सभा में उसे माइक पर बोलने का टाइम नहीं दिया गया, और वो नाराज़ हो कर चला गया कि.... "मैंनु माइक नी दित्ता....।"

मैंने उसी समय कसम खाई के कभी माइक को हाथ नहीं लगाऊँगा...

मैंने देख लिया कि राजनीति बहुत गंदी चीज़ है। मुझे राजनीति में नहीं जाना क्योंकि मैं राजनीति को करीब से देख चुका था।

मैं हैरान था, कपूर साहब की इस बात पर....। कपूर साहब बोले....

हाँ! मैं संगठन से जुड़ा रहा हूँ। सन् 1991 से लेकर 2001 तक विश्व हिन्दू परिषद्, दिल्ली का अध्यक्ष रहा हूँ। सन् 2007 से 2011 तक मैं भारतीय जनसेवा संस्थान का राष्ट्रीय अध्यक्ष रहा हूं। आज भी मैं वी. एच. पी. का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हूं। अमृतसर की उस मीटिंग में जहाँ मुझे विश्व हिन्दू परिषद्, का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया था मैं वहाँ उस बैठक में गया ही नहीं था और फिर भी मुझे निर्विरोध चुन लिया गया था।

"मैं इससे बचना चाहता था। क्योंकि मुझे तमगों से आनन्द नहीं मिलता और मैं हमेशा तमगों से बचता रहा हूँ। मुझे ये लगता है कि समाज सेवा के लिए किसी पद (Post) पर होना जरूरी नहीं।"

इसके साथ ही कपूर साहब की आँखों में एक अनोखी चमक थी। कपूर साहब बोले....

कश्मीर तो मैं 'तोड़' (आखिर तक) गया हूँ।

एक बार जब हमने कश्मीर में रैली निकाली तो 240 लोग थे, हर स्टेट

के President, Vice President, General Secretary तक।

हम सब 6 बसों में 240 लोग कश्मीर गए थे। हम लोगों को रामबाण बाँध क्रॉस करना था। वहां का मंज़र बड़ा खतरनाक था। हमारे साथ 40 गाड़ियां...एम्बुलेंस, जिसमें बैड, लगे हुए थे.... साथ थी एहितियातन....। कहीं भी हमारे साथ कोई भी हादसा हो सकता था।

एक पड़ाव पर हम लोग रूक गए। उस पड़ाव से आगे जाने वाली सूची मे मेरा नाम नहीं था....।

मैंने वहां R.S.S. के अध्यक्ष 'इन्द्रेश जी' से अपना इस बात का विरोध प्रकट किया कि मेरा नाम आगे जाने वाले लोगों की सूची में क्यों नहीं है....?

'इन्द्रेश जी' बोले...."कपूर साहब.... यहीं मीटिंग में बैठकर बात करते हैं....।"

और वाकई हम तीन आदमी वहाँ बैठ गए। मैं, प्रेम जी और इन्द्रेश जी।

देशभक्ति में डूबे और डबडबायी आँखों से कपूर साहब बताते हैं....

इन्द्रेश जी बोले..... "कपूर साहब.... मैं जब एक-एक आदमी का नाम लिख रहा हूँ.... तो मेरी आँखों से आँसू निकल आते हैं....।"

क्योंकि अलगवादियों ने सन्देशा भेजा है कि 'जो भी रामबाण बाँध क्रॉस करेगा, उसे हम गोलियों से भून देंगे....और अगर कोई बच कर निकल गया तो उसे एक लाख ईनाम दिया जाएगा।

कपूर साहब...इसलिए हम इस सूची में बुजुर्गों के नाम डाल रहे हैं....

इसलिए मैंने आपका नाम न रख कर 'B.L. Verma' जी का नाम सूची में रखा है। उनकी उम्र 72 साल है, और जीवन जी चुके हैं।

'B.L. Verma' जी उस समय हमारे Vice President थे।

तब मैंने 'इन्द्रेश जी' से कहा...."देखो.... उम्र का जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं होता....।"

मरने को... तो सभी मरते हैं....चाहे बच्चा हो बूढ़ा हो... या फिर जवान हो....और

"हिंदु तो कभी मरता ही नहीं.... हिन्दु तो प्रकट होता है....।"

तो मुझे... हर हाल में जाना ही है। मैं जरूर जाऊँगा....।

वो बोलने लगे...."अब है तो मुश्किल क्योंकि हमें Intelligence को रिपोर्ट देनी होती है....।" पर चलो मैं कोशिश करता हूँ.... और आप को सुबह 7:00 बजे तक बताता हूँ।

"और फिर सुबह....।" कपूर साहब बड़ी खुशी से बताते हैं....

सुबह....इन्द्रेश जी का फोन आ गया.... सुबह 7 बजे....कि आप आगे जा रहे हों...।

मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा और मैं....आगे गया था।

मेरा ये मानना है कि अगर आप में कुछ करने की इच्छा है तो....कोई आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकता...."मौत भी नहीं...।"

कपूर साहब की इच्छा शक्ति... उनका देश भक्ति का जज़्बा देखकर

मैं हैरान था। काश....ये जज़्बा भारत के बच्चे – बच्चे में आ जाए....।

कपूर साहब बोले....

"असी ओथे गए.... नाल सही सलामत वापस आए....।"

कपूर साहब की सधी हुई आवाज़, एक ठहराव सी भरी हुई आवाज़ सुनाई देती है....

"पुत्तर जी, ये बात प्रमाणित हो रही है....'हिन्दु और हिन्दुत्व', 'पुरातन और सनातन' हैं....।"

अब देखो जो बात हमारे शास्त्रों में हजारों साल पहले लिख दी गई है कि भगवान 'राम जी' ने... 'राम सेतू' बनाया था और लंका पर चढ़ाई की थी...।

पर लोग इसे कोरी कल्पना या एक उपन्यास समझते रहे हैं। आगे भी इसे कल्पना ही समझा जाता अगर N.A.S.A.(नासा) वाले ये प्रमाणित न कर देते। N.A.S.A.(नासा) वालों ने अंतरिक्ष से देखा है कि समुद्र में एक पट्टी सी है...जो 'हिन्दुस्तान' से 'श्रीलंका' तक जा रही है।

जब नासा ने ये प्रमाणित किया तो लोगों को विश्वास हुआ कि 'रामसेतू' था और रामसेतू है....।

रामसेतू की लम्बाई – चौड़ाई इतनी है कि कोई हिसाब नहीं। कई – कई जगह तो रामसेतू 4 किलो मीटर तक चौड़ा है। कई जगह ऊपर है.... और कई जगह दो फुट नीचे है। इस पर लोग चल कर आए हैं। ये एक रास्ता... है।

सरकार को इस धरोहर पर गर्व होना चाहिए।

किन्तु ज़्यादातर हमारी सरकारें हिन्दुत्व विरोधी रही हैं। इन सरकारों को ताजमहल तो दिख जाता है.....जो सिर्फ 400 साल पुराना है। पर रामसेतू नहीं दिखता जो हज़ारों साल पुराना है।

इस धरोहर को, जो प्रकृति ने हमें दी है इसे संभाल कर रखना चाहिए।

"रामसेतू हमारी हिन्दु सभ्यता का प्रतीक है....।"

ये चीज़ें भी तो राजनीति से जुड़ी है.... और ज़्यादातर राजनीति सच्चाई को दबा देती है....।

कपूर साहब के चेहरे पर इस समय मिले-जुले से भाव थे....और देश भक्ति में लिपटे कपूर साहब बताते है कि....

"जब R.S.S. बैन हुई, तो मैंने अपने घर में एक मीटिंग करवाई थी। बेहिचक.....बिना किसी डर के...।"

इस मीटिंग विच 'राजमाता सिंधिया', 'अटल बिहारी वाजपेयी'..... 'अशोक सिंघल' जैसे बड़े-बड़े महारथी आए सन....।

अचानक उन्हें 'घर' से जैसे....कुछ याद आ गया हो....कपूर साहब.... हंस....पडें, और कहते हैं.....

जब A-50 मायापुरी में फेक्टरी अच्छी खासी चल पड़ी थी...ये तब की बात है।

फैक्टरी के सामने हमारे Association के प्रधान 'सोमनाथ जी'

की फैक्टरी थी....वो चप्पल का काम करता था।

उसके बेटे की शादी थी, तो सोमनाथ कार्ड देने हमारे घर आया। उस समय हम A-3/88 वाले मकान में रहते थे। वो घर के बाहर टहलने लगा।

अचानक मैं बाहर निकला.....उसे देख कर बोला.... "सोमनाथ....तू....? सोमनाथ बोला.... "वाकई ऐ तेरा घर ऐ....?" तेरी इक एकड़ दी फैक्टरी ते इनां छोटा जेया मकान....?

मुझे बड़ी शर्म आई और अगले दिन ही...."मैं नवां मकान खरीद लैया 800 गज दा.... A3/28.... नवां प्लॉट....

अब कुछ गंभीर होकर कपूर साहब बोलते है –

मेरा ये मकान हमारा पैतृक मकान माना जाता है....।

"31 दिसम्बर 1992.....नूं झाई.....शांत हुए सन.....।"

वो रात को ऐसी सोई कि सुबह उठी ही नहीं....। झाई का इस संसार से जाना बड़ा झटका था....मेरे लिए । झाई के शांत शरीर के सामने जब मैं बैठा था....तो मुझे याद आ रहा था कि कैसे – कैसे झाई अपने परिवार की बेहतरी के लिए सारी ज़िन्दगी.....कभी व्रत करती थी.....कभी इस मंदिर, कभी उस मंदिर.... .कभी पूजा – पाठ, कभी कुछ....। ताकि हमारा परिवार खूब तरक्की करें।

मैंने उनके शांत शरीर के सामने प्रण किया था कि...."मैं आज से कभी भी नॉन – वेज नहीं खाऊँगा ।"

आँखों में नमी लिए कपूर साहब बोलते हैं...."मेरी झाई....।"

नमी लिए आँखो के साथ चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट आई, कपूर साहब के चेहरे पर....

"झाई को शरारतें कर के बहोत तंग करता था मैं....।"

झाई का मुझे.....प्यार.....करना बहोत याद आता है।

मुझे याद है कि एक बार मैं 'सरदार' का भेष बदल कर घर पहुँचा और....घर पहुँच कर दरवाजा....खटखटाया....।

झाई ने दरवाजा खोला.....और वो मुझे पहचान ही नहीं पाई, और मुझे न पहचान कर दरवाजा बंद कर दिया।

मैं खूब हँसा था....और....दोबारा दरवाज़ा खुलवा कर बोला...."झाई मैं.... भाषी....।"

झाई ने प्यार से डांट कर बोला था...."फिटे मुंह....भाषी.... मोया.....तूं?"

फिर हँसते - हँसते बताते हैं कपूर साहब....

मैं तरह - तरह के भेष बदलता रहता था। कभी लम्बे बाल....कभी छोटे, कभी लम्बी....मूंछे....कभी छोटी....,कभी बड़ी कलमें....कभी छोटी कलमें....। कभी पगड़ी लगाकर.....'सरदार' बन जाता...तो कभी टोपी लगाकर मुस्लमान बन जाता....। तो कभी क्रॉस डाल कर क्रिश्चिन....।

आसमान की ओर ताका कपूर साहब ने....मानो....उस एक पल में पूरा जीवन....जी गए हों। मुझे उन्हें Disturb करने का दिल ही नहीं किया। अचानक उस पल से बाहर निकले कपूर साहब और बोल पड़े....

"पुत्तर मैं बता रहा था कि ये मकान ही हमारा पैतृक मकान माना

जाता....। मेरा भाई अशोक जब शांत हुआ तो उसका क्रिया-क्रम वगैरहा सब कुछ यहीं हुआ था।" छोटी उम्र में मेरा भाई हमें छोड़कर चला गया।

"29 नवम्बर, 2002...."

थोड़ा विराम लिया कपूर साहब ने....मानो कुछ शब्द ढूंढ रहे हों, कपूर साहब ने बेहद शांत आवाज़ और बेहद गहरी मुस्कान के साथ बोलना शुरू किया....

"उस दिन मैं पूजा करने बैठा था....।"

मेरी आदत है पुत्तर कि मैं रोज़ाना काफी देर तक पूजा करता हूँ।

पूजा करते-करते मुझे खबर दी गई कि फैक्टरी में आग लग गई है। मैं उस स्थिति में भी प्रभु सानिध्य का मोह न छोड़ पाया और पूजा पूरी करने के बाद सरपट फैक्टरी की तरफ भागा।

दूर से धुंआ-धुंआ नज़र आ रहा था। आस-पास हजारों लोगों का हुजूम लगा हुआ था। आग इतनी जबरदस्त थी कि आग की लपटें दूर से नज़र आ रही थीं।

"अपनी ज़िंदगी भर की कमाई को आग की लपटों में घिरा....धू-धू.... कर जलता हुआ देख रहा था....।"

एक दम बेबस....

कपूर साहब की शांत सी गहराती आवाज़....

'बेबस'.....मैं कुछ नहीं कर पा रहा था। "ज़िन्दगी भर की कमाई.....

मेरी ज़िन्दगी भर की कमाई....।"

थोड़ी देर के लिए विचलित हो गया था मैं....

पुत्तर जी.... मैं जलती फैक्टरी के अंदर चला गया। मैं लगभग 15 मिनट तक वहाँ....आग....में ठहरा। उस 15 मिनट में अपना सब कुछ....स्वाह.... होते देखकर सोचा, और खुद को समझाया कि...."अगर मैं ऐसे ही विचलित रहूँगा तो शायद मेरा रास्ता पागलखाने का होगा.....।"

"बार-बार मैं खुद को समझाता रहा कि.....या....तो मुझे अभी के अभी ठीक होना है....या यहीं....जल कर मर जाना है ।"

इस 15 मिनट के बाद.....जैसे मेरा नया जन्म हुआ था...."मैं अपणे आप नूँ....समझा लेया सी.....।"

उस आग से मैं तप कर निकला था खरे सोने की तरह अपने आपको पूरी तरह समझा चुका था और इस धुँए के ठीक पीछे नया आसमान भी तो था जो मुझे अब दिखाई दे रहा था। वो नया आसमान मुझे....अब....छूना था.... बिल्कुल नया आसमान....।"

बाहर खड़ा होकर धीरे-धीरे मलबा होते देखता रहा अपनी इस फैक्टरी की ईमारत को....ईट-ईट का दु:ख महसूस हो रहा था।

मैं....खुद अपनी ईमारतें बनाता हूँ। मैंने Architect कभी नहीं रखा। अपना हर मकान-फैक्टरी खुद डिज़ाइन करता हूँ।

फैक्टरी का एक-एक पत्थर रोता लगा मुझे....।

मैं स्थिर हो चुका था....तो मुझे लगा कि ये ईंट पत्थर ही तो हैं, मैंने प्रभु

का धन्यवाद किया कि प्रभु जो करता है सब अच्छे के लिए करता है, धन्यवाद है उस प्रभु का, कि मैं और मेरा परिवार सुरक्षित है..... और किसी प्रकार की जान की दुर्घटना नहीं हुई है।

यहां मुझे कपूर साहब में भगवान कृष्ण का 'विराट' रूप दिख रहा था. ....जो कुरूक्षेत्र में गीता का उपदेश दे रहा है....ये बात सुनकर यहां....मैं....भावुक हो रहा था और उधर कपूर साहब मुस्करा रहे थे। उनकी मुस्कुराहट 'बांसुरी वाले' की मधुर बांसुरी की तान की तरह खिल रही थी। मैंने कहा...."कपूर साहब....चाय पीने की इच्छा हो रही है....।"

कपूर साहब बोले.....

"हाँ....हाँ....पुत्तर.....हुणे लो....।"

और उन्होंने चाय के लिए आवाज मारी। और बड़े प्यार से बोलना शुरू कर दिया....मानों मुझे दुलार रहे हों....

"पुत्तर जी, ऐं ही तां....ज़िन्दगी है....मुसीबतां....दा डट के मुकाबला करना पैंदा.....।"

और फिर कपूर साहब बड़े सहज भाव से आगे बताते हैं.....

"ये हादसा मेरे जीवन की सारी कमाई ले गया था। और ये.....आग..... सारे जीवन की पूंजी लील गई थी।"

Insurance से भी कुछ खास न मिला.....वो लोग अपनी जगह ठीक थे।

"मान लो जैसे मैंने कोई मशीन 10 हज़ार की खरीदी थी....तां.... Depreciation के चलते उस मशीन की Value अब 600 रूपये रह गई थी। उसके Against 400 रूपये भी नहीं मिले। जबकि अब उसी मशीन की कीमत लाखों में थी।"

"कुछ खास नहीं मिला। सारे कागज़ात भी जल ही गए थे।"

उस समय मेरा करोड़ों का नुकसान हुआ।

"जिन्दगी.....जिंदादिली.....दा ही दूजा नाम है....।"

कपूर साब आगे बोलने लगते हैं....

मैं अपने वारिसों को हमेशा यही समझाता हूँ कि मेरी जीवन की Good-Books में सबसे पहला नाम 'हरबंस लाल बरेजा' का होना चाहिए।

हरबंस बरेजा को जब पता चला कि मेरी फैक्टरी में आग लग गई है, तो वो तुरन्त वहाँ पहुँचा और मुझे साइड में ले जाकर बोला.... "पापा जी....मेरे.... कोल....इस वेले 7 लाख पेया है....ओ तुहाडा, तुहानुं मेरी कसम ए....न...मत करना।"

मैं उन्हुँ केया...."देख....हुण....तैं कै दिता....तां ओ पैसा मेरा ही है, ओ पैसा.....तेरे कोल मेरी अमानत है....तु प्रभु नाल....दुआ...कर कि....मैनुं.....उस पैसे दी लोड ही न पवे....फेर भी जरूरत....पेई....तां....मै तेरे कोलों ले लवंगा....ऐ...मेरा वादा ऐ।"

और दूसरा 'तिलक विज' जो अगले दिन मेरे पास 15 लाख लेकर आया था।

मैंने उसे भी ये कहा था कि.... "जब जरूरत पड़ेगी तो मैं उससे रूपये

हमने दो दिन मशवरा करने के बाद एक बार ये भी सोचा कि फैक्टरी बेच दी जाए। फैक्टरी उस समय कुल 6 करोड़ रूपये की बिक रही थी।

अब दोबारा से जीवन का चक्र कैसे चलता...?

अब हमने बैंक से बात की तो बैंक वालों ने कहा...."आपको कितना पैसा चाहिए.....?"

मैंने कहा कि "मुझे....जल्दी....लोगों का भुगतान करना है.... और काम शुरू करना है.....उसके लिए कम से कम 1.5 करोड़ चाहिए।"

बैंक ने उसी दिन 1.5 करोड़ का चेक काटने का Right (अधिकार) दे दिया और एक बार फिर जीवन चक्र शुरू हो गया।

गहरी सांस भर कर कपूर साहब बोले....

मैं उस वेले अपणे ते पूरा काबू रख्या, ते दमागी संतुलन बनाये रखेया, होर प्रभु कृपा नाल मुसीबतां ते फतेह हासिल कित्ती....।

ज़िन्दगी के उतार - चढ़ाव है। ये तो आते - जाते ही रहेंगे।

मैंने बड़ी से बड़ी मुसीबत में हाथ नहीं फैलाया और मैं फिर कह रहा हूँ कि रिश्तेदार तो सिर्फ मरने और ब्याह शादी के लिए ही होते हैं।

फिर कपूर साहब एक मज़ेदार बात सुनाते हैं....

एक बार किसी की भैंस बीमार हो गई, तो उसका रिश्तेदार उसके पास आया और पूछने लगा...."तुम्हारी भैंस ठीक है....?"

बंदे ने जवाब दिया.... "हाँ.... ठीक है....।"

रिश्तेदार दोपहर को फिर से आया और उसने पूछा.... "भैंस ठीक है....?"

बंदा फिर बोला.... "ठीक है....।"

फिर शाम को दुबारा यही सब हुआ।

वो बंदा समझदार था वो बोला...."क्यों कष्ट करते हो....? घर बैठो..... भैंस मर जाएगी तो सनेहा भेज देआंगे....।"

जोरदार कहकहा लगाया कपूर साहब ने...

ये होती है रिश्तेदारी, मेरा विश्वास तो रिश्तेदारी से बचपन में ही उठ गया था।

धीरे-धीरे ज़िन्दगी का सिरा पकड़ने कि कोशिश जारी रही कि.... कहीं से पकड़ में आ जाए।

अब कुछ समय के बाद लोहे के Waste के काम में आ गया। इस काम में Ship के Ship लोहे के waste के लेते और देते थे।

मैंने इस काम में 140 करोड़ की L.C (Letter of credit) खोली और एक ही नहीं कई L.C. खोली थीं।

पर मुझे यह पता नहीं था कि इस काम में बड़ा 'माफिया' है। एक Ship उतरने पर ही दस-दस करोड़ का मुनाफा होता था।

पर जब पता लगा कि इस काम में माफिया कि Involvement है, तो मैंने ये काम भी एक दम बंद कर दिया।

"पैसा मैं जद वी कमाया, सिर्फ ईमानदारी दा ही....।"

कपूर साहब ये बात फ़क्र से बोलते हैं.....

ये काम के चलते मैं चार साल Helmet वाले काम पर पूरा ध्यान न दे सका। ध्यान न दे सकने के कारण Helmet वाला कारोबार, जो कि 4 साल पहले जिसका Turn Over साढ़े पच्चीस करोड़ था, घटते - घटते पाँच करोड़ पर आ गया।

इस वक़्त तक मैं इतना पक्का हो चुका था कि, अब इस तरह के छोटे - मोटे उतार - चढ़ाव का कोई असर ही नहीं होता था। और तब मैंने एक बार फिर बोला था.....

"बाधाओं की लम्बी कतार देख कर भी, जिसका मन न घबराए.....

बाधाओं को भी उसके पास आने में बाधा होती है....।"

फिर कपूर साहब खिलखिला कर हँसे, और बोले....

"बाधाओं से तो बचपन से ही निपटता आया हूँ, फिर ये बाधाएं मेरा क्या बिगाड़ेंगी...?"

बचपन से एक बात याद आई.... हंसकर कपूर साहब बोले....

मैं खुशकिस्मत हूँ कि अपने पापाजी, झाईजी से जो संस्कार मैंने पाए, उन संस्कारों को लेने में मेरे बच्चो ने कोई कमी नहीं रखी।

अपने उल्लू दे पट्ठे दी गल सुणानां....

मैं बचपन विच इनूं इक कहाणी सुनाई सी, शहीद भगत सिंह की, कि कैसे भगत सिंह आज़ादी के जुनून में मस्त था। तब भगत सिंह का चाचा

जो अंग्रेजो के यहा नौकरी करता था, उसने भगत सिंह से कहा कि.... "ये उल्टे - सीधे काम छोड़ दें, मेरी बदनामी होती है....।"

तब सरदार भगत सिंह ने कहा था.... "चाचा बहुत जल्दी दुनिया आपको मेरे नाम से जानेगी....।"

कुछ समय बाद भगत सिंह ने वो काम कर दिखाया की उनकी पीढ़ियां उनके नाम से जानी गई।

अब राजू (राजीव कपूर) मेरा बेटा बोला.... "पापा जी इक दिन तुहानू वी दुनिया मेरे नां नाल जाणेगी....।"

और हँसते हुए बोलते हैं....

हुण मेरा उल्लू दा पट्ठा (राजू) ऐसे काम करता है कि....

मेरे Client अक्सर मुझसे राजू की तारीफ करते हैं। इस बात से मुझे बेहद बेहद खुशी होती है।

फिर ठहाका मारते हैं कपूर साहब।

उल्लू दे पट्ठे दी इक होर गल....।

हमारी factory तब गणेश नगर में होती थी, और मेरे पास स्कूटर होता था। हर सात तारीख को तनख़्वाह देने factory जाता था।

सात तारीख एतवार का दिन था और मैं चल पड़ा फैक्टरी तनख़्वाह देने। राजू तब सात साल का था वो भी मेरे साथ स्कूटर पर आगे खड़ा होकर चल दिया।

वहाँ जाकर उस बच्चे ने देखा मज़दूर कैसे काम करते हैं। मैंने उसे

फैक्टरी दिखायी थी। उसने देखा कहीं भट्टी जल रही है तो धुआं ही धुआं है, कहीं बर्फ़ जैसे ठंडे पानी में माल को (Grind)पीसा किया जा रहा है।

उसे हैरानी हुई और राजू बोला..... "डैडी ये इतना काम करते हैं, क्या हम इन्हें रोज़ पैसे देते हैं....?"

मैंने कहा...."रोज़ नहीं ओ पूरा महीना कम करदे, तां इन्हां नु 250 - 300 रुपए मिलदे हैं....।"

Factory देख कर उसने Office में रखे Helmet को देख कर पूछा कि.... "डैडी, हम Helmet कितने का बेचते हैं....?"

मैंने कहा.... "70 रूपए का....।"

राजू ने पूछा.... "कमाई कितनी होती है.....?"

मैंने कहा.... "15 रूपए के लगभग हो जाती है....।"

फिर बड़े चाव से कपूर साहब बताते हैं....

हफ्ते के बाद हम Shopping के लिए गए। वहाँ Jain Sons के पास राजू को दो Coat पसंद आए एक नीला और दूसरा लाल।

उसने try करने के बाद दुकानदार से पूछा.... "Uncle.... how much....?"

दुकानदार ने कहा.... "Two Fifty only"

अब उसने कहा...."डैडी एक coat ले दो....।"

मैंने कहा.... "दोनों क्यों नहीं....?"

"उसे दोनों Coat पसंद आ गए थे.... तो मैंने कहा दोनों Coat ले ले। मैंने ज़ोर लगा लिया पर राजू नहीं माना और उसने एक ही Coat खरीदा।

राजू, अच्छी तरह समझ गया सी, कि 250 रुपये कमाना किनां मुश्किल हौंदा ए....।

इतनी छोटी सी उम्र में ही इतना समझदार था राजू, 'मेरा उल्लू दा पट्ठा'।

मेरे पूर्वजों के संस्कारों का असर था, मेरे पूर्व जन्मों का असर रहा होगा कि मेरे घर मेरी दादी, मेरी गुरु, मेरी मार्गदर्शक, मेरी नानो यानि मेरी बेटी (Anamika Kapur) ने जन्म लिया।

ये बताते हुए एक गर्वीली मुस्कुराहट कपूर साहब के चेहरे पर तैर रही थी....।

"पुत्तर मैं अनामिका कपूर दी गल करांगा, क्योंकि व्याह ते बाद मेरी नानो, Anamika Malhotra हो गई है, (इस बात पर हंसते हैं) उस Anamika Kapur की बात, जो अपने दादा - दादी की बहुत दुलारी रही है। मेरे पापाजी नानो को देख - देख कर बहोत खुश होते थे। इतने खुश कि मैं बता नहीं सकता।

पापाजी 12 साल बीमार रहे थे, तो उनके चेहरे पर 'नानो' को देखकर जो रौनक आती थी, उसका मैं बयान नहीं कर सकता....। मैं बहोत खुश होता कि, मेरी बेटी दे कारण मेरे पापाजी दे चेहरे ते रौणक तां आ जांदी ए....।

फिर हंसते हुए बताते हैं कपूर साहब....

मेरी ये दादी 100 प्रतिशत Fair रहती थी। मैं कहीं न कहीं 99 प्रतिशत Fair रहा हूँगा, पर मेरी बेटी 100 प्रतिशत Fair....।

जिस किसी की भी गलती हो उसे बिना किसी भेद - भाव के point out करेगी। फिर चाहे वो मैं हूँ....? ललिता, पापाजी या फिर झाई जी।

ये ग़लती को इतने बढ़िया तरीके से समझाती थी कि हमें उसकी बात माननी पड़ती। हमें अपनी ग़लती का एहसास हो जाता, जोकि पहले ग़लती नहीं लग रही होती थी और हम मानते थे 'Yes' मेरी गलती है। इसलिए तो मैं Anamika को बचपन से दादी बुलाता हूँ।

Anamika के प्रति उनके प्यार का समंदर ठाठें मार रहा था कपूर साहब आगे बताते चले गए....

मेरे परिवार को तो शॉपिंग करनी ही Anamika ने सिखाई।

इसके जन्म से पहले शायद ललिता के पास 6 सूट रहे होंगे और मेरे पास मुश्किल से चार जोड़े कुरता - पजामा।

पर क्योंकि अनामिका कपूर कि शोपिंग तो हर हफ्ते होती थी तो जो भी साथ जाता उसकी भी कुछ न कुछ खरीद हो जाती।

मैं जाता तो मेरी.... ललिता जाती तो ललिता की.... या कोई और साथ जाता तो उसकी।

"मतलब जेड़ा भी नाल जांदा उदी खरीद हो जांदी....।"

प्यार का सैलाब कपूर साहब की आँखों से उमड़ रहा था।

सबसे अच्छी बात ये थी कि मेरे बच्चों में कभी एक दूसरे के प्रति स्पर्धा की भावना नहीं रही।

अगर मैं अनामिका के लिए 52 जोड़े और राजू के लिए 26 तो राजू को कोई चिंता नहीं, और अगर राजू के लिए ज़्यादा लाया और अनामिका के लिए कम तो अनामिका को कोई परवाह नहीं। दोनों में कोई स्पर्धा है ही नहीं।

ये गुण मेरे बच्चों में, मैंने देखा है....। और ये बात मैं सिर्फ इसलिए नहीं बोल रहा कि ये मेरे बच्चे हैं। सच में मैं, इनके इस गुण का कायल हूँ।

"मैं बहोत खुश हूँ.... अपने बच्चों से....।"

ठहाका लगा कर कपूर साहब बोलते हैं....

बहोत प्यार रेहा है अनामिका ते राजू विच....।

सोलह साल की उमर से ही राजू ने धीरे - धीरे कम विच हथ बटाना शुरू करता सी....।

वो काम में सबसे आगे रहता। मैं बड़े गर्व से ये बात कह सकता हूँ कि मेरा पुत्तर मेरी तरह मेहनतकश निकला।

राजू 16 - 18 घंटे काम करने से भी जी नहीं चुराता। ये Quality, यह गुण बहोत कम लोगों में होता है, और दिमाग का इतना तेज़ कि जो काम कोई न कर सके वो राजू को दिया जाता। कोई भी काम जो सबसे कठिन होता, जिस काम के लिए सबके हाथ खड़े हो जाते तो वो काम राजू कर दिखाता।

Production नी होरी.... राजू है, Vender नी मिल रे....कोई गल नी...., ए कम.... ओ कम, गल ही नी कोई राजू तां है ही।

धीरे – धीरे राजू ने Bussiness में अपनी जगह बना ली। पर इससे हमारे Bussiness और मेरे दाएँ हाथ मेरे छोटे भाई रमेश कि अहमियत कम नहीं हुई।

रमेश का जन्म 14 अप्रैल, 1957 का है। रमेश भी पढ़ाई पूरी करने के बाद बिज़नेस में जुड़ गया।

कपूर साहब बेहद प्यारी मुस्कान जो प्यार उड़ेलती दिख रही थी, के साथ बोलते हैं....

पुत्तर असीं सारे भ्रा इक ही थाली च खाना खादे सां....।

फिर कपूर साहब समझाते हुए बोले....

मैं, अशोक और रमेश साथ में ही हम तीनों की घरवालियाँ मतलब ललिता, निशा ते भरजाई कंचन.... असी छः जने इक्कट्ठे।

कभी नहीं होता था कि....हम में से कोई एक न बैठा हो और हम खाना शुरू कर दें।

रमेश और मेरा साथ तो हमेशा...."राम और लक्ष्मण का रहा है...।" बहुत प्यार रहा है हममें शुरू से ही।

पर, जब हम नया मकान बना रहे थे तो बहुत से लोगों ने आकर कहा कि.... "भाषी तू मकान के दो रास्ते क्यों नहीं रखता है....?"

मैं किसी गलत चीज़ की बुनियाद ही नहीं रखना चाहता था।

मैं उन लोगों को डांट देता था....

"किन्तु होनी को कौन टाल सकता है।" होनी तो होकर ही रहती है।

हालात कुछ ऐसे हुए कि हम दोनों अलग हो गए।

हमारे हिसाब – किताब तो जरूर अलग हुए, लेकिन हमारे रास्ते....?

रास्ते कभी भी अलग नहीं हुए। हम दोनों का प्यार फिर भी ऐसा रहा। मतलब 'राम – लक्ष्मण की तरह हमारा भातृत्व कायम रहा...।'

पुत्तर जी....जहाँ चार बर्तन होते हैं थोड़ा बहोत तो खड़कते ही हैं।

सोठी नाल कदे पाणी अलग हो सकदा ए....? कदे नीं....।

रमेश ने हमेशा मेरी बात को समझा है, मेरी हर बात को बखूबी जानता है। यहां तक कि कोई व्यक्ति मुझसे मिलने आए तो उस व्यक्ति के प्रति मेरे मन में क्या विचार चल रहे हैं ये भी जान जाता है.... वो....।

रमेश मेरा बहोत आज्ञाकारी रहा है, इतना आज्ञाकारी कि उसका एक दोस्त होता था 'सुरिन्दर'....।

सुरिन्दर से मेरी अनबन होने के बाद रमेश ने सुरिन्दर से कभी बात नहीं की।

हल्का कहकहा लगाते हुए कपूर साहब बोले....

'रमेश मेरी बहोत सेवा करदा ए....।'

मैं किसी पार्टी में जाऊँगा तो मुझे गाड़ी से लेने आएगा और पार्टी के

बाद गाड़ी में छोड़कर भी जाएगा....।

पार्टी में मुझे कुछ भी खाना हो....तो हमेशा रमेश ही लाकर देगा....।

वो कभी भी ऐसा काम नहीं करता जो मुझे न पसन्द हो, वो हमेशा मेरी पसन्द का ख्याल रखता....। हम दोनों भाईयों की सोच एक जैसी है।

फिर हंसते हुए कपूर साहब बताते जाते हैं....

रमेश के बच्चे भी बहोत प्यार करते हैं मुझसे.... "सोनू (पंकज कपूर) कुछ भी बोल दूं तो हर काम पूरी तत्परता से करेगा, कभी लापरवाही नहीं करेगा....।"

रमेश का छोटा बेटा मानव भी बहोत आज्ञाकारी है... 'बड़ा फ़रमाबरदार, तेज़ बोलदा ए.... इना कि औदियां गलां समझ ही नहीं औंउदियां..।'

पर मुझे पता है कि वो बहोत आगे जाएगा क्योंकि कहते हैं कि तेज़ बोलने वालों का दिमाग बहोत तेज़ होता है।

हम भाई - बहनों में....कैलाश भाई बेशक कभी merge न हुए हों।

लेकिन उनका बेटा 'विक्की कपूर' हमेशा मेरे कहने में रहा है। मुझ पर जान छिड़कता है वो....।

इतना प्यार करता है मुझसे कि मेरे लिए किसी की जान भी ले ले। मेरे लिए जेल जाना पड़े तो.... हँस के चला जाएगा।

मेरे जगदीश भाई साहब का तो कहना ही क्या...। सारी उम्र साथ रहे.।

मैं 'जद वी कोई कम इना नूं दसया, इनां नें अपणा कम छड के मेरा

कम पहलां कित्ता....।'

जगदीश भाई साहब हमेशा.... 'सुख – दुःख च मेरे नाल रहे....।'

फिर हंसते हुए कपूर साहब बोलते हैं....

"राजू दी इक.....होर गल याद आई....।"

कहाँ तो मुझे....अपने बेटे को प्यार करना चाहिए....और कहाँ वो एक दिन में मुझे 20 – 25 बार प्यार करता है।

"इनां बड़ा हो गया ए....पर अज भी उदा ऐ ही हाल है। अपनी मां नूं... चूम – चाम के....झल्ला होंदा.....रहेगा।"

कपूर साहब की आँखों में जबरदस्त प्यार उमड़ आया था....।

"अपणी मम्मी दा वी बहोत....प्यारा ए.....राजू....।"

पुत्तर जी....."ते राजू दी मम्मी दी, मैं की गल कवां....।"

ललिता अगर मेरी ज़िन्दगी में न होती तो शायद मैं Zero रह जाता। इसके जैसी सोच.... इसके जैसी....दरियादिली इसकी तरह कर्मठता.... इसकी तरह प्यार करने की भावना....इसकी तरह सूझ – बूझ शायद ही किसी और नारी में हो।

मुझे तो लगता है कि ललिता के बाद ये बीज ही ख़त्म हो जायेगा। मैं इसके बिना कुछ भी न होता....।

"ये सुभाष कपूर जो तुम्हारे सामने बैठा, बातें कर रहा है.....शायद 'सुभाष कपूर' न होता.....।"

ललिता की विशेषता रही है कि उसने अपने और दूसरों के बच्चों में

कभी फ़र्क नहीं किया....। मेरा कहने का मतलब है कि जितना प्यार अपनी बेटी को दिया उतना ही प्यार....अपनी बहू 'स्वीटी' को भी दिया....।

"आज के ज़माने में अच्छी बहू बड़ी किस्मत वालों को मिलती है।"

कपूर साहब के चेहरे की मुस्कान बरकरार थी....किस्मत से मेरे घर गुणी बहू आई है....

"किसी व्यक्ति की परख तब होती है....जब कोई बुरा वक़्त आया हो....कोई संकट आया हो....और वो उस कसौटी पर खरा उतरे।

जब मेरे भाई 'अशोक' का शरीर शांत हुआ....उन दिनों घर पर मेहमानों का तांता लगा रहता था। तो मेरी बहू ने पूरे घर को सम्भाला। "इतना काम....करना आम लड़की के बस की बात नहीं।"

मैं ये उम्मीद नहीं कर रहा था कि स्वीटी इतने अच्छे ढंग से घर को सम्भाल पाएगी....।

"स्वीटी ने मैंनू...गलत....साबित करता सी....।"

उस समय मैं, इसकी मेहनत देख कर हैरान हो गया था कि आज की मॉर्डन लड़की इतना काम कर सकती है?

जब स्वीटी हमें 'अमेरिका' ले गई, तां खूब घुमाया - फिराया स्वीटी ने हमें....।

"ओथे बड़ी सेवा कित्ती, इन्हें साडी....।"

जबकि आज कल सेवा करना तो दूर....कौन बहू....अपने सास - ससुर

को विदेश ले जाना पसंद करेगी....? कौन सी बहू चाहेगी कि बुड्डा-बुड्डी को साथ ले जाएं....।

और ऐसा भी नहीं कि ये सब स्वीटी का बनावटी पन हो क्योंकि "पता चल जाता है...न....।"

जैसे कोई किसी काम में...'कोई नक चके'....किसी काम के लिए 'कोई बहाना करें'....किसी काम के लिए...'कोई टाले'.... मुझे ऐसी कोई चीज़ देखने को नहीं मिली.....आज तक।

हम बहोत खुश है कि हमें स्वीटी जैसी बहू मिली है।

"अज भैण दी बड़ी याद आ रही ए...."

बोलते हुए कपूर साहब ने मेरी ओर देखा....और मुस्कुरा कर बोले.....

"मेरी बहन 'वीना' मुझसे बहोत प्यार करती है, बेहद अथाह प्यार।"

"मैं....भी झल्ली नूं..बड़ा प्यार करदां हां ।"

जब मैंने बहन की शादी की थी, तो उसके ससुर ने कहा था...."बेटी...'वीना'....कपूरां तो कदी दूर नी होणा....ये ही तेरे सच्चे साथी है....।"

"कल को मैं रहूं या नहीं....ये ही तेरे सच्चे साथी है....।"

वीना के ससुर भी मुझसे बहोत प्यार करते थे। बड़ी....इज्ज़त....बड़ा मान करते थे हमारा। इतना मान कि वीना के ससुर ने अपनी वसीहत मेरे सामने बैठ कर बनवाई थी। मैंने उस Will में कुछ Amendment भी करवाई थी....जो बाद मैं वीना के बड़े काम आई।

"उसकी शादी होने तक बड़ी रौनक रहती थी घर में....।"

"बड़ी अच्छी भैण है मेरी....।"

कपूर साहब ने कहा और फिर एक दम से बोले.....

'निशा' भी मैंनू रखड़ी बनदी है....।

निशा रमेश की पत्नी है.....मुझे अपने भाई की तरह मानती है और बड़ी समझदार है। और....'भरजाई' यानि जगदीश भाई साब की पत्नी के बारे में कुछ भी बोलूं तो वो भी कम है।

मैंने कभी उन्हें लड़ते नहीं देखा....और न ही कभी किसी से ऊँची बात करते सुना....।"

फिर खुश होते हुए कपूर साहब बोले कि....

"असीं औरतां वलों....कदी....अलग नी होय....।"

जब भी अलग हुए तो मर्दों की ही वजह से । हमारे परिवार में औरतों की तरफ से कभी कोई कमी आई ही नहीं । मैंने कभी परिवार की औरतों को फालतू की बहस करते हुए नहीं सुना ।

"एक घटना याद आई....।" कपूर साहब बोलते हैं.....

एक बार भरजाई (कंचन), निशा.....और ललिता....'राम लाल कुंदन' की दुकान पर सोना खरीदने गई।

ये तीनों आपस में यही बोलती रही कि...."ए....हार....तु ले.....लै....। तेरे ते.....चंगा लगेगा ।"

राम लाल कुंदन बड़ा हैरान हुआ कि....

"पहला घर देख रहा हूँ....जिसकी औरतें ये कह रही है कि....'तुझ पर हार अच्छा लग रहा है'....तू लै लै....तु लै....लै....।" नहीं तो सभी औरतें यही कहती देखीं है कि....'मुझ पर कैसा लग रहा....मुझ पर कैसा लग रहा है....।"

एक ठहाका लगाया कपूर साहब ने और बोले.....

"बड़ा Sacrifice Nature है इन सब का....।"

"जनानियों वलों....असीं....कदी.....अलग....नीं....होय....।"

"पुत्तर....बेशक ज़िन्दगी....च....कई....उतार - चढ़ाव देखे ने....पर रब ने दोस्तां वलों....सुख....रखया....।"

भगवान् करे जैसे मेरे दोस्त हैं...."रब....सब नू दवे....।"

कपूर साहब इस बार चहकते हुए बोले....

"मेरे यारां....वगैर....मेरी ज़िन्दगी ही अधूरी ए....।"

दोस्तों ने मेरी ज़िन्दगी को तरोताज़ा रखा....। हमारे ज़माने की दोस्तियां.....आज की तरह नहीं है....कि

'आज यारी' हुई....कल....पहचाना ही नहीं इक दुजे नूं....।

शोरी (पी. एल. ढल्ल) मेरे साथ 61 साल से हैं।"होर अज भी मेरे नाल चल रेया है....।" पूरे 61 साल की दोस्ती है, मेरी और शोरी की।

बचपन की दोस्ती, 'चमन लाल सहगल' और 'कुकड़ी' (कृष्ण लाल) से है।

इस बार मुझे ऐसा लगा कि माधव अपने बाल सखा (सुदामा) का ज़िक्र कर रहे हों....

मेरे घर पर कई व्याह - शादी.....या और कई तरह के कार्यक्रम हुए। पर मुझे आज तक ये पता नहीं कि कौन सा काम....कैसे हुआ....? जैसे राशन कहां से आ रहा है? हलवाई कौन है....कौन सी जगह पर Function करना है....?

"मैंनू एह कुछ पता नी होंदा सी....ए....सब.....जिम्मेदारी कुकड़ी दी होंदी सी....।"

कुकड़ी (कृष्ण लाल) की वजह ही से बड़े-बड़े कार्यक्रमों का आयोजन कर सका।

"नानों दे ब्याह....च कोई 6500 - 7000 आदमी....आया होणा....।"

अगर कुकड़ी न होता तो....इतने मेहमानों को बुलाकर....उनकी खातिरदारी करना....ये सब मुश्किल हो जाता।

फिर 1963 ते लै के.... 49 साल तो 'कत्याल' चल रेया एं 'मल्होत्रा जी' (अंकुर वाले) भी सन् 1973 से दोस्त हैं । हरीश 43 साल से....और..... 'गांधी' साहब भी लगभग 40 - 42 साल से मेरे दोस्त हैं । पर एक दोस्त का बहुत दुःख होता है जो अब हमें छोड़कर जा चुका है।

'दीवान साहब' जो कि मायापुरी वाली ज़मीन की ख़रीददारी में दलाल थे....।

दीवान साहब से मेरा बहोत प्यार था, भरजाई (दीवान साहब की

पत्नी) मुझे अक्सर बोलती.... "भाषी तू तो मेरी सौतन है...।"

इतनी गहरी दोस्ती थी मेरी और दीवान साहब की।

एक रात भरजाई (दीवान साहब की पत्नी) का फोन आया कि.... "दीवान साहब याद कर रहें है....मिलना चाह रहे हैं....।"

मैं भरजाई नूं केहा.... "मैं सवेरे आनां....।"

मैं सुबह दीवान साहब से मिलने गया तो उन्होने मेरे हाथ से जूस का गिलास नहीं पिया और कहा.... भाषी मेरा खाना - पीना मुक गया है.... मै तो तेरा ही इंतजार कर रया सी... और प्राण त्याग दिए।

मानों दीवान साहब मेरा ही इंतज़ार कर रहे थे।

बाद में भरजाई ने बताया था कि.... "दीवान साहब ने रात से ही कुछ नहीं खाया था....।"

और जब मैंने उनसे कहा था कि.... "तू हार रहा है....।"

तो मेरे यार दीवान साहब के अंतिम शब्द थे...."भाषी....मैं हार नहीं रहा....मैं जा रहा हूँ....।"

"बहोत याद....आंदी....है....उन्हा दी....।"

फिर लम्बी सांस भर कर कपूर साहब बोले....

हमारे दोस्तों के इस समूह में कभी मेरा - तेरा नहीं हुआ। हमारी दोस्ती में पैसा कभी आड़े नहीं आया ।

मान लो....हम घूमने गए....मेरे पास पैसे हैं तो मैंने दे दिए नहीं है तो.....

नहीं दिए.....। ऐसे ही कभी....शोरी, कभी कुकड़ी..कभी कोई.....मतलब जिसके पास है, वो खर्च देगा....। कोई झगड़ा नहीं....।

"मुझे याद है....।" अब मुस्कुराते हुए कपूर साहब बोले....

जब मैंने पहली गाड़ी (UPT 1990) सन् 1973 में ली थी, उस गाड़ी में 4 परिवार जिसमें 3 बच्चे भी थे। इस गाड़ी में कुल मिलाकर उस वक़्त हम 13 लोग गए थे। नाल गडी चलान वाला सरजू अलग सी....।

खूब घूमते थे हम लोग। जब कभी भी वक़्त मिल जाता हम यार - दोस्त अक्सर घूमने निकल जाते....

'कदी 'शिमला' कदी....'धर्मशाला' कदी 'मनाली' कदी 'मन्सूरी' ते कदी 'देहरादून'....।" बहोत मज़े करते थे हम....

ज़िंदादिली से कपूर साहब बताते जाते हैं....

एक बार हम लोग 'शिमला' गए। वहाँ महाराजा 'फरीदकोट' से मिलने चले गए।

हम वहां पहुँचे.... "तां उन्हाने....साडा....बहुत सत्कार....कित्ता....।"

काफी देर बैठने के बाद हम लोगों ने विदा ली। चलदे होए सानू सब नूं....राजा साहब ने सेबां दीआं....पेटियाँ....दित्तियां सन। फिर राजा साहब हमें बाहर छोड़ने गाड़ी तक आए....।

"पुत्तर, जाणते हो क्यों....?"

कपूर साहब ठहाका.....लगाकर....हंसते हैं.....

"राजा – साहब....ये देखना चाहते थे कि एक Fiat गाड़ी में 13 लोग बैठ कैसे सकते हैं।"

"खूब....सैरां....कित्तीयां....असीं....।"

अब थोड़ा हल्के से मुस्कुराते हुए कपूर साहब बोलते हैं....

मेरी एक खास आदत रही है.....पुत्तर....मैं, हफ्ते में रविवार के अलावा.. एक और छुट्टी करता ही था....और साल में दो बार घूमने जरूर जाता....।

"जदो....मैं घूमन जांदा तां....फोन बंद....कर देंदा सी.....ताकि Business से अलग थोड़ा....ज़िन्दगी का लुत्फ़ भी ले सकें....।"

थोड़ा सा टिकने के बाद कपूर साहब आगे बताते हैं....

मेरे दोस्तों में 'प्रभा' का नाम....गिनती किया जा सकता है....'शुक्ला' का नाम गिनाया जा सकता है....चंचल का नाम गिनाया जा सकता हैं।

हम सब अपनी – अपनी शादियाँ होने से पहले के दोस्त हैं। हमारा मिलना – जुलना.....आपस का प्यार.....दोस्ताना आज भी बरकरार है। हमारी शादियों के बाद भी....हमारी दोस्ती में किसी तरह का कोई फर्क नहीं आया।

प्रभा.....मेरी अच्छी दोस्त है। प्रभा का बात करना....बात की पकड़ और बात को समझना....देखते ही बनता है।

"प्रभा जेही दोस्त....ज़िन्दगी दी धरोहर हौंदी ए.....।"

आगे हँसते – मुस्कुराते हुए कपूर साहब बोलते हैं....

"एक बार जो कोई भी मुझ से जुड़ा....तो हमेशा के लिए जुड़ कर रह गया....।"

पुत्तर इस बात का सबसे बड़ा सुबूत ये है कि जब मैंने अपनी बेटी 'अनामिका' की शादी की तो कम से कम 6,500 – 7,000 लोग उसकी शादी में आए थे। झुण्ड के झुण्ड.....में लोग आए थे।

"बेटी की शादी में, इतनी बड़ी तादाद में लोगों का आना ये दर्शा जाता है....हम सामाज में किस तरह से....जुड़ कर चलते हैं....।"

"इसी तरह हम दोस्त जुड़ कर चलते रहे हैं...हमेशा के लिए....

अब कपूर साहब के चेहरे पर बड़े प्यारे से भाव आए....जिन्हे मैं समझ नहीं पाया। अब कपूर साहब क्या बोलने जा रहें होंगे....? ये तभी पता चलता न जब कपूर साहब आगे बोलते। नज़रें नीची करके कपूर साहब ने कुछ सोचा....फिर शरारत से मेरी ओर देखते हुए कपूर साहब बोले....

"पुत्तर'....मेरे कुछ नन्हें – नन्हें दोस्त भी हैं....।"

इस बार....मैं ये बात समझ नहीं पाया....

"हाँ....। मेरे छोटे – छोटे दोस्त मेरे....प्यारे, मेरे दुलारे....।"

ज़िन्दगी में चाहे कितना ही परेशान हों....मायूस हों....इन दोस्तों की शक़्ल देखते ही तबीयत....एकदम हरी हो जाती है....।"

इधर मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि कपूर साहब क्या बोल रहे थे? थोड़े शरारती होते हुए कपूर साहब ने बोलना शुरू किया.....मानों कपूर साहब दबे पांव चलते – चलते....यादों को दबोच लेना चाहते थे ठीक किसी बच्चे की तरह....

"पुत्तर....मैं अपने....पोते – पोतियाँ दी गल कर रेआ आं.....।

पहले 'अंकित', मेरे पोते दी गल...। मेरी बेटी अनामिका दा 'मुण्डा'।"

अंकित को मेरा 'पोता' कह दो या 'दोहता' मुझे....पोते....दोहते में कोई फर्क महसूस नहीं होता।

"पुत्तर.....मैंने अंकित को दो-तीन काम करते और करवाते देखा है। ये जो भी काम करता है उसमें पूरा Interest लेता है.....और जब Interest लेता है तो उसमें पूरा खरा भी उतरता है....."

मैं जब बद्दी में Plant लगा रहा था, तो इसने मुझे कुछ चीज़ो के लिए बताया कि ये ग़लत है। और ये ऐसे नहीं.... ऐसे होनी चाहिए। मैंने उसकी बातों को माना।

वहीं मन्दिर बनाते वक़्त इसने कुछ ऐसी चीज़े बताई कि मैं तो हैरान हो गया।

मैंने वहां काम करने वालो से कहा...."भई इसी.....से पूछ कर काम करो....।"

काम करने वालों ने भी अंकित से पूछ कर ही काम किया कि....

सर ये काम कैसे करूँ....? ये कैसे करें....?

मैंने कोई Interfere ही नहीं किया।

ये जो भी काम अपने हाथ में ले लेता है...."बड़े शौक नाल....पूरी लग्न नाल करदा ए....।"

"अंकित मिलनसार भी बहोत है....प्यार भी बहोत करता है....और

दूसरों का ख्याल भी बहोत रखता है....।"

अब कपूर साहब खिल उठे थे किसी फूल की तरह....

'कशिश' मेरा पोता (राजू का बेटा).....

मैं चाहता हूँ कि ये खूब तरक्की करे....। मिलनसार तो ये भी है....। पढ़ाई में हल्का सा लापरवाह है....। मैंने इसके बारे में एक खास बात नोट की है कि....ये बहोत Brave है।

हम थोड़ा वक़्त पहले घूमने गए थे, तो मैंने खुले समन्दर में इसे दूर - दूर तक तैरते हुए देखा....बिना किसी Safety के...। बिना Jacket के..... ऊँची - ऊँची लहरों से खेलना कोई आसान नहीं होता । "उसमें गज़ब का उत्साह है गज़ब का Confidence....

"और मुझे पूरा विश्वास है कि 'कशिश' में ये उत्साह Business में भी बहोत जल्दी आ जाएगा और वो खूब तरक्की करेगा....।"

और मेरी प्यारी बिटिया रानी....मेरी 'बड़ी मोटी भैंस".....अलीशा..... अनामिका की बेटी....

मैं जब बद्दी से शिमला आ रहा होता हूँ तो इसके अनगिनत फोन आ जाते हैं.... "कहाँ पहुँचे....? अभी कहाँ पहुंचे....?"

बहोत प्यार करती है मुझे।

जब 'अलीशा' के फोन की घंटी बजती है तो शोरी कहता है.... "चमकीली दा फोन आ गया होणा ए, छिपकली दा फोन आ गया होणा ए..।"

शोरी 'अलीशा' को मज़ाक में तीन - चार नामों से बुलाता है।

मेरे साथ खेल – खेल कर ये थकती नहीं, इसकी इच्छा होती है, ये और खेले हमारे साथ....।

मुझे लगता है कि ये राजनीति में बहोत आगे जा सकती है। बहोत अच्छी वक्ता है....अलीशा....।

अब मैं अपनी मोटी भैंस के बारे में भी तो कुछ बता दूँ.... नाम है सृष्टि, और बेटी है मेरे राजू की।

जब ये छोटी थी... तो मुझे इससे फोन पर बात करना बड़ा अच्छा लगता....

फोन पर मेरी आवाज सुन कर ये बोलती.... "मुझे पता है, ददु.....ददु बोल रहे हैं....।"

सृष्टि का जन्म फैक्टरी में आग लगने के आस – पास हुआ था। हम सृष्टि की किलकारियों में अपना दुःख भूल जाते थे।

बिलकुल बच्चों की तरह मचलते बताते जाते हैं कपूर साहब.....

इसके घुँघराले बालों में मुझे कन्हैया नज़र आता है....

वो शनिवार और रविवार को मेरे और ललिता के पास सोएगी। अच्छी – अच्छी बातें करती है और जब हम तीनों ही होते हैं तो इसी का रोब चलता है। क्योंकि उसने अपने प्रोग्राम देखने होते हैं जैसे डिस्कवरी, पोगो बगैरहा....। उसी कि पसंद चलती है। मजाल है कि मैं न्यूज़ देख सकूं या ललिता अपना कोई प्रोग्राम स्टार – प्लस या सोनी का देख सकें।

"बड़ा अच्छा लगता है कि हम पर हमारे मोटु की हुकूमत चलती है।

पुत्तर दयाल, असीं घर विच सोफे तां रखे ने, कि असी ऊँच-नीच खेल सकिए....।

कपूर साहब कि ये बात सुनकर याद आया कि पहली मुलाकात के दौरान ही बताया था कि वो दीवान पर बैठना पसंद करते हैं । साथ ही ख्याल आता है 8 - 10 साल के कपूर साहब कैसे खेलने को तरसते थे....उस वक़्त.....। कपूर साहब बोलते जा रहे हैं....

"पुत्तर बड़ा मज़ा आंदा हा बच्चेयां नाल खेलण दा"

और मैं सोचता जा रहा हूँ कि कपूर साहब इन सोफों पर बच्चों के साथ खेलते हुए अपने बचपन को फिर से पा रहे होते होंगे, बच्चों के इस सोफों पर कूदते हुए अपने बचपन कि पूरी भरपाई कर रहे होते होंगे। ठीक वैसे ही जैसे 'माखन चोर' माखन चुरा कर.....

कहकहों कि फुहार रूकने में ही नहीं आ रही थी। मैं भी कहकहों कि इस फुहार में सराबोर था। तभी कपूर साहब रूके और बहुत ही प्यारी मुस्कान के साथ बोलने लगे....

मेरी नानो ते मैं बहोत खेलदे सन.....मेरी बेटी 'अनामिका' अब बड़ी समझदार हो गई है....।

"समझदार तां ओ पहलां ही बहोत सी, हुंण सयाणी हो गई है....।"

अनामिका कपूर से अनामिका मल्होत्रा बन कर काफी परिपक्वता आ गयी है उसमें। हम से जो विरासत में मिला, वो तो मिला ही है। पर चीकू (मुकेश मल्होत्रा) जैसा पति मिलना बहुत किस्मत की बात है....

बहुत ही सुकून भरी आवाज़ में कपूर साहब बताते गए.....

चीकू (मुकेश मल्होत्रा) को बेटा कहना अच्छा लगता है । उसको जमाई बोलने से कुछ अपनापन सा कम लगने लगता है। चीकू का अथाह विश्वास है हम में.....

एक बार मेरे हाथों से उनका 'मॉडल टॉऊन' का काम कुछ ग़लत हो गया था । चीकू ने आज तक उस घटना का जिक्र नहीं किया "ये उसकी Greatness है....।"

"मेरे कलेजे के टुकड़े 'नानो' को बहुत सहेज कर रखा है 'चीकू' ने । नानों जब ये बोलती है कि...."मैं बहुत खुश हूँ....।"....तो मैं आनंदित हो जाता हूँ।

"एक बाप के लिए इससे बड़ी खुशी की क्या बात हो सकती है....।"

"नानो (अनामिका) का होना....मेरे लिए एक 'किले' की तरह है....। मुझे हमेशा लगता है कि इस 'किले' के होने से मैं सुरक्षित हूँ....।"

सन् 2011 में मेरे मन में, विचार आया कि मैं 'सन्यास' ले लूँ।

कपूर साहब बोले....

इस मामले में सलाह लेने के लिए मेरी गुरू 'नानो' से बढ़िया कोई नहीं हो सकता, इसलिए मैंने उसे फोन करके उसे बताया....।

नानो बोली...."डैडी....अगर आप सन्यास लेते है....तो आपके साथ कम ही सही....पर आपकी जरूरतें भी तो जायेंगी....।"

आपको वहाँ अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए....नए दोस्त, नए साथियों....नए परिवार की जरूरत पड़ेगी...।" एक बार सब कुछ फिर से...."नए सिरे से....।"

"तो आप अपने इस परिवार को छोड़कर जा ही क्यों रहे हैं....?"

कपूर साहब बोले....

"बात तुरन्त मेरी समझ में आ गई....और मैंने सन्यास लेने का फैसला त्याग दिया....।

"इतनी समझदार....इतनी सयानी है.....मेरी बेटी 'अनामिका'....।"

"जो बात शायद मुझे विद्वानों के व्याख्यान नहीं समझा पाते, 'नानो' ने ये बात चंद शब्दों मे समझा दी....।"

कपूर साहब अब जिनका चेहरा दिव्य सा रूप ले रहा था....गहराती हुई आवाज में बोले.....

पुत्तर जी....आज....मुझे ये बताते हुए बेहद....बेहद....बेहद खुशी है कि मेरा बेटा राजू मेरे से बहोत आगे जा रहा है।

कारोबार में ही नहीं, पितृ भक्ति में भी मुझसे मीलों आगे है।

मुझे बेहद खुशी है....इस बात की....प्रभु कृपा है कि मैंने एक सफ़र की शुरूआत की थी, अपने लिए नहीं.....अपने मां-बाप के 'आत्म-सम्मान' को बढ़ाने के लिए। मेरा ये सफ़र नवाबगंज के मकान से चलकर जो.....बामुश्किल 100 गज रहा होगा, से शुरू हो कर एकड़ों की फैक्टरी तक जा पहुँचा....जो मैंने सपने में भी नहीं सोचा था.... जिसे मेरा बेटा राजू आगे बढ़ाता जा रहा है।

"ये सब...मेरे बुजुर्गों का आशीर्वाद है....और परम पिता परमात्मा की असीम कृपा....।"

मैंने साफ पाया कि कपूर साहब का चेहरा अब आभामय हो चुका था। दीवान से उठकर वो बोले.....

"अच्छा पुत्तर अब मैं पूजा कर लेता हूँ....।"

मैंने कहा... "पापा जी इस समय पूजा...?"

उस समय शाम के चार बज रहे थे।

कपूर साहब मुस्कुराए...। कपूर साहब आलौकिक मुस्कुराहट के साथ बोले...।

"पुत्तर जी, प्रभु की पूजा करने का, कोई तय वक़्त, थोड़े ही होता है, जद दिल करे तार जोड़ लवो अपणे प्रभु दे नाल, मेरा जब दिल करता है अपने हरि से तार जोड़ लेता हूं और प्रभु कृष्ण से बात करने की कोशिश में लग जाता हूं। कभी – कभी पापाजी से भी गप – शप होती ही रहती है।"

"हल्का सा ठहाका लगाया कपूर साहब ने, जो पूरे तौर से सात्विक और आलौकिक था।"

मैंने उनके पैर छूए और इज़ाजत मांगी तो कपूर साहब ने अपना ईश्वरीय हाथ मेरे सिर पर रखा और बोले...

"जिउन्दा रह, पुत्र सदा चिरंजीवी रहो।"

कपूर साहब चल दिए अन्दर की ओर और मैं बाहर की ओर... ये सोचता हुआ कि....

तभी तो... तभी तो... कपूर साहब के साथ कृष्णमयी एहसास होता है, क्योंकि वो प्रभु कृष्ण के परम भक्त हैं, ये बात मुझे आज पता चली थी।

एक बात और बताता चलूं कि कपूर साहब प्रभु कृष्ण और अपने पापा जी के बाद अपनी बेटी 'अनामिका' को अपना आध्यात्मिक गुरु मानते हैं।

मैं कपूर साहब की बातों को बार-बार सुनता, सोचता, समझता रहा।

सुनते, सोचते, समझते ये बातें वाक्यों में बदलने लगीं और कपूर साहब के कहे ये वाक्य कब किताब की शक्ल, रूप ले बैठे-पता ही नहीं चला... ठीक किसी किस्से, कहानी या कथा की तरह....

पर ये सब किस्सा या कहानी न होकर वास्तविक्ता है, एक ऐसी वास्तविकता जो किसी ठोस ईमारत की तरह पीढ़ी दर पीढ़ी, सदी दर सदी साथ देती है। हमें आराम देती है, जीवन भर शरण देती है जिन्दगी जीने के लिए। एक ऐसी वास्तविकता जो हमारे जीवन को प्रकाश, उजाले से भर देती है।

कपूर साहब के जीवन से क्या नहीं सीखा जा सकता.... बस... सीखने वाला होना चाहिए...।

कपूर साहब का जीवन में पाँच-पाँच बार शून्य में पहुँचने के बाद बार-बार उठना, नई-नई ऊँचाईयों पर पहुँचना... सबक देता है... सीख देता है, खासकर हमारी युवा पीढ़ी को जो छोटी-छोटी असफलताओं से परेशान होकर नशे की दलदल में फंसते जा रहे हैं, कितने ही लोग अपना जीवन ख़त्म कर लेते हैं असफलताओं से घबराकर.... ये वास्तविकता इन सभी लोगों के लिए एक बहुत बड़ी सीख है....।

बहुत ही बड़ा सबक कि हम "सुभाष कपूर" जी की तरह से कैसे

कुछ गज की ज़मीन (100 फुट) से काम शुरू करके लाखों फुटों की फैक्टरी में बदला जा सकता है। हाँ...! अब कपूर साहब की कई बड़ी-बड़ी फैक्टरियाँ हैं, नोएडा और बद्दी में। बद्दी की फैक्टरी की ईमारत तो 2 लाख sqft(दो लाख स्क्वेयर फिट) में बनी है। सपने कैसे पूरे होते हैं मेहनत से... कपूर साहब की वास्तविकता ये सिखाती है।

कपूर साहब की वास्तविकता बताती है कि असफलताओं के बादल भरे क्षितिज के पीछे रौशनी का खुला आसमान होता है.... उसके आगे और आसमान... उसके आगे और.....

असफलता के उस क्षितिज से पास नई रौशनी का नया आसमान कैसे देखा जा सकता है, कैसे छुआ जा सकता है... कैसे उड़ा जा सकता है उस आसमान में ये सब कपूर साहब की वास्तविकता जाने अनजाने में सिखा जाती है।

इसका एक ताजा उदाहरण है मेरे पास....

अभी हाल ही में मेरी अपनी खुद की दुकान में आग लग गई थी। इस किताब के प्रकाशन से लगभग एक महीना पहले जनवरी 2014 में। तब मेरा सबकुछ ख़त्म हो गया था। जीवन भर का सबकुछ।

उस समय एक बार मेरे मन में खुद को ख़त्म करने तक का ख्याल आ गया था....।

लेकिन.... कपूर साहब की वास्तविकता.... मुझे बचा गई।

मुझे ताकत, शक्ति दे गई कि जब कपूर साहब करोड़ों के झटके से उभर सकते हैं तो मेरा नुकसान तो लाखों का ही था... हाँ... ये बात अलग है

कि कपूर साहब ने अपने करोड़ों के घाटे के सदमें से उभरने में सिर्फ पन्द्रह मिनट लगाये थे मुझे इस लाखों के सदमें से उभरने में पन्द्रह - बीस दिन लग गये थे।

ये तो सिर्फ एक उदाहरण है। कपूर साहब की उदारता का, सहृदयता का वर्णन शब्दों में करना आसान नहीं होगा, इनकी दयालुता और दानवीरता का कोई ओर छोर नहीं... इनकी दानवीरता का वर्णन सूरज को दिया दिखाने जैसा होगा। ये हर व्यक्ति को समान दृष्टि से देखते हैं, वो गरीब हो या अमीर, छोटा हो या बड़ा, दोस्त हो या दुश्मन... सबको एक दृष्टि से देखना इनके व्यक्तित्व का बहुत बड़ा हिस्सा है।

अकेले, "सुभाष कपूर जी" की खूबियाँ गिनाने के लिए शायद ये किताब भी छोटी है, लेकिन यकीनन इनकी खूबियाँ, इनकी वास्तविकताओं से लाखों लोग प्रेरणा ले सकते हैं।

इन सब वास्तविकताओं को सामने लाने के लिए अनामिका जी और राजीव कपूर जी की सराहना करूंगा... दिल की गहराईयों से... जिन्होंने "सुभाष कपूर" साहब की जीवन गाथा को सामने लाने का बीड़ा उठाया न केवल सिर्फ इसलिए कि वे उनके पिता हैं वरन् इसलिए कि उनके पिता सुभाष कपूर समाज की अमूल्य धरोहर हैं। उनकी जीवन गाथा समाज को प्रेरित करेगी...। शुक्रिया...! राजीव और अनामिका जी...।

चलते - चलते एक उदाहरण और जो इस बात का पक्का सबूत है कि "सुभाष कपूर जी" की वास्तविकता किसी के भी जीवन में चमत्कार कर सकती है। देखिए न... उनके जीवन की वास्तविकता की चंद पंक्तियों को इक्कट्ठा करके परोस देने भर से ही मैं लेखक बन गया हूँ। मरे लिए

अभी भी ये मात्र सुन्दर स्वप्न है, अविश्वसनीय है।

अविश्वसनीय क्यों नहीं होगा....

क्या? हिन्दुस्तान का एक माना हुआ प्रसिद्ध उद्योगपति इतना साधारण, इतना तेजस्वी, इतना सात्विक और इतना धार्मिक हो सकता है।

सच में मेरे लिए ये सब एक स्वप्न की तरह है! भगवान से उन पलों का धन्यवाद करूंगा जब सुभाष कपूर जी से मेरा मुलाकातों का सिलसिला शुरू हुआ था।

कपूर साहब ने सही कहा है....

"मुझसे एक बार मिलने के बाद, गैर इन्सान भी मेरा अपना हो जाता है।" .....कितना सही है।

ज़िन्दगी भर कपूर साहब के साथ मेरी इन कृष्णमयी मुलाकातों का सफर चलता रहेगा।

द्वापर के कृष्ण जी को तो देख नहीं पाया मैं, पर इस कलियुग में "सुभाष कपूर जी" से मिलने के बाद ऐसा लगता है कि मेरे प्रभु कृष्ण, गिरिधर, गोपाल, कान्हा.... भी.... तो ऐसे ही रहे होंगे।

इसलिए मेरा प्रभुमय सानिध्य पाने का सफर हमेशा चलता रहेगा....

इस कन्हैया से उस कन्हैया तक का सफर....

कन्हैया से .... कन्हैया तक का....

कन्हैया से..... .....कन्हैया तक